ओ३म्

मित्र-स्मृति

चौ. मित्रसेन आर्य

15 दिसम्बर 1931 - 27 जनवरी 2011

चौ. मित्रसेन आर्य के मुख्य प्रेरणा स्रोत

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

प्रकाशक

परम मित्र मानव निर्माण संस्थान

53-57, सिन्धु भवन, सेक्टर-14

रोहतक-124001

फोन : 01262-274481

6 फरवरी, 2011

मुद्रणालय

सम्राट ऑफसेट, दिल्ली

॥ चौ. मित्रसेन आर्य ॥
जीवन चक्र
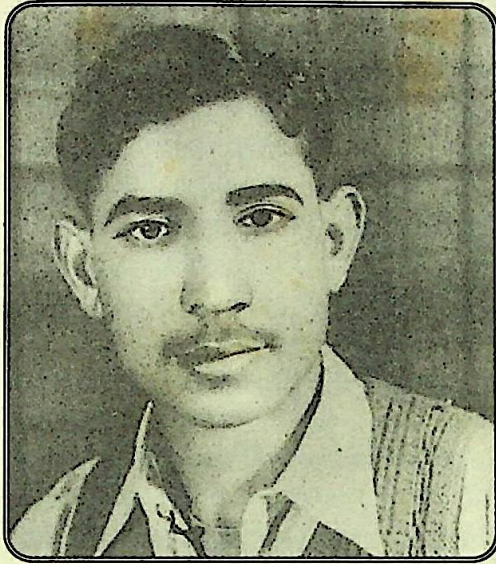
तरुणावस्था
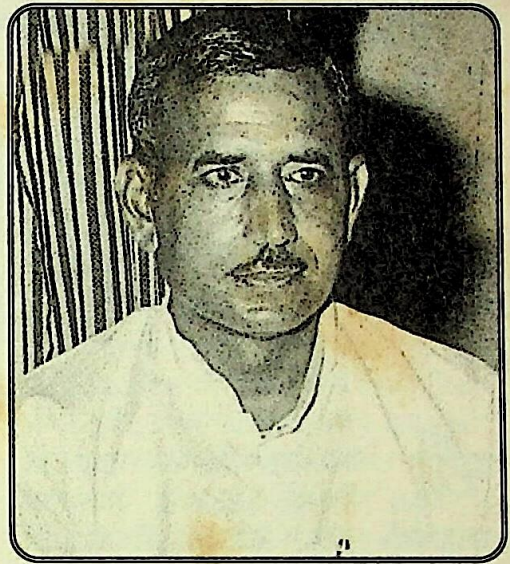
युवावस्था
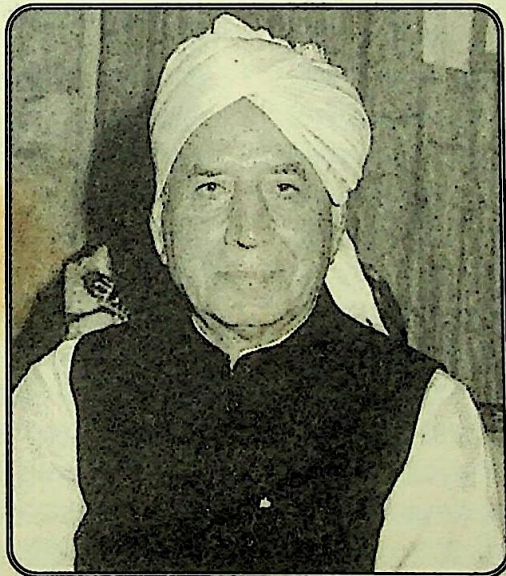
प्रौढ़ावस्था

एक प्रेरणाप्रद जीवन वृत्त
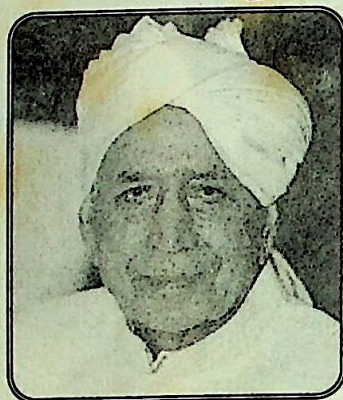
चौ. मित्रसेन जी का जन्म 15 दिसंबर 1931 ई. को ग्राम खांडाखेड़ी, जिला हिसार (हरियाणा) में हुआ था। आपके पिता चौ. शीशराम आर्य एवं माता श्रीमती जीवन देवी थीं। चौ. शीशराम आर्य जी जीवकोपार्जन के लिए परम्परागत व्यवसाय कृषि करते थे। उनका कंठ अत्यन्त मधुर था और गायन कला में वे विशेष प्रवीण थे। इसी कारण उनकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई थी। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब कार्यालय लाहौर से जब उनको आर्य समाज का उपदेशक बनाने का प्रस्ताव मिला तो उन्होंने अवैतनिक भजनोपदेशक के रूप में कार्य करना स्वीकार किया।

चौ. मित्रसेन आर्य का जन्म ऐसे निःस्वार्थ, देश-प्रेमी, संस्कारी और तपस्वी पिता के घर में हुआ था। कुल के संस्कारों की पूरी झलक चौ. मित्रसेन जी के व्यक्तित्व में दिखाई पड़ती थी। चौ. साहब की सरलता, सहजता और निष्कपटता का व्यवहार तथा बौद्धिकता से परिपूर्ण वार्तालाप की शैली सभी के मन को मोह लेती थी। आप सरस्वती और लक्ष्मी दोनों के उपासक थे। यदि यह कहा जाए कि चौ. मित्रसेन जी आर्य समाज के भाभाशाह थे, तो अतिशयोक्ति न होगी। क्योंकि ऐसा कोई गुरुकुल, कोई आर्य संन्यासी, आर्य विद्वान्, उपदेशक दृष्टिगोचर नहीं होता जिसका आर्य जी ने आर्थिक सहयोग करके उत्साहवर्धन न किया हो।

जीवन-संघर्ष

चौ. साहब का संघर्ष और अभावों से परिपूर्ण जीवन सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। जब आप 10 वर्ष के थे तब आपके पिता चौ. शीशराम जी की आंखों की रोशनी काला मोतिया के कारण सदा के लिए चली गई। उसी समय आपके चाचा हरदास जी और बलवंत जी की छत्रछाया परिवार से उठ गई। आपकी दो बुआ भी विधवा हो गई। इसी कारण आपको तीसरी कक्षा की पढ़ाई बीच में छोड़कर पैतृक कार्य(कृषि)कृषि अपनाना पड़ा। आपके बड़े भाई देश की आजादी के लिए लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द और शहीद भगत सिंह आदि क्रान्तिकारियों के साथ लगे रहते थे। इस कारण परिवार का दायित्व आपके कंधों पर अधिक था। इसी

समय 1948 में आपका विवाह परमेश्वरी देवी सुपुत्री श्री अमृत सिंह सहारण गांव जुलानी, जिला जीन्द हरियाणा से हुआ।
आपने अपनी दूरदृष्टिपूर्ण सोच से विचार किया कि कृषि कार्य से अपेक्षित आय नहीं हो पायेगी, जिससे परिवार का भरण-पोषण सुगमता से किया जा सके। आपके चाचा श्री चन्दगीराम रोहतक में थानेदार थे। आप उनके पास आ गये। उन्होंने एक वर्कशॉप में 'लेथ एण्ड इंजन बोरिंग मशीन' का कार्य सीखने के लिए भेज दिया। आपके चाचा जी सरल, सादे, ईमानदार और नैतिक मूल्यों के प्रति समर्पित थे तथा आपसे पुत्रवत् स्नेह करते थे। चाचा जी के संस्कारों का प्रभाव भी आपके व्यक्तित्व पर पड़ा। कुछ दिनों के बाद वह कारखाना बंद हो गया तो आपने 1949 में सोनीपत में एटलस साइकिल की फैक्टरी में कार्य किया। सन् 1950 में रोहतक बिजलीघर में नौकरी शुरू की। इन संघर्षपूर्ण दिनों में भी आप निरंतर स्वाध्याय, सत्संग, व्यायाम, प्राणायाम और ईश्वर भक्ति करते थे। इसी समय आपने हिन्दी सीखी और सत्यार्थ प्रकाश जैसे अद्भुत ज्ञान के भंडार, विचारोत्तेजक साहित्य का अध्ययन किया। बिजली घर में काम करते हुए आपने शिल्पकला (इंजीनियरिंग) में विशेषज्ञता प्राप्त की। यहां पर आपने 1950 से 1953 तक साढ़े तीन वर्ष कार्य किया। तदुपरान्त 1954 में आपकी नौकरी उदयपुर में एक कारखाने में लग गई। जहां आपको 150 रुपये प्रतिमाह वेतन मिलता था।

उद्योग के मार्ग पर

आपने उदयपुर रहते हुए विचार किया कि अपना ही कारखाना लगाना चाहिए। यह दृढ़-संकल्प करके रोहतक वापस आकर 'लेथ एण्ड इंजन बोरिंग मशीन' का कारखाना स्थापित किया। 9 अगस्त 1957 को हिन्दी सत्याग्रह आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के कारण आपको गिरफ्तार कर लिया गया और 28 सितंबर, 1957 को रिहाई हुई। कुछ समय बाद आपने 'लेथ एण्ड इंजन बोरिंग मशीन' का दूसरा कारखाना भी खरीद लिया।

सफल उद्योगपति

इन दोनों कारखानों में आपको पूर्ण सफलता मिली। इससे उत्साहित होकर आप हरियाणा प्रान्त से बाहर भी उद्योग लगाने का विचार करने लगे। इसके परिणामस्वरूप सन् 1961 में बिहार प्रान्त की सीमा से लगे बड़बिल, उड़ीसा में 'रोहतक इंजीनियरिंग वर्क्स' के नाम से 'लेथ एण्ड इंजन बोरिंग मशीन' का कारखाना लगाया। युवाओं को शिक्षित करने की पवित्र भावना से बड़बिल कॉलेज की स्थापना की, जिसमें लगभग 20 वर्ष का समय लगा। सन् 1964 में नवाँमण्डी, जिला सिंहभूम (बिहार) में 'हरियाणा इंजीनियरिंग वर्क्स' कारखाना स्थापित किया। स्मरण रहे कि हरियाणा बनने से पहले ही 1964 में चौ. मित्रसेन आर्य ने हरियाणा के नाम पर यूनिट लगाई। सन् 1965 में जोड़ा, जिला क्योंझर (उड़ीसा) में 'सिन्धु इंजीनियरिंग वर्क्स' कारखाना लगाया। सन 1968 में जनवरी से मार्च तक तीन ट्रक खरीदे, उनसे माइनिंग ट्रांसपोर्टिंग के काम आरम्भ किए।
बाद में इनका विस्तार होता गया। 'उड़ीसा माइनिंग कार्पोरेशन लिमिटेड' (ओ.एम.सी.) और 'टाटा स्टील एण्ड आयरन कं.' अर्थात् टी.आई.एस.सी.ओ. के कॉन्ट्रेक्टर बने, जिसमें माइनिंग, ड्रीलिंग, ब्लास्टिंग, रेजिंग, ग्रेडिंग व क्वालिटी बनाना तथा वाटरिंग एंड ट्रांसपोर्टिंग लोडिंग- अनलोडिंग आदि सारी

व्यवस्था का प्रबंध संचालन आपने सफलतापूर्वक किया। 'मित्रसेन एण्ड कम्पनी (रजि.)' के नाम से सन् 1970-75 में सारे उड़ीसा के बिजली बोर्ड के कॉन्ट्रेक्टर रहे तथा ट्रांसपोर्टिंग का कार्य सफलतापूर्वक किया। 1976 में कोयड़ा जिला सुन्दरगढ़ में भी 'नेशनल इंजीनियरिंग वर्क्स' नाम से कारखाना स्थापित किया, जो आज भी चल रहा है। शिक्षा द्वारा ही समाज में जागरूकता लाई जा सकती है, इस भावना से बनईगढ़, तहसील कोयड़ा में एक स्कूल खुलवाकर लगातार 8 वर्ष तक वेतन देते रहे। तत्पश्चात् सरकार ने उसका अधिग्रहण कर लिया। सन् 1979 में श्री वीरसेन जी बीए करके बड़बिल उड़ीसा पहुंच गए और कार्य सीखने के साथ-साथ पिता जी का सहयोग करने लगे। सन् 1981 में श्री व्रतपाल जी पिता जी के सहयोग के लिए पहुंच गए। सन. 1982 में ज्येष्ठ पुत्र कैप्टन रुद्रसेन जी भारतीय सेना से सेवानिवृत्त होकर आ गये तथा 'कालिया पानी क्रोमाइट माइन्स प्रोजेक्ट' को भी संभाल लिया। 1983 में 'बोकारो स्टील थर्मल प्लान्ट' और 'चन्द्रपुरा थर्मल प्लान्ट' का काम शुरू किया। इसके विकसित होते-होते 'कोल ट्रांसपोर्टिंग' का कार्य आरम्भ कर दिया।

कैप्टन रुद्रसेन, वीरसेन जी और व्रतपाल जी के आने से उद्योग को नए आयाम मिले। बिहार और उड़ीसा के क्षेत्रों में कार्य शुरू करना एक कठिन चुनौती थी। क्योंकि एक अलग भाषायी प्रान्त में नए लोगों से तालमेल और भाषा की समस्या उत्पन्न हो जाती है, किन्तु चौ. मित्रसेन जी इसमें भी सफल रहे। बड़बिल उड़ीसा का इलाका बिहार राज्य की सीमा से लगा हुआ है। अतः अधिकांश लोग हिन्दी भाषा बोल लेते हैं। इस प्रकार उड़ीसा, छत्तीसगढ़, बिहार एवं मध्यप्रदेश सहित अनेक प्रदेशों में उद्योग, खनन, ट्रांसपोर्ट, कोलवाशरी, आयरन, मैगनीज आदि औद्योगिक इकाइयां स्थापित की, जिन्हें विकसित करने में इनके सुयोग्य ज्येष्ठ सुपुत्र कैप्टन रुद्रसेन जी की अहम् भूमिका रही। कैप्टन रुद्रसेन जी का शुभसंकल्प, कर्मशक्ति और अनुशासन बहुत उन्नत है। इनके छोटे भाई श्री वीरसेन, श्री व्रतपाल, कैप्टन अभिमन्यु, मेजर सत्यपाल, श्री देवसुमन इन उद्योगों की स्थापना तथा विकास में अपने पिताजी के साथ एवं अपने ज्येष्ठ भ्राता कैप्टन रुद्रसेन के आदेशानुसार कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग करते रहे।

आपके व्यावसायिक साम्राज्य की यह तो एक झलक मात्र है। इसके अतिरिक्त स्टील प्लांट, थर्मल पावर प्लांट, सीमेंट उद्योग, होटल व्यवसाय, फाइनेंस एवं स्टॉक ब्रोकिंग, कृषि फार्म, मीडिया आदि अनेक ऐसे व्यवसाय हैं, जिनके माध्यम से आपने अनुकरणीय रूप में राष्ट्र की सेवा की। इसी कारण आपकी गणना भारत्त के सफलतम उद्योगपतियों में की जाती थी। आपके बाद आपके सुयोग्य सुपुत्र आपके पदचिन्हों पर चलते हुए राष्ट्र विकास के रथ को आगे बढ़ाते हुए अनुकरणीय कार्य कर रहे हैं।

पत्रकारिता क्षेत्र

पत्रकारिता के क्षेत्र में आपने रोहतक से 'दैनिक हरिभूमि' समाचार पत्र का सफल प्रकाशन आरंभ कर नया इतिहास रचा। बाद में इस समाचार पत्र का दिल्ली, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश प्रान्तों से भी प्रकाशन शुरू कर देश के शीर्ष दस हिन्दी समाचार पत्रों की श्रेणी में प्रतिष्ठापित किया। इस तरह पत्रकारिता को आपने एक नई दिशा प्रदान

की। अब इस समाचार पत्र का दायित्व आपके सुपुत्रों के सशक्त कन्धों पर है और वे सफलतापूर्वक पत्रकारिता के क्षेत्र में यश की पताका फहरा रहे हैं।

सामाजिक क्षेत्र

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। इसी भावना से चौ. साहब सदा सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं से जुड़े रहे। 1949 में आप 18 वर्ष की आयु में रोहतक शहर की झज्जर रोड आर्य समाज व 1951 में गुरुकुल झज्जर के आजीवन सदस्य बने। 1957 में आर्य समाज के नेतृत्व में हिन्दी आर्य सत्याग्रह आंदोलन में आप अन्य सत्याग्रहियों के साथ जेल गए। जून 1977 में आर्य समाज भुवनेश्वर के वार्षिक उत्सव पर गुरुकुल आमसेना (उड़ीसा) के ब्रह्मचारियों से आपका संपर्क हुआ। आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती के परामर्श पर आप 1978 में गुरुकुल आमसेना के सदस्य बने व जीवनपर्यन्त आप वहां की प्रबंधन कर्त्री सभा के प्रधान रहे।

आपने इस गुरुकुल को आत्मनिर्भर बना दिया। इसके अतिरिक्त अन्य गुरुकुलों, गोशालाओं, कन्या गुरुकुलों, आर्यसमाजों, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व हरियाणा, परोपकारिणी सभा अजमेर (राजस्थान), आर्य प्रतिनिधि सभा उड़ीसा, सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर, वैदिक विद्वजनों, संन्यासियों, गरीबों आदि के लिए आर्थिक सहयोग करने में सदैव तत्पर रहते थे। आपने 'परम मित्र मानव निर्माण संस्थान' की स्थापना भी जनसेवा हितार्थ ही की थी।

उदारवादिता

चौ. मित्रसेन जी के जीवन में सत्य, संयम और सेवा का अद्भुत सम्मिश्रण था। उनके जीवन का लक्ष्य स्पष्ट था, जीवन की पद्धति तय थी और जीवन का कार्य प्रवाहमान था। उनके सद्गुणों ने उन्हें अपने निर्धारित लक्ष्य से कभी भटकने नहीं दिया। आपने समाज के हर उस कार्य में येन-केन-प्रकारेण सहयोग दिया, जिसमें मानवहित निहित हो। आपकी सोच का मूल मंत्र था कि जो सबके लिए हितकारी हो और खुद के लिए भी सुख देने वाला हो, उसी का सदा आचरण करना चाहिए, क्योंकि वही सर्वार्थ सिद्धि का मूल है।

आपकी उदारवादिता से कितने ही गुरुकुल, शिक्षण संस्थान, न्यास, प्रतिनिधि सभाएं, गोशालाएं, संस्थाएं, आर्यसमाज, धर्मशालाएं, योग के प्राकृतिक चिकित्सालय, कन्या छात्रावास, अनाथालय, दिन-रात समाज की सेवा कर रहे हैं।

आपका वरदहस्त निर्धनों, ब्रह्मचारियों, संन्यासियों, शहीदों के परिवारों, असहाय कन्याओं, भूकंप ग्रस्तों के पुनर्वास हेतु निरन्तर दानभाव से आर्द्र रहता था।

कारगिल युद्ध के समय मोर्चे पर जो भारतीय सैनिक वीरतापूर्वक लड़े और दुश्मनों के छक्के छुड़ाते हुए जिन्होंने अपने प्राण देश पर न्यौछावर कर दिए, उनमें हरियाणा के भी अनेक रणबांकुरे शामिल थे। आपने इन शहीदों के परिवारों को एक-एक लाख रुपये की मदद दी। राष्ट्र की पुकार और प्रधानमन्त्री की अपील पर चौ. मित्रसेन जी ने बहुत बड़ी राशि रक्षा कोष में देकर अपने कर्तव्य का तो पालन किया ही, साथ ही धन का सदुपयोग भी किया। इससे पूर्व भारत-पाक युद्ध में आपने रक्षा कोष में इसी तरह महत्वपूर्ण सहयोग दिया था। यही नहीं, राष्ट्र में

प्राकृतिक आपदा, महामारी और अकाल के समय लोगों की आर्थिक सहायता करने में आप कभी पीछे नहीं रहे। जब महाराष्ट्र के लातूर में विनाशकारी भूकंप आया तब आपने तन, मन और धन से जुटकर उन लोगों को संभालने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी। कच्छ और भुज (गुजरात) में इतना भयंकर विनाशकारी भूकंप आया था कि नगर के नगर धराशाई हो गए थे। तब आपने मानवता की रक्षा के लिए उदारतापूर्वक धन और अन्य सामग्री का दान किया।

कच्छ और भुज में आपके सभी सुपुत्र आपके कन्धे से कन्धा मिलाकर दिन-रात राहत कार्यों में लगे रहे। वहां के भूकंप पीड़ितों के पुनर्वास के लिए आपने डॉ. साहिब सिंह वर्मा के साथ दो गांवों को गोद लिया, जिनमें दिल खोलकर उदारतापूर्वक आर्थिक सहयोग किया। गुजरात के सबसे पहले पुनर्वासित गांव इन्द्रप्रस्थ में लगभग 800 परिवार आबाद किए गए। चौ. मित्रसेन जी का परिवार नियमित रूप से वहां जाकर लोगों की समस्याओं के समाधान के लिए कार्य करता है। दलितों, पतितों, दीन-दुःखियों के रक्षक मित्रसेन आर्य के पास यदि कोई निर्धन व्यक्ति आया तो आपने उसकी सहायता की। क्योंझर (उड़ीसा) के एक स्कूल में जब अध्यापकों का वेतन एक-दो वर्ष तक न दे पाने की नौबत आई तो आपने तीन-चार अध्यापकों का दो वर्ष तक वेतन स्वंयं दिया। आर्य समाज और उसकी शिक्षण संस्थाओं, में गुरुकुलों में और यज्ञशालाओं के निर्माण में आर्थिक सहयोग देने में आप कभी पीछे नहीं रहे। आपने महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के परिसर में महर्षि दयानन्द की प्रतिमा और यज्ञशाला का निर्माण कराने में अहम् भूमिका निभाई। महर्षि की जयंती हो अथवा महर्षि निर्वाण-दिवस, जब भी महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में यज्ञ, हवन का कार्यक्रम होता था, उसमें चौ. मित्रसेन जी आर्थिक सहयोग देने में कभी पीछे नहीं रहे। समाज में जो साधु-संन्यासी सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए, वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए, योगासन, प्राणायाम तथा प्राकृतिक चिकित्सा के महत्व को समझाने के लिए, प्राकृतिक चिकित्सालय, योगाश्रम बनाते हैं, उनमें भी मित्रसेन जी का सहयोग पहुंचता था।

शैक्षणिक क्षेत्र

चौ. मित्रसेन जी की सदैव कोशिश रहती थी कि विद्या का प्रचार-प्रसार हो। इसके लिए आपने हरसंभव प्रयास किए। आपने सिन्धु एजुकेशन फाउंडेशन नामक ट्रस्ट बनाया जिसके अंतर्गत अनेक इंडस स्कूल, डिग्री कॉलेज, इंजीनियरिंग व मैनेजमेंट संस्थान, डी.एड व बी.एड कॉलेज व नर्सिंग कॉलेज चल रहे हैं। समाज में नारी शिक्षा के प्रसार में आपका विशेष योगदान रहा है। आपके आर्थिक सहयोग से अनेकानेक संस्थाएं फलीभूत हो रही हैं। आप शिक्षण संस्थाओं की मदद दिल खोलकर करते थे। यह आपकी लगन ही थी कि जहां कहीं भी कोई स्कूल, आर्य शिक्षण संस्था, डीएवी पब्लिक स्कूल अथवा डीएवी कॉलेज, गुरुकुल और कन्या गुरुकुल की स्थापना हुई और किसी ने आपको सूचित कर दिया, तो आप वहां पहुंचे और यथेष्ठ सहायता देकर आए। आपके सात्विक सहयोग से पल्लवित और पुष्पित होने वाली कतिपय संस्थाएं निम्नलिखित हैं :

1. गुरुकुल, झज्जर (हरियाणा)
2. गुरुकुल, सिंहपुरा-सुन्दरपुर, जिला

रोहतक (हरियाणा)
3. गुरुकुल, भैयापुर लाढौत, जिला रोहतक (हरियाणा)
4. गुरुकुल, सुन्दरपुर, जिला रोहतक (हरियाणा)
5. गुरुकुल, गौतमनगर (दिल्ली)
6. गुरुकुल, इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली)
7. गुरुकुल, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
8. कन्या गुरुकुल, खानपुर, जिला रोहतक (हरियाणा)
9. गुरुकुल, आमसेना (उड़ीसा)
10. कन्या गुरुकुल, आमसेना (उड़ीसा)
11. गुरुकुल कोसरंगी, जिला महासमुंद (छत्तीसगढ़)
12. गुरुकुल कालवा, जिला जीन्द (हरियाणा)
13. गुरुकुल वेदव्यास, पानपोस (उड़ीसा)
14. परोपकारिणी सभा, अजमेर (राजस्थान)
15. सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर (राजस्थान)
16. आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मंदिर मार्ग (दिल्ली)
17. आर्य प्रतिनिधि सभा, जालन्धर (पंजाब)
18. हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द मठ, रोहतक (हरियाणा)
19. आर्य समाज लाजपतराय चौक, नागोरी गेट, हिसार (हरियाणा)
20. आर्यसमाज झज्जर रोड, रोहतक (हरियाणा)
21. कन्या गुरुकुल, द्रोणस्थली, देहरादून (उत्तराखंड)
22. आर्ष गुरुकुल, पौंधा, जिला देहरादून (उत्तराखंड)
23. उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा (उड़ीसा)
24. आर्यसमाज, भुवनेश्वर व सम्बलपुर (उड़ीसा)
25. आर्ष गुरुकुल एवं योग शिक्षण केन्द्र गेखानी, जिला रायगढ़ (छत्तीसगढ़)
26. श्री जगन्नाथ उच्चतर विद्यालय दमडण्धार जांजगीर चांपा (छत्तीसगढ़)
27. माता परमेश्वरी देवी कन्या छात्रावास सोनाबेड़ा (उड़ीसा)
28. उच्चतर प्राथमिक विद्यालय नीलम रायगढ़ (छत्तीसगढ़)
29. जाट कॉलेज, रोहतक (हरियाणा)
30. स्वामी रामदेव जी योगी, पतंजलि योग पीठ, कनखल, हरिद्वार (उत्तराखंड) से चौ. साहब का आरंभ से ही वैचारिक व आत्मीय जुड़ाव रहा है। मित्रसेन जी तथा इनके परिवार के सभी सदस्यों की ओर से स्वामी जी के ट्रस्ट को विशेष आर्थिक सहयोग रहा है और परिवार के प्रत्येक सदस्य की ओर से पतंजलि योगपीठ को आर्थिक सहयोग किया गया है। चौ. मित्रसेन जी स्वामी जी के ट्रस्ट के संस्थापक सदस्य थे।
योगपीठ से जुड़े हर प्रकल्प में आपने खुले मन से निरंतर आर्थिक सहयोग किया है।
31. स्वामी अग्निवेश और स्वामी इन्द्रवेश द्वारा स्थापित आर्य युवक परिषद् तथा आर्य सभा और उनके प्रचार कार्यों के लिए आप आर्थिक सहयोग आदि के अलावा आर्य समाज की विभिन्न इकाइयों और अन्य शिक्षण संस्थानों को महत्वपूर्ण आर्थिक सहयोग देते रहे।

इनके अतिरिक्त अनेक ऐसी संस्थाएं हैं, जो उनके सात्विक सहयोग से अनुप्राणित हुई हैं।

वैदिक और लौकिक साहित्य के प्रति जागरूक

चौ. मित्रसेन जी धन व कर्म दोनों दृष्टियों से संपन्न थे। आपने महर्षि दयानन्द विरचित अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' का प्रकाशन परम मित्र मानव निर्माण संस्थान के माध्यम से केवल इसलिए किया कि आगंतुक मित्रों, विद्वानों, उपदेशकों, विद्यार्थियों और ग्रामीण जनों तक इसके पहुंचने से वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार होगा।

राष्ट्रीय स्तर के वैदिक साहित्य के लेखकों, विद्वानों को भी आप समय-समय पर आर्थिक सहयोग प्रदान करते रहते थे। गुरुकुल, आमसेना की मासिक पत्रिका 'कुलभूमि' का प्रकाशन भी आप वर्षों से करवा रहे थे, जिसमें अनेक वैदिक विद्वानों के लेख, वैदिक और लौकिक साहित्य के प्रेरक प्रसंग होते थे। संस्कृत विशेषतः वैदिक वाङ्मय को समर्पित अन्तरराष्ट्रीय शोध पत्रिका 'प्राच्यविद्यानुसन्धानम्' (मेरठ, उत्तर प्रदेश से प्रकाशित छमाही शोध पत्रिका) का प्रकाशन आप द्वारा प्रदत्त सात्विक दान से हो रहा है।

आप परम मित्र मानव निर्माण संस्थान की ओर से नए संवत्सर पर भव्य रंगीन कैलेंडर छपवाते थे, इसमें भारतीय नववर्ष, तिथियों और तीज-त्योहारों की महत्त्वपूर्ण जानकारी होती थी।

इसके पीछे आपका मकसद यह भी था कि लोग अपनी परम्परा से परिचित रहें। महर्षि दयानन्द की जयंती पर आप लोगों में उनका भव्य चित्र भी वितरित करते थे। आपने पूज्य पिता चौ. शीशराम जी स्मृति ग्रंथमाला के अन्तर्गत भी कई महत्वपूर्ण विषयों की पुस्तकें प्रकाशित कीं। गुरुकुल, आमसेना में आपने उड़िया और हिन्दी भाषा में साहित्य प्रकाशन में निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित करवाकर साहित्य के प्रति जागरुकता का परिचय दिया –

1. सत्यार्थ प्रकाश एवं संस्कार विधि (उड़िया)
2. खिलते फूल
3. छात्र जीवन, योग और स्वास्थ्य
4. योगासन
5. गीत कुंज
6. फिटकरी-तुलसी
7. त्रिफला भाग 1-2
8. शान्ति का मार्ग ईश्वरभक्ति
9. वैदिक लोरियां
10. दैनिक उपासना
11. ईश्वर कहां है?
12. आर्यपर्व पद्धति
13. ग्वेदादिभाष्यभूमिका (उड़िया)
14. प्यारा ऋषि आदि
15. वृद्धावस्था में स्वस्थ सुखी कैसे रहें?
16. सच्चा सुखी कौन?
17. सरल चिकित्सा पद्धति (उड़िया)
18. वैदिक गल्पमाला (उड़िया)
19. निष्काम कर्मयोगी : पं. लखपतराय
20. दादा बस्तीराम सर्वस्व
21. प्रभाकर चतुर्वेद शतकम्
22. सामवेद भाष्यम् (स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती)
23. प्रेमी भजन मंजूषा (कविः पं. शोभाराम प्रेमी)
24. सत्यार्थ प्रकाश (हिन्दी)
25. महर्षि दयानन्द और वैदिकधर्म

(अंग्रेजी)
26. आयुर्वेद चिकित्सा सार-संग्रह (उड़िया)
27. वैदिक उपासना विधि (हिन्दी एवं अंग्रेजी) प्रकाशनाधीन
28. सुखी गृहस्थ (उड़िया)
29. उनकी राह पर (स्वामी समर्पणानन्द के भजन, गीत व कविता संग्रह)
30. स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द : एक तुलनात्मक अध्ययन
31. ब्रह्मचर्यामृत
32. वैदिक उपासना विधि
33. वैदिक कोष
34. बेचारा कृषक
35. महर्षि दयानन्द : दर्शन और सिद्धांत

कृषि क्षेत्र

आपने कृषि व बागवानी के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित किये। कृषि, बागवानी व पशुपालन में निवेश कर उत्पादन लेना आपको विशेष प्रसन्नता प्रदान करता था। आपकी ही प्रेरणा एवं परिश्रम से रोहतक के गांव माडौदी जैसी बहुत-से बंजरस्थल शस्य श्यामला होकर लहलहा रहे हैं। उन पर आंवला, नीबू, बेर अमरूद, संतरा, कीनू आदि के वृक्ष सबके मन को मोह लेते हैं।

आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से वार्ता प्रसारण

आपकी समय-समय पर आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से सामाजिक, कृषि संबंधी तथा समसामयिक विषयों पर अनेक वार्ताएं प्रसारित हुईं, जिनका लाभ दूरदराज के क्षेत्रों में बैठे लोग पूर्णतया उठाते रहे। पत्र-पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में भी प्रकाशित हुए आपके उत्कृष्ट साक्षात्कार प्रेरणादायक होते थे।

संतों का सान्निध्य

आर्य जगत् के नेता मूर्धन्य संन्यासी स्वामी समर्पणानन्द, स्वामी स्वतंत्रानन्द, आनन्द स्वामी, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी सत्यपति, आचार्य बलदेव जी, स्वामी व्रतानन्द, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी दीक्षानन्द जी, स्वामी सत्यप्रकाश जी, स्वामी रामदेव जी, स्वामी सर्वानन्द जी, स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी रामवेश जी, स्वामी विवेकानन्द जी, जैसे तपोनिष्ठ संतों के सान्निध्य ने आप जैसे सात्विक व्रत के व्यक्ति को और अधिक गरिमामय बना दिया था।

प्रसिद्ध वैदिकधर्मी एवं राष्ट्रभक्त

आपका परिवार पूर्वजों के समय से ही आर्यसमाज के सिद्धांतों से दीक्षित रहा है। जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है- आपके पूज्य पिता चौ. शीशराम जी आर्य, प्रतिनिधि सभा लाहौर (पंजाब) में अवैतनिक वैदिक धर्म प्रचारक थे। आपके परिवार के बुजुर्ग जैलदार चौधरी राजमल जी, प्रधान सातरौल खाप, क्रांतिकारी सरदार शहीद भगत सिंह, लाला लाजपत राय, पंडित लखपतराय, चंदूलाल तायल, डॉक्टर रामजीलाल, बाबू चूड़ामणी, डाक्टर धनीराम, भाई परमानन्द आदि आर्य महापुरुषों के मित्र थे।

इस प्रकार आपके पूर्वजों ने सामाजिक

उत्थान एवं देश की स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। देशभक्ति का यह परम्परागत संस्कार आपके व्यक्तित्व में समाया हुआ था। समस्त भारत आपको कर्तव्यनिष्ठ, राष्ट्रभक्त, वैदिकधर्मी के रूप में पाकर गौरव अनुभव करता था।

सच्चे मित्र

यथा नाम तथा गुण

यथा नाम तथा गुणानुसार आप आदर्श मित्रभाव के धनी थे। यजुर्वेद 36.18 का यह संदेश 'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे' हम सब एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें। आपके जीवन का आदर्श था। अपने मित्रों के प्रति आप कितने समर्पित थे, इसका एक उदाहरण प्रस्तुत है। आपके एक उड़िया सखा आदित्य कुमार महापात्रा बिड़ला कंपनी में गैस इंचार्ज के रूप में कार्य करते थे। महापात्रा भी व्यवहार से शुद्ध पवित्र आत्मा थे। लेकिन सेवानिवृत्ति के बाद महापात्रा जी को दस बेटियों की शिक्षा-दीक्षा का खर्च उठाने में अति कठिनाई का सामना करना पड़ रहा था। यह सब आपसे देखा नहीं गया और एक मित्र के सहयोग की भावना से आपने 1976 में एक ट्रक नंबर 1918-ओ.आर.जे. खरीद कर महापात्रा के दरवाजे पर खड़ा कर दिया कि इससे महापात्रा के परिवार का खर्च चलाने में सहायता मिलेगी। महापात्रा ने ट्रक लेने से इनकार कर दिया। कुछ समय बाद महापात्रा का स्वर्गवास हो गया। तब उनके परिवार का भरण-पोषण करने की भावना से चौधरी मित्रसेन जी आर्य ने अपने ज्येष्ठ पुत्र कैप्टन रुद्रसेन जी को आदेश दिया कि इस परिवार को प्रतिमास पांच हजार रुपये का सहयोग दिया जाए। यह सहयोग आज भी वर्षों से जारी है। इसके अतिरिक्त आपकी उदारता से पुत्रियों के शादी विवाह के समय भी आवश्यकतानुसार सहयोग दिया जाता रहा।

सद्गृहस्थ

आपका गृहस्थ आश्रम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत था और आज भी है। जहां सभी सदस्य धार्मिक, ईश्वर उपासक, गुणानुरागी, राष्ट्रभक्त और पंच महायज्ञों के अनुष्ठाता हैं। इस घर में लक्ष्मी और सरस्वती का निवास है। आश्रम तुल्य आपके घर की चारदिवारी पर अंकित सृष्टि के प्रारंभ से लेकर आज तक के गौरवमयी आर्यावर्त के इतिहास की झलकियां रोमांचक हर्षातिरेक का अनुभव कराती हैं। सुगंधित पुष्पों से सुवासित प्रांगण में शोभायमान भव्य यज्ञशाला में संधिवेला में आपके पुत्र, पौत्रों और पुत्रवधुओं द्वारा गुंजायमान वैदिक मंत्रों की ध्वनि, महकती हुई यज्ञीय सुगंध, ऋषि-महर्षियों के आश्रम जैसी अनुभूति कराती है। वस्तुतः आपका यह सिन्धु भवन आर्यों का तीर्थस्थल बन गया है। चौधरी साहब के देवतुल्य परिवार में, आपके सुख दुःखों की सहभागिनी श्रीमती परमेश्वरी देवी की विनम्रता और उदारता आपके सुपुत्रों-कैप्टन रुद्रसेन, श्री वीरसेन, श्री व्रतपाल, कैप्टन अभिमन्यु , मेजर सत्यपाल एवं श्री देवसुमन की वीरता, निर्भीकता, क्रांतिदर्शिता और बौद्धिक प्रखरता एवं सुपुत्रियों-श्रीमती दयावती, श्रीमती बिमला और श्रीमती मधु की शुचिता और धर्मपरायणता सभी स्पृहणीय है।

सम्मानित सदस्य

आप निम्नलिखित आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सदस्य थे :

- आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई

दिल्ली की अंतरंग सभा के लगभग 27 वर्ष तक सदस्य रहे।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर के ट्रस्टी एवं उपप्रधान रहे।
- सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नौलखा महल, उदयपुर के सदस्य रहे।
- आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के संरक्षक रहे।
- प्राच्याविद्यानुसन्धानम्-अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका के आजीवन संरक्षक रहे।
- अनेक आर्यसमाजों व प्रादेशिक सभाओं के वरिष्ठ पदाधिकारी रहे।
- अनेक गुरुकुलों एवं शिक्षण संस्थानों के संस्थापक एवं संचालक रहे।
- दयानन्द मठ प्रबंधकारिणी सभा रोहतक के प्रधान रहे।

पुरस्कार एवं अभिनन्दन

23 दिसंबर, 2003 को भारत सरकार द्वारा किसान दिवस पर 'कृषि विशारद' की उपाधि से सम्मानित किए गए।
हरियाणा सरकार द्वारा 2002-03 के चौधरी देवीलाल जिला स्तरीय किसान पुरस्कार से सम्मानित किए गए।

जीवन का लक्ष्य

'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः'
अर्थात् कर्म करते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करो।
'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे'
अर्थात् हम सब एक-दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें।
वेद के इन दो आदर्शों को जीवन का लक्ष्य बनाकर आप अपने अदम्य उत्साह, साहस और पुरुषार्थ से देश के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विकास में आजीवन योगदान करते रहे।

महाप्रयाण

महाराजा भर्तृहरि की प्रसिद्ध उक्ति है-
परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।।
अर्थात् इस परिवर्तनशील संसार में जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है, लेकिन जन्म लेना उसी का सार्थक है जो अपने कार्यों से कुल, समाज और राष्ट्र को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर करता है। चौ. मित्रसेन जी आर्य ने इस उक्ति को अक्षरशः चरितार्थ करते हुए 27 जनवरी, 2011 को प्रातः 1.15 बजे दिल्ली के गंगाराम अस्पताल में अंतिम सांस ली। वे कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका पार्थिव शरीर प्रातः 9 बजे रोहतक लाया गया व अंतिम संस्कार पैतृक गांव खांडाखेड़ी में विशुद्ध वैदिक रीति से किया गया। प्रदेश व आसपास के क्षेत्रों के हजारों मित्र-संबंधियों ने **'चौ. मित्रसेन अमर रहें'** के नारों के बीच उन्हें अश्रुपूर्ण विदाई दी। उनके ज्येष्ठ पुत्र कै. रुद्रसेन ने उन्हें मुखाग्नि दी। परम पिता प्रभु से प्रार्थना है कि आप परम पिता परमेश्वर की न्याय व्यवस्था से भौतिक शरीर को छोड़कर जहां भी गये हैं सदा सुखी रहें।

....

परिवर्तिनि संसारे मृतः
को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंशः
समुन्नतिम्।। (भर्तृहरि)

इस परिवर्तनशील संसार में हर मनुष्य का जन्म-मरण निश्चित है। परन्तु उसी मनुष्य का जीवन सार्थक है, जिसके कार्यों से उसका परिवार, समाज व राष्ट्र उन्नति करता है।

॥ सिन्धु वंशावली ॥

सिन्धु से सिन्धड़ (संस्थापक गांव खांडा खेड़ी, हिसार)

चौ. सुंडा अथवा चौ. सिन्धु

चौ. पांडरा सिन्धड़

चौ. काला (जिसने खेड़ी बसाई)

चौ. चाहा

चौ. भीमा

श्री रोल श्री सांझ माओ (लड़की)
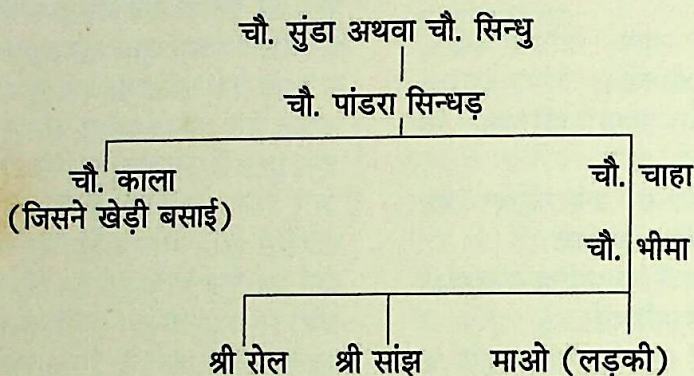
चौ. सांझ के चार कुनबे - श्री देबा श्री कल्ली श्री गज्जा श्री शब्बा

(कल्ली और गज्जा दो भाई)

कल्ली के वंशधरों में चौ. गिरधाल सिंह और चौ. शादीराम हुए। शादीराम के सगे चाचा तथा चौ. शीशराम आर्य के दादा चौधरी राजमल जैलदार थे।

चौ. गिरधाल सिंह
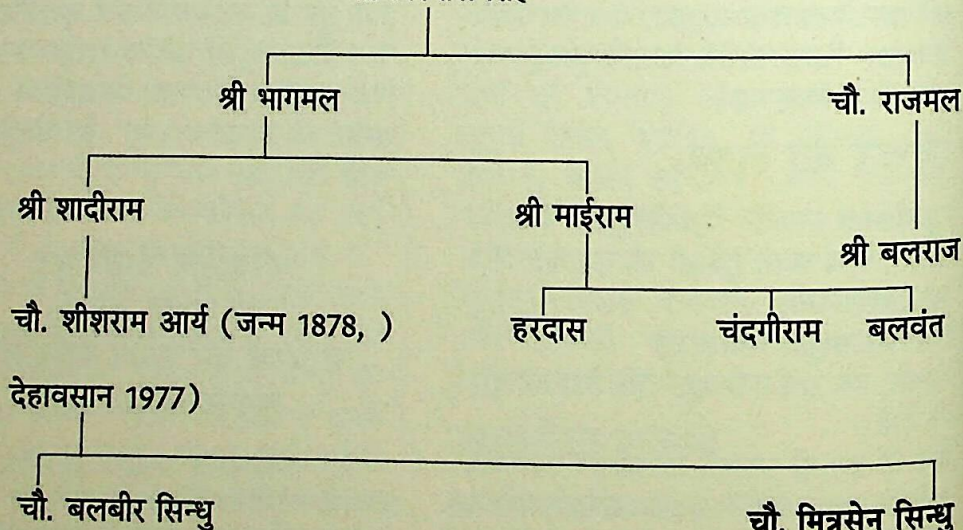
॥ चौधरी मित्रसेन सिन्धु ॥
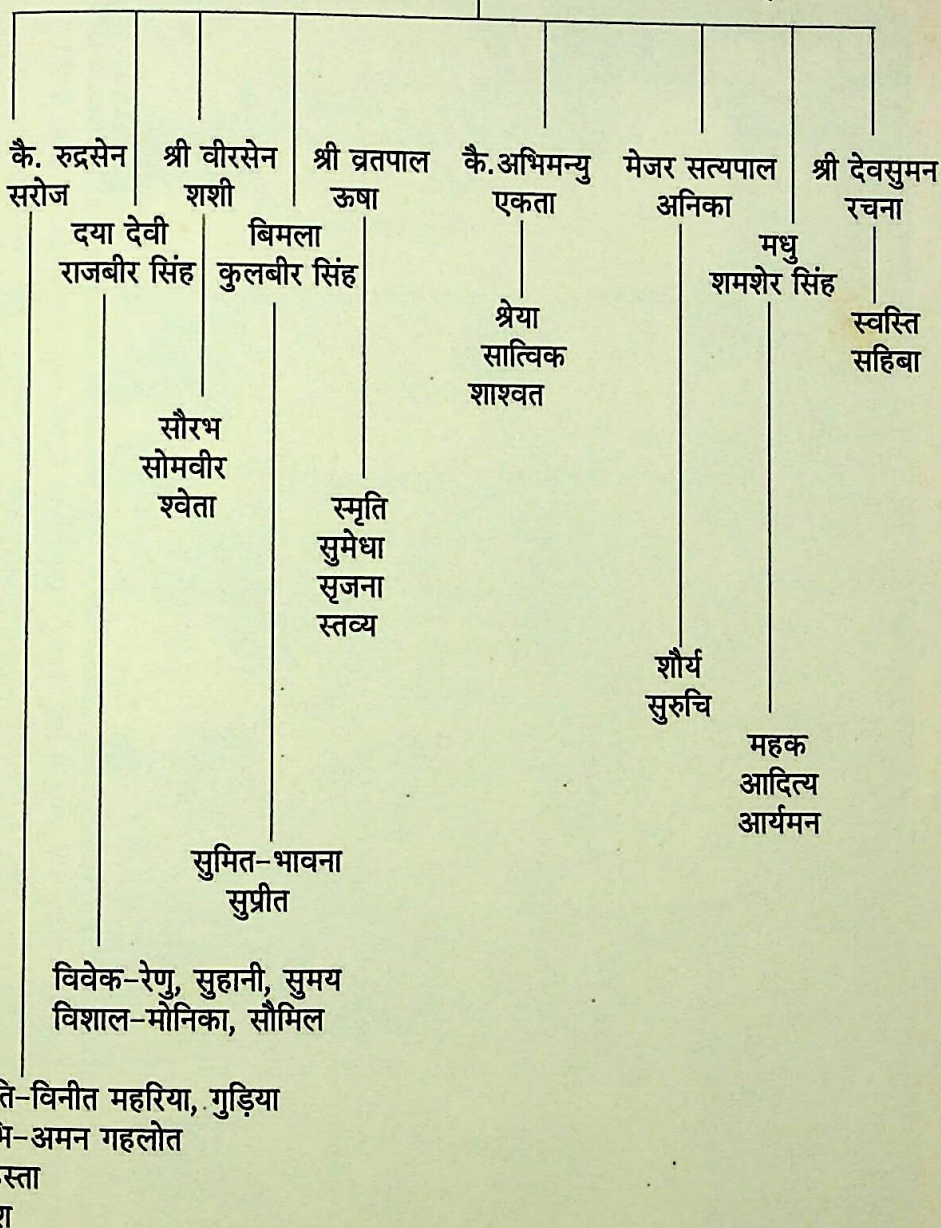
हिन्दी आंदोलन के सत्याग्रही चौ. मित्रसेन आर्य
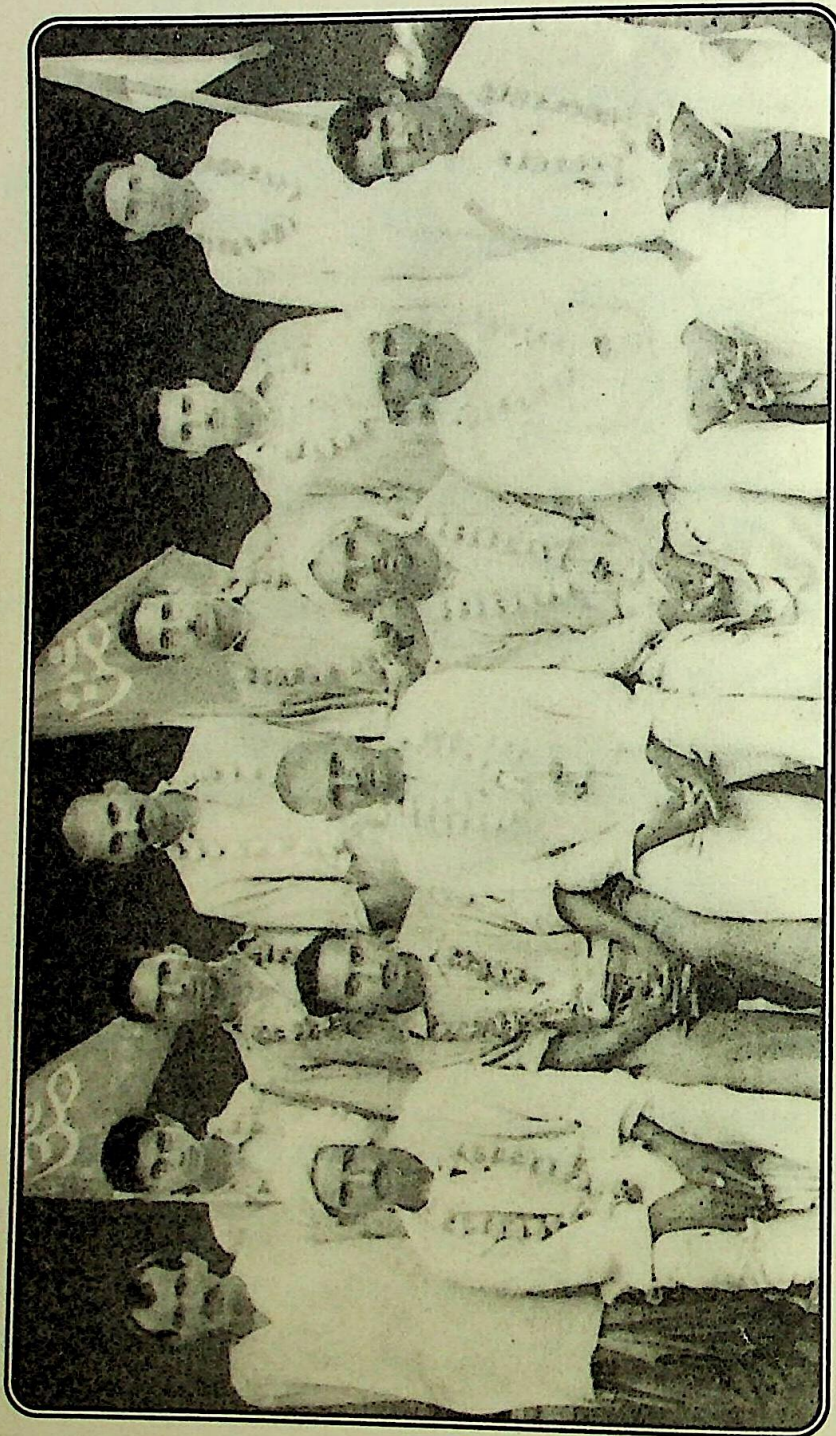
हिंदी सत्याग्रह आंदोलन के दौरान चौ. मित्रसेन आर्य (बाएं से खड़े पांचवे)9 अगस्त से 19 दिसंबर,1957 तक बोस्टन जेल हिसार में रहे। उनके साथ बाएं से खड़े- धारा सिंह , ओम प्रकाश, मामचंद आर्य, पुर्ण सिंह आर्य, डालू राम आर्य, भरत सिंह, बाएं से खड़े- शेर सिंह, कृष्ण कटार, मांगे राम,मित्रसेन जी,सुखी राम, प्रेम सिंह भी जेल में रहे थे।

॥ साक्षात्कार ॥
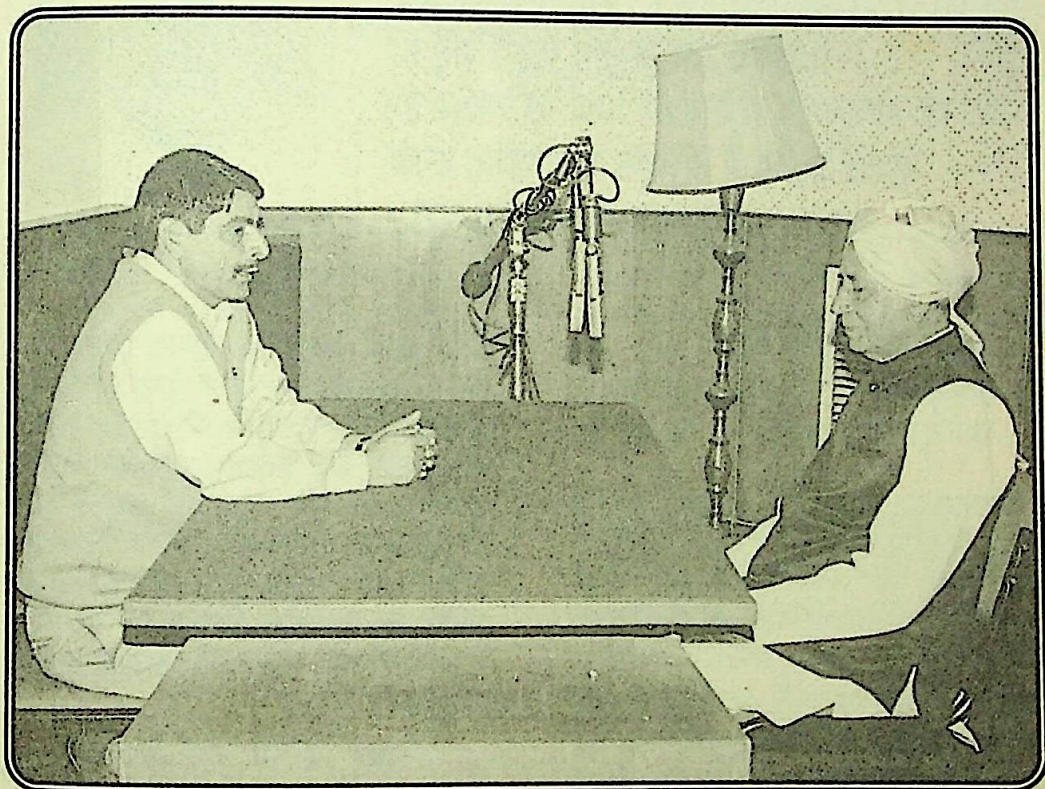
जिसमें अहंकार आ गया, उसे और शत्रुओं की जरूरत नहीं

चौधरी मित्रसेन आर्य का स्पष्ट मत रहा कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार इंसानी जीवन के सबसे बड़े आंतरिक शत्रु हैं। इसी तरह आलस्य, अज्ञान और अन्याय बाहरी शत्रु हैं। इन पर योगाभ्यास से नियंत्रण पाया जा सकता है। जुलाई 2010 में हरिभूमि में प्रकाशित उनके साक्षात्कार के संपादित अंश।

आप सफल और संतुष्ट व्यवसायी रहे हैं। इस सफलता का मूल मंत्र क्या है?

सफलता का मूल मंत्र है आस्तिक भाव से उस ईश्वरीय सत्ता को स्वीकार करते हुए नेक इरादे और सच्चे मन से हंसते-हंसते पुरुषार्थ करना। कर्महीनता और आलस्य को मैं सबसे बड़ा अपराध मानता हूं। जिस भी समाज में आप रह रहे हैं, उसमें इस तरह से रहना कि पड़ोसी को आपकी वजह से तकलीफ न हो। मन, वाणी और हाथ-पैर से अपने से कमजोर को कभी हानि नहीं पहुंचाएं। अपने से कमजोर की रक्षा करना समर्थ की जिम्मेदारी है। जो मनुष्य सार्मथ्यवान होकर अपने से कमजोरों के प्रति दया, क्षमा और करुणा का भाव नहीं रखता, वो समाज के लिए पशु से भी भयंकर है। मैं कभी भय और लालच में नहीं आया। मैंने अंतिम सांस लेने तक पुरुषार्थ रूपी तप हंसते-हंसते करने का संकल्प लिया है। हमारे पिता जी ने हमें नौ ऐसी बताई जो इंसानी जीवन की शत्रु हैं। जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार। अहंकार जिसमें आ गया, उसे और शत्रुओं की जरूरत नहीं होती। उसका सर्वनाश करने के लिए यह अकेला ही काफी है। तीन वर्ष के योगाभ्यास से इन पर नियंत्रण हो जाता है। आलस्य अभाव, अज्ञान और अन्याय बाहरी शत्रु हैं।

व्यावसायिकता और मानवता विपरीत बातें मानी जाती हैं। आप दोनों को साथ लेकर चले। ये करिश्मा आपने कैसे किया?

ये तो जीने का तरीका है। अभ्यास की बात है। किसी को राम नाम लेने का अभ्यास हो गया। किसी को बीड़ी का। किसी को दारू का। किसी को देखने का। किसी को सूंघने

मैंने साथ काम करने वाले को कभी नौकर नहीं माना। वे मेरे हाथ हैं। सहयोगी और कार्यकर्ता हैं। मैंने उन्हें हमेशा ये बात सिखाई कि जो भी काम करो, ईमानदारी से करो। सत्य को साक्षी मानकर करो। उसका परिणाम समय पर आएगा, सुख और आनंद आएगा।

का। किसी को स्पर्श करने का। किसी को चखने का। मेरी समझ में ये बात बैठ गई कि संसार के पदार्थों में जितने भी सुख हैं, वो क्षणिक हैं। क्षणिक सुख के बंधन में जो इनका दास बन गया, उसका विकास रुक गया। मैंने साथ काम करने वाले को कभी नौकर नहीं माना। वे मेरे हाथ हैं। सहयोगी और कार्यकर्ता हैं। मैंने उन्हें हमेशा ये बात सिखाई कि जो भी काम करो, ईमानदारी से करो। सत्य को साक्षी मानकर करो। उसका परिणाम समय पर आएगा, सुख और आनंद आएगा।

आपने शून्य से शिखर तक का सफर तय किया। वह भी पुरुषार्थ के बल पर। किस तरह की चुनौतियों और मुश्किलों का आपको सामना करना पड़ा?

मैंने जीने का जो तरीका चुना, उसके कारण मैं कभी विचलित नहीं हुआ। आर्थिक लाभ हानि को मैं महसूस नहीं करता। मैंने ईश्वर के ऊपर छोड़ दिया। ठगे जाना गुनाह नहीं है, ठगना गुनाह है। अपने से कमजोर के हित की बात सोचनी चाहिए न कि चालाकी या छल से, उसे दबाएं। ईश्वर के गुण हैं दया, क्षमा, करुणा। राजा के भी प्राचीनकाल में यही गुण बताए गए हैं। घर के मुखिया के भी यही गुण होने चाहिए।

आपने व्यवसाय की बागडोर अगली पीढ़ी को सौंप दी है। उन्हें क्या सीख, संदेश, संस्कार और सलाह दी है?

मेरे छह बेटे और बहुएं हैं। तीन बेटी-तीन दामाद। उनके बच्चे हैं। मेरे भाई बंधुओं के संबंधी हैं। वो मेरे जीवन से कुछ सीखना चाहें तो सीख लें। मैंने उपदेश के रूप में कभी एक शब्द उन्हें नहीं बोला। अब ये जो जीने का तरीका है, हमारे संस्कार में ये बात आ गई थी कि ये सुख और आनंद का रास्ता है। सुख अस्थायी है। आनंद स्थिर अवस्था का नाम है। असंख्य प्रकार के लाभ आ जाएं, लोग प्रशंसा करने लग जाएं, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अंदर से उत्तर आ

असंख्य प्रकार के लाभ आ जाएं, लोग प्रशंसा करने लग जाएं, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अंदर से उत्तर आ जाएगा कि यह स्वार्थवश मेरी अति प्रशंसा कर रहा है। मुंह पर अति प्रशंसा करने वाला व्यक्ति समाज में सबसे बड़ा शत्रु है। और योग्यता से अधिक करता है तो समझ लो, वहां अधिक सावधानी की आवश्यकता है।
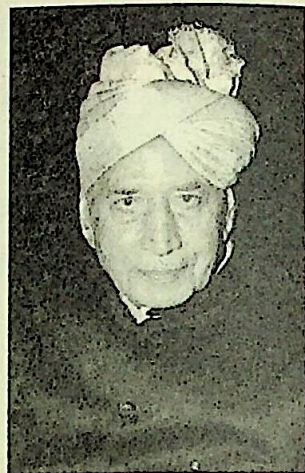
जाएगा कि ये स्वार्थवश मेरी अति प्रशंसा कर रहा है। मुंह पर अति प्रशंसा करने वाला व्यक्ति समाज में सबसे बड़ा शत्रु है और योग्यता से अधिक करता है तो समझ लो, वहां अधिक सावधानी की आवश्यकता है।

व्यवसाय से आपने स्वयं को अलग कर लिया है। अब आप समाज सेवा से जुड़ी किस तरह की गतिविधियों में सक्रिय हैं?

अंतिम सांस तक, जितना इस शरीर में सामर्थ्य होगा, अच्छा करने का प्रयास करेंगे। कारोबार से पीछे हटने का भाव ये नहीं है कि मैंने क्रियाएं छोड़ दी हैं। मैंने रास्ता बदल लिया है। व्यापार की दृष्टि से काम-काज बच्चों ने संभाल लिया है। मेरे मन में ये बात आई कि बचे हुए समय में क्या करूं? वनवासियों में शिक्षा के केन्द्र बनाए, जो अति अभाव के इलाके हैं। गांवों में शिक्षा के केन्द्र बनाए। खराब जमीन को सही करके उसमें बाग लगाए। जो हमारे संपर्क में आएं..हमारी जीने की जो पद्धति है, उसके बारे में उन्हें बताते हैं कि देखो भई, ऐसे किया है। अभ्यास से तुम भी कर सकते हो।

आपने आदिवासी, वनवासी और ग्रामीण क्षेत्र को अपनी कर्मभूमि बनाया। इसके पीछे क्या मंतव्य रहा?

बिल्कुल स्पष्ट मंतव्य था। हमने जीने का ये तरीका अपनाया कि जो कमजोर हैं और सहायता के पात्र हैं, उनको सहयोग देना है। उनका थोड़ा उपकार हो जाए, ये हमारे जीवन दर्शन में शुरू से रहा है। मन, वचन, व्यवहार को ध्यान में रखकर ऐसे आचरण करने चाहिए, जो सारे इंसानी समाज को तकलीफ में न डालें। कमजोर के दोष नहीं देखने हैं। उसके लिए अच्छा सोचना है। ये अपेक्षा करनी है कि उसके परिवार का हित हो जाए।

समाज में इस समय जो अव्यवस्था, तनाव और संघर्ष

वोट की राजनीति में संख्या महत्वपूर्ण हो गई है, गुण नहीं। चुनाव जीतने के लिए हर तरह के हथकंडे अपनाए जाने लगे हैं। एमपी, एमएलए के लिए कोई योग्यता नहीं रखी गई है। आपने लंबे समय तक साधना की है तो आपको योग्यता के अनुसार सम्मान दिया जाना आवश्यक है। मैंने इस बात को समझा है।

दिख रहा है, इसकी मूल वजह आप क्या मानते हैं?

मूल वजह यह है कि वोट की राजनीति में संख्या महत्वपूर्ण हो गई है, गुण नहीं। चुनाव जीतने के लिए हर तरह के हथकंडे अपनाए जाने लगे हैं। एमपी, एमएलए के लिए कोई योग्यता नहीं रखी गई है। आपने लंबे समय तक साधना की है तो आपको योग्यता के अनुसार सम्मान दिया जाना आवश्यक है, मैंने इस बात को समझा है। इन 63 वर्षों में समाज दो भागों में बंट गया है। व्यवस्था में परिवर्तन देखा है हमने। वनवासियों से उनके जंगल छिन गए। उनका रोजगार छिन गया। आजादी के बाद लैंड सीलिंग एक्ट आया। ऐसा नारा दिया गया कि हम जमींदारों से जमीन छीनकर गरीबों को दे रहे हैं। वास्तव में इसके पीछे की मंशा गांव के समाज को नष्ट करने की थी। भारत का गांव एक पूरा परिवार था और पूर्ण साम्राज्य था उसमें। कपड़ा वहां बनता था, जूती वहां बनती थी। लुहार वहां था। सुनार वहां था। बढ़ई वहां था। जब फसल आती थी, वो सब मिलकर अपना हक बांट लेते थे। वो ऐसा नहीं होने देते थे कि कोई बिना रोटी और चावल के मर जाए। उस व्यवस्था को तोड़ने की साजिश रची गई।

देश को आजाद हुए 63 साल हो गए हैं। आज भी गरीबी है, बेरोजगारी है, बेबसी है, भ्रष्टाचार है। क्या सरकारी नीतियां गलत रहीं?

भ्रष्टाचार हमें विरासत में मिला है। 1947 से पीछे के डेढ़ सौ वर्ष लगा लो। जब से यूरोपीय सभ्यता का राज आया। इसकी सत्ता में जीने वाला व्यक्ति पॉलिसी के नाम से कुछ भी कर देता है। कह देता है कि यह पॉलिसी थी। वो यह कहने का मौका ही नहीं देता कि मैंने गलत किया, धोखा किया या रिश्वत ली। फ्राड किया, बेइमानी की। आजादी के बाद देश का शीर्ष नेतृत्व आम आदमी के हितों की बजाय व्यक्तिगत स्वार्थों को साधने में लग गया। कानून तोड़ने की शुरुआत भी शीर्ष से ही आरंभ हुई। कानून

भारत का गांव एक पूरा परिवार था और पूर्ण साम्राज्य था उसमें। कपड़ा वहां बनता था, जूती वहां बनती थी। लुहार था। सुनार था। बढ़ई वहां था। जब फसल आती थी, वो सब मिलकर अपना हक बांट लेते थे। और वो ऐसा नहीं होने देते थे कि कोई बिना रोटी और चावल के मर जाए। उस व्यवस्था को तोड़ने की साजिश रची गई।

की ही दुहाई देकर शासक मर्यादाहीनता करने लगा। ये परिस्थितियां इसलिए बनीं क्योंकि शासक ही व्यक्तिगत जीवन में पाक-साफ नहीं था। जब मूल ही खराब हो गया है तो उससे अच्छे फल की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं?

मीडिया में एक सामाजिक समस्या सुर्खी बनी हुई है, जिसे ऑनर किलिंग का नाम दिया गया है। इस समस्या के मूल में क्या है और इसका समाधान क्या है?

हमारी जो प्राचीन व्यवस्थाएं हैं और इंसानी समाज के जो कर्त्तव्य और अधिकार बताए गए हैं, उन विचारों में सोलह संस्कार हैं। उस व्यवस्था में तीन गोत्र छोड़ने का वैज्ञानिक आधार है। इससे वंशानुगत बीमारियां नहीं आएंगी। वंशानुगत बीमारियों की आज तक कोई दवा नहीं बनी है। ये मान्यता है कि पूरा गांव हमारा परिवार है। आजादी से पहले गांव संपूर्ण साम्राज्य था। शहर या राजा की उनको विशेष आवश्यकता नहीं थी। वे सब मिलकर बैठते हैं। फैसले करते हैं। गांव की बेटी को सब अपनी बेटी मानते हैं तो उसे बहू के रूप में स्वीकार कैसे कर सकते हैं? ये जो हमारी खाप हैं, पंचायतें हैं, प्राचीन व्यवस्था है। गोत्र व्यवस्था पूरी तरह वैज्ञानिक है। एक नहीं, तीन गोत्र छोड़ना और गांव की सीमा में शादी नहीं करनी, भले ही गोत्र न मिलते हों, क्योंकि गांव की बेटी हमारी बेटी है। ये मीडिया वाले संबंधों की पवित्रता को नष्ट कर रहे हैं। ये बोलते हैं कि पंचायत का तुगलकी फरमान। ये या तो उसे समझते नहीं हैं और समझते हैं तो जान बूझकर उस व्यवस्था को तोड़ना चाहते हैं।

अपने से कमजोर की रक्षा करना ही मनुष्यता है

करीब तीन वर्ष पूर्व जी जागरण चैनल ने चौधरी मित्रसैन आर्य का विशेष साक्षात्कार प्रसारित किया था। यहां प्रस्तुत है उस इंटरव्यू के संपादित महत्वपूर्ण अंश :

आपको एक स्वयंनिर्मित व्यक्तित्व के रूप में जाना जाता है। आपने खुद एक सफर तय किया है कामयाबी का। उसके पीछे आप स्वयं रहे हैं-एक कर्मठ, संघर्षशील, व्यक्तित्व के रूप में। आपको प्रेरणा कहां से मिली।

मूल रूप से प्रेरणा हमें हमारी परम्पराओं से मिली। हमारी पैतृक सम्पत्ति है, संस्कारों की, हमारे पिता की, हमारे दादाजी की। पुरुषार्थ उसको कहते हैं जो खुशी से, स्वेच्छा से किया जाता है। मजबूरी, लोभ और भय में किया हुआ पुरुषार्थ दासता और पशुता में आता है। खुशी से पुरुषार्थ करने का संस्कार पिताजी और आर्य समाज ने दिया। आजादी के बाद 1947 में प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने नारा दिया कि घर-घर को वर्कशॉप बना दो और आराम हराम है। इसके बाद सब पीछे की तकलीफें भूलकर पुरुषार्थ में लग गए। दूसरे उस परमात्मा की कृपा से, पूर्व जन्म के संस्कारों से और माता-पिता के संयोग से सारी सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ मानव शरीर हमको मिला है। ये हमको बचपन में समझा दिया गया कि इसका सदुपयोग करना है। जो संग्रह हो, उसको बांट के खाना है। सरप्लस को बांट के खाना मनुष्यता में आता है। अपने से कमजोर की रक्षा करना मनुष्यता में आता है। अपने से कमजोर को क्रैश करना पशुता में आता है।

शिक्षा, उद्योग, मीडिया-सभी क्षेत्रों में आपका एक प्रतिनिधित्व है। बड़ी आदर्श स्थिति में आप अपने विचार को, संकल्प को दिशा दे रहे हैं। बहुत सारे स्कूल आपने विभिन्न प्रान्तों में खोले। क्या समाज सेवा को हम किसी पूजा या प्रार्थना के समतुल्य

मान सकते हैं?

खान अब्दुल गफ्फार खान, जिन्हें 'सीमान्त गांधी' के नाम से जाना गया, उन्होंने एक विचार दिया 'खुदा-ए-खिदमतगार'। जो ईश्वर के बंदों की खिदमत करता है, वह ईश्वर की खिदमत करता है। लाला लाजपतराय ने संगठन दिया- Servants of the People Society. ये ऐसे विचार हैं जिन पर कोई भी चलकर देख ले। यह रास्ता सुख और आनन्द का है। हमने इस रास्ते पर चलने का प्रयास किया है। उससे सबका हित हुआ। चाहे उड़ीसा के जंगलों में हूं, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड या हरियाणा के गांव में। बचपन से ही मेरा जीने का तरीका बन गया कि मुझे नेगेटिव नहीं सोचना है। सबको मित्र की भावना से देखना है। उसके दोष नहीं देखने हैं।

इस आयु में भी आप इतने तरोताजा, इतने सौम्य और इतने ऊर्जावान दिखते हैं। क्या रहस्य है इस ऊर्जा का?

यह अभ्यास की बात है। इसको आत्मिक शक्ति भी कह सकते हैं। जबसे होश संभाला है, तबसे यही दिनचर्या है-सुबह चार बजे उठना और रात को दस बजे तक हंसते-हंसते पुरुषार्थ करना। जितना टाइम है उसे ब्रेकअप करके बनाया कि दिन के आठ घंटे में हमको यह करना है। इतने बजे उठना है। ये स्वाध्याय करना है। व्यायाम करना है। अब भी सुबह चार-साढ़े चार बजे उठ जाता हूं और रात को दस-साढ़े दस बजे तक सोने का प्रयास रहता है। आयु बढ़ेगी, शरीर घटेगा, लेकिन विचारों का कमजोर होना, संकल्प का कमजोर होना और मन के कमजोर होने का शरीर की कमजोरी से कोई संबंध नहीं है।

आज का युवा फास्ट फूड और पेप्सी संस्कृति की तरफ बढ़ रहा है। क्या इसका हमारे जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है?

सौ प्रतिशत पड़ता है। ऐसा क्यों हो रहा है? उन्नति, सुख और आनन्द देने वाला रास्ता क्यों छोड़ा जा रहा है? जितनी भी राजसत्ताएं हैं..उनमें मीडिया भी है.. राजा भी। हमारे विधान में ऐसी कुछ बातें डाल ली गई हैं जो मनुष्यता के, इंसानियत के सिद्धांतों को क्षतिग्रस्त करती हैं। गुण की पूजा नहीं है, संख्या की पूजा होने लगी है।

आज एम. एल. ए. और एम.पी. पांच साल के लिए चुने जाते हैं, जिन्हें मैं

सुबह चार-साढ़े चार बजे उठ जाता हूं और रात को दस-साढ़े दस बजे तक सोने का प्रयास रहता है। आयु बढ़ेगी, शरीर घटेगा, लेकिन विचारों का कमजोर होना, संकल्प का कमजोर होना और मन के कमजोर होने का शरीर की कमजोरी से कोई संबंध नहीं है।

अस्थाई और शक्तिशाली राजा मानता हूं। और शक्तिशाली जब मर्यादा तोड़ता है तो कमजोर उसका अनुसरण करता है। तो ये जो हमारा खान-पान बिगड़ा, आचरण बिगड़ा, इसकी वजह भी यही है।

तो आप यह मानते हैं कि देश के महत्वपूर्ण पदों पर बैठे हुए लोगों के जीवन में नैतिक मूल्यों का समावेश होगा तो देश अधिक विकसित होगा?

इसमें संदेह ही नहीं है। घर का मुखिया, समाज का मुखिया, जिसको हम गांव का सरपंच-घर का मुखिया कहते हैं, का आचरण ठीक रहेगा तो ही घर-समाज सही दिशा में आगे बढ़ेंगे। अगर राजा सिद्धांतहीन होगा, मर्यादाहीन और आचरणहीन होगा तो प्रजा तो उससे भी बहुत आगे जाएगी। कहा भी गया है- यथाराजा-तथाप्रजा।

हमारे जीवन में संस्कार और जीवन मूल्य धीरे-धीरे कम होते जा रहे हैं। क्या कारण है इसका?

कारण स्पष्ट है। शक्तिशाली आदमी, जो कानून बनाता है, वही कानून को तोड़ता है। आज वह मर्यादाहीन हो गया है। तुलसीदास जी कहते हैं- समरथ को नहिं दोष गुसाईं। सब दोष कमजोर का है। हमारी धरती रत्नगर्भा है। इसमें यूरेनियम, ग्रेफाइट, क्रोमाइट, आयरन, मैगनीज, अनेक मिनरल्स, हीरे-जवाहरात और कोयला भरा पड़ा है। भारत का शक्तिशाली समाज 45 दिन वोट का ड्रामा करके स्टेट की राजधानियों में जाकर बैठ जाता है। मीडिया उसको वोट डलवाता है हाईलाइट करके। ठेके लेता है मीडिया। फिर बाहुबली ठेका लेता है। मैं बिहार में 1965 से और उड़ीसा में 60-61 से काम कर रहा हूं। वनवासियों के बीच जाकर बैठता हूं, जिनके पास आज तन ढंकने को कपड़ा नहीं है। उनके मन में जरा-सा भी छल नहीं है। वे आपसे प्यार करते हैं।
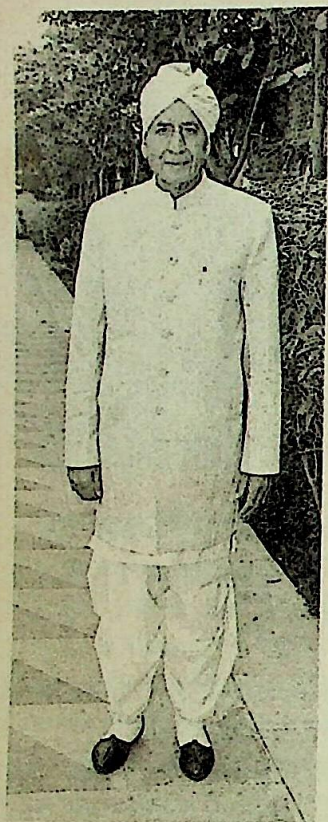
आम आदमी में छल-कपट नहीं होता है।

हमारे देश की प्राचीन विद्याएं- ज्योतिष, योग, अध्यात्म पूरे विश्व में पहुंच गई हैं। लेकिन राजसत्ताएं इसके प्रति उदासीन रही हैं, ऐसा क्यों?

स्पष्ट है, राजसत्ताएं जब इसके बारे में मौन रहीं या विरोध किया तो इसके पीछे कारण यही था कि वे सत्य को साक्षी नहीं करना चाहती थीं। कोई भी महापुरुष अपने जीवन के 50-60 साल किसी विद्या के परिष्कार में समर्पित कर देता है, लेकिन कुछ कुटिल लोग उसकी विद्या को गलत रूप में प्रस्तुत कर लोगों को भ्रमित कर देते हैं। ये लोग मठ के मालिक बन जाते हैं। मैं ऐसे सैंकड़ों महात्माओं का जीवन बता सकता हूं, जिन्हें दस- बीस कुटिल लोगों ने घेर लिया। अंतिम सांस तक उनको छोड़ा नहीं। उनके पुण्यों का तो दोहन कर लिया और अपने पाप उनके हिस्से में डाल दिए। यह सब जानते हैं कि जिन महापुरुषों ने सही पथ चुना, सर्वहित की भावना से चले यानी प्राचीन विद्याएं सिद्ध की हैं। इन विद्याओं का प्रचार-प्रसार कुटिल लोग या कहें राजसत्ताएं नहीं करेंगी, क्योंकि इनको समाज की उन्नति से कोई लगाव विशेष नहीं है। इनको वोट से लगाव है।

आप अपने जीवन के अनुभवों से कोई संदेश देना चाहेंगे?

देखिए, सभी मनुष्यों को सर्वहित की भावना से, मित्रभाव से देखना चाहिए। इसी में सबकी उन्नति है, किसी का अनिष्ट नहीं है। किसी के दोष नहीं देखने चाहिए। उसके गुणों को देखकर अपने पुरुषार्थ रूपी तप को बढ़ाते जाना चाहिए, इसी में सभी का हित है।

श्रद्धांजलि

अपने सत्कर्मों से मित्रसेन जी हो गए अमर : स्वामी रामदेव

चौ. मित्रसेन जी एक आदर्श पुत्र थे, जिन्होंने अपने पिता चौ. शीशराम जी के नाम और सम्मान को पूरे राष्ट्र में स्थापित किया। वे एक आदर्श पिता भी थे। अपने पुत्रों को खुद से ज्यादा योग्य बनाया। वे एक आदर्श इंसान थे, जिन्होंने अपने जीवन में सत्य, पुरुषार्थ और ईश्वर की आस्तिकता के बल पर जीवन में शून्य से शिखर तक की यात्रा की। जीवन में इतना यश, प्रतिष्ठा और ऐश्वर्य पाकर भी उनको अहंकार छू तक नहीं पाया था।

वे कलयुग के दानवीर कर्ण के समान थे। श्रीराम को अपना आदर्श मानकर एक आदर्श गृहस्थ, एक आदर्श समाजसेवी और एक आदर्श वेदानुगामी होने का उन्होंने धर्म निभाया। एक संन्यासी जैसा जीवन, संन्यासी जैसा आचरण, गृहस्थ धर्म को अच्छी तरह से निभाने वाले चौ. मित्रसेन जी का भारतीय संस्कृति, सदाचार, सेवा संयम, संस्कार, संयुक्त परिवार, शाकाहार निर्व्यसनी जीवन, विश्वबन्धुत्व का भाव, इन नौ सांस्कृतिक परंपराओं में अटूट विश्वास रहा। वे इन संस्कारों को पूरी श्रद्धा से निभाते रहे। यह एक ऐसा परिवार है, जिसमें एक भी बच्चा दुर्व्यसनी नहीं है। उन्होंने परिवार को ऐसे संस्कार दिए कि यहां 3 साल के बच्चे से लेकर सभी बुजुर्गों को यज्ञ करना आता है। उन्होंने अपने घर में कोई मंदिर नहीं बनाया, इनके घर में जैसी सुन्दर यज्ञशाला है, किसी आर्य समाज में नहीं है, यहां 6 साल से लेकर 79 साल के मित्रसेन जी तक, एक साथ यज्ञ करते रहे हैं।

जब भी मुझे चौधरी साहब से लंबी बातचीत का अवसर मिलता था तो वे स्वतंत्रता सेनानियों की बात किया करते थे और कहा करते थे कि आजादी के बाद जब हमारे लोगों के हाथ में सत्ता आई तो उन्होंने सत्ता के लिए समझौते कर लिये। जैसा राष्ट्र स्वाधीनता सेनानी और गांधी जी बनाना चाहते थे, वैसा भारत नहीं बना। वो हमेशा मुझसे कहा करते थे कि महाराज जी आप जो राष्ट्र निर्माण का काम कर रहे हैं, ये काम बहुत जल्दी पूरा होगा।

वे एक संन्यासी के रूप में मेरा सम्मान करते थे और पिता की तरह मुझ से बहुत प्यार भी। वे मुझसे कहा करते थे कि आप जिस रास्ते पर चल रहे हैं, वह मेरे लिए सर्वोपरि है। जब भी मेरे पास हरिद्वार आते थे तो कई किलो देशी घी और बूरा जरूर लेकर आते थे।

निश्चित रूप से यह दुःख की घड़ी है। परन्तु यह भी सत्य है कि चौ. मित्रसेन सिन्धु जी जैसी महान आत्मा कभी मर नहीं सकती। वे सदैव अमर रहेंगे, अपने सद्गुणों के कारण, अपने सद्कार्यों के कारण अपनी योग्य संतान के कारण। चौ. मित्रसेन जी ने इंसानियत, सामाजिकता एवं आध्यात्मिकता की जो इबारत लिखी, उसकी स्याही कभी धूमिल नहीं होगी। चौधरी साहब ने गृहस्थ होते हुए भी पूरा जीवन संन्यासी की तरह जिया। आर्य समाज के जरिए वे पूरी उम्र समाजसेवा में लगे रहे। ऐसे विराट व्यक्तित्व को मेरा शत्-शत् नमन।

अध्यात्मिकता की इबारत लिखी

निश्चित रूप से यह दुःख की घड़ी है परन्तु यह भी सत्य है कि चौ. मित्रसेन सिन्धु जी जैसी महान आत्मा सदैव अमर रहेगी। अपने सद्गुणों के कारण, अपने सद्कार्यों के कारण, अपनी योग्य संतान के कारण। चौ. मित्रसेन सिन्धु जी ने इंसानियत, सामाजिकता एवं आध्यात्मिकता की जो इबारत लिखी है उसकी स्याही कभी धूमिल नहीं होगी। मैं उनकी स्थूल देह के अवसान पर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं तथा राधा स्वामी दयाल से यह अरदास करता हूं कि आप द्वारा जलाई गई समाज को प्रकाशवान कर देने वाली ज्योति कभी मंद ना पड़े।

परम संत हजूर श्री कंवर सिंह महाराज राधा स्वामी सत्संग, दिनोद, भिवानी

अतिथि सत्कार में चौधरी मित्रसेन जी का कोई सानी नहीं था। हमने चाहे आर्य सभा के माध्यम से राजनीतिक संघर्ष किए अथवा बंधुआ मुक्ति मोर्चा के माध्यम से संघर्ष किया, उनका हमें तन-मन-धन से सदैव सहयोग मिलता था। जब-जब आर्य समाज के संगठन में जबरदस्त द्वंद्व चला, तब-तब चौधरी मित्रसेन जी चट्टान की तरह हमारे साथ खड़े रहते थे। चौधरी साहब ने गुजरात में आए भीषण भूकंप के बाद पूरी तरह से बर्बाद हुए एक गांव के लगभग 800 परिवारों को नए मकान अपेक्षित सभी आवश्यक वस्तुएं मुहैया कराकर इंद्रप्रस्थ नगर नाम से नया गांव बसाकर ऐतिहासिक काम किया। वे हर पल समाज के लिए जिए।

स्वामी अग्निवेश विचारक

प्रतिभासम्पन्न व्यक्तित्व थे मित्रसेन जी

चौ. मित्रसेन आर्य जी के देहावसान की सूचना मिली। स्वजनों का वियोग होने पर दुःख होना स्वाभाविक है। विशेषकर उस अवस्था में जब वह व्यक्ति हमारे विचारों, मन्तव्यों, सिद्धांतों तथा कार्य करने की शैली के अनुरूप हो और हमारे साथ व्यक्तिगत व पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, सर्वहितकारी कार्यों को करने में सदा संलग्न रहता हो। मैंने ऐसा अनुभव किया है कि मित्रसेन जी पूर्व जन्मों में किये गये सत्कर्मों के संस्कारों से युक्त प्रतिभासम्पन्न व्यक्तित्व रखते थे।

स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक वानप्रस्थ साधक आश्रम, साबर कंठा, गुजरात

चौ. मित्रसेन जी की छत्रछाया में 14 गुरुकुल संस्थाएं देशभर के विभिन्न बनवासी क्षेत्रों में कार्यरत हैं। 1988 में वे गुरुकुल के परिचालन समिति के प्रधान बने। तभी से संस्था ने उन्नति के पथ पर कदम रखा। चौ. मित्रसेन आर्य जगत में निर्विवाद, प्रेरणाप्रद, मार्गदर्शक थे। सारा आर्य जगत उनसे प्रेरणा ले रहा था। उनके निधन से पूरे जगत की क्षति हुई है।

स्वामी धर्मानन्द **गुरुकुल आश्रम, आमसेना, ओडिशा**

चौ. मित्रसेन आर्य का योगदान ही था कि आज हरियाणा से लेकर सुदूर आदिवासी इलाकों तक में उनके द्वारा जलाई गई शिक्षा की लौ जल रही है। चौ. मित्रसेन जी को स्वतंत्र भारत में सामाजिक परिवर्तन के लिए युगों-युगों तक याद किया जाएगा। उन्होंने समाज सुधार के उद्देश्य से वही सारे नियम घर में भी लागू किए।

आचार्य बलदेव **गुरुकुल कालवा, जींद**

मित्रसेन जी के स्वर्गवास का समाचार सुनकर सभी मर्माहत हुए। वे संस्कारनिष्ठ और धर्मपरायण व्यक्तित्व के धनी थे। सादा जीवन और उच्च विचार को उन्होंने जीवनपर्यन्त जीकर दिखाया। उनके चेहरे पर सदा बालक जैसी निश्छलता तथा साधुओं जैसी शांति रहती थी। ऐसे महान तपस्वी को दुनिया सदियों तक याद रखेगी।

महंत चांदनाथ, **बाबा मस्तनाथ मठ, रोहतक**

चौ. मित्रसेन जी समाज सुधार के प्रतीक थे। उनका जीवन समाजसेवा के प्रति समर्पित था। सामाजिक गतिविधियों, शिक्षा व आर्य समाज को मजबूत करने में उनका योगदान वर्षों तक याद किया जाता रहेगा। गुरुकुल शिक्षा पद्धति के प्रति उन्हें विशेष लगाव था और वे ताउम्र गुरुकुलों को सहयोग करते रहे।

आचार्य बालकृष्ण **पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार**
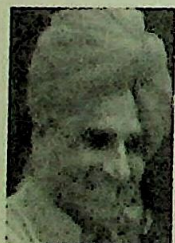
परम आदरणीय चौधरी साहब सौम्यता की प्रतिमूर्ति, आतिथ्य की पराकाष्ठा व शालीनता में अद्वितीय थे। आपसे मिलने की मुझे सदा उत्सुकता बनी रहती थी। आपके संपर्क मात्र से कोई भी व्यक्ति अपने आपको सामाजिक निर्माण में लगने के लिए प्रेरित होता था। प्रभु मित्रसेन जी की आत्मा को शांति व उनके परिवार को उनके संस्कार और आगे ले जाने के लिए उद्यत बनाये।

स्वामी संपूर्णानन्द **कुरुक्षेत्र**

पूज्य पिता जी जीवन के जो अनुभव मुझे सुनाते, वैसा बड़े-बड़े विद्वान्, सन्त और साधु नहीं सुना सकते थे। मैं सोचता ही रह जाता। कितना स्वाध्याय एवं मनन विचार हैं उनके अन्दर जो प्रकाश में स्वयं आ जाता है। धन और विद्या एक साथ नहीं रहते, इस बात को उन्होंने झूठा साबित कर दिखाया।

स्वामी व्रतानन्द **उत्कल प्रतिनिधि सभा, उड़ीसा**

शिक्षा के प्रचार व दुर्लभ कृतियों को बचाने के लिए चौधरी मित्रसेन ने जो काम किया, इतिहास में ऐसा कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिल सकता। उन्होंने विद्यादान देकर आर्य जगत के लिए कितने ही उपदेशक, प्रचारक, नैष्ठिक ब्रह्मचारी प्रदान किए। प्रकाशन के क्षेत्र में आपने कितने ही दुर्लभ और नए उदीयमान लेखकों की रचनाओं को प्रकाशित करवाया।

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती **वेद मन्दिर, इब्राहिमपुर, दिल्ली**

कर्मयोगी श्री मित्रसेन आर्य महर्षि दयानन्द के भक्त थे। उनका जीवन संघर्षों से भरा हुआ रहा, लेकिन परिश्रम से उन्होंने वो सब कर दिखाया जो एक कर्मयोगी ही कर सकता है। वे अपने जीवन के स्वयं निर्माता थे। वे ज्यों-ज्यों सम्पन्न होते गए, त्यों-त्यों वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के प्रति अधिक उत्साह के साथ कार्य-क्षेत्र में उतरते गए।

भगवान देव चैतन्य **हिमाचल प्रदेश**

श्रेयमार्गी माननीय चौधरी मित्रसेन आर्य के बारे में सुनता, तो मेरी उत्कट इच्छा होती कि यथाशीघ्र उनके दर्शन करूं। सौभाग्य से एक बार जब उनके रोहतक स्थित निवास स्थान सिन्धु भवन में मिला तो सिन्धु परिवार के भद्रजनों के संस्कृतनिष्ठ व्यवहार को देखकर अभिभूत हो गया। मुझे उनके परिवार में ही पूरे समाज के दर्शन हो गए।

स्वामी आर्यवेश **बंधुआ मुक्ति मोर्चा, नई दिल्ली**

मित्रसेन जी कर्म, ज्ञान, भक्ति की त्रिवेणी थे। हिन्दुत्व के रक्षक तथा गोभक्त थे। उन्होंने मतांतरण का घोर विरोध किया। इसके लिए बनवासी क्षेत्र में गुरुकुल की स्थापना करके धर्म संस्कृति की रक्षा की और विद्या रूपी ज्ञान की ज्योति जलाई। ऐसे कर्मयोगी को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से शत्-शत् नमन।

सीताराम व्यास **उत्तर क्षेत्र कार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ**

स्वर्गीय चौ. मित्रसेन जी आर्य से मिलने सन् 1977 में महाश्य पोकर सिंह, खाण्डा खेड़ी के साथ बड़बिल उड़ीसा गया तो वे हमें भुवनेश्वर जीप द्वारा ले गये। मैं उनके अतिथि सत्कार का कायल हो गया। वहां उन्होंने टेंडर मेरे हाथ से भरवाया, जो बहुत लाभ का सिद्ध हुआ। मैं ऐसे कर्मयोगी को नमन करता हूं।

स्वामी कर्मपाल **सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत, जीन्द**

चौ. मित्रसेन जी ने अपना जीवन गरीब व जरूरतमन्दों की सहायता में लगाया। वे सदैव धर्म के मार्ग पर ही चले। उनका जीवन अनुकरणीय रहा है, प्रत्येक व्यक्ति को उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। विशेषकर युवा पीढ़ी के लिए चौ. मित्रसेन आदर्श थे। उन्होंने शिक्षा व धर्म के लिए जो कार्य किए, उन्हें सदैव याद रखा जाएगा।

महंत वेदनाथ **जोगी वाला अखाड़ा, भिवानी**

चौ. मित्रसेन ने अपने जीवन के उद्देश्य को कभी सीमित दायरे में नहीं बांधा। वे सदैव सर्वहित की भावना से सामाजिक कार्यों में तल्लीन रहते थे। आस्तिकता का भाव उनमें कूट-कूटकर भरा हुआ था। आर्य समाज के प्रकल्पों में आपकी उपस्थिति सभी के लिए प्रेरणादायक होती थी। आने वाली पीढ़ियों के लिए आप सतत् प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे।

डा. यशदेव शास्त्री **पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार**

मित्रसेन जी व्यक्तित्व सरल, सहज, सबके प्रति सदा स्नेह व सद्भाव से परिपूर्ण रहा। जो भी आपके संपर्क में आया, वह सदा के लिए आपका प्रशंसक बन गया। जब से आप परोपकारिणी सभा से जुड़े आपने पूरे सामर्थ्य से सभा की उन्नति के लिए प्रयास किया। ऐसे समय में आपका विदा हो जाना बड़े आघात से कम नहीं।

डा. धर्मबीर **परोपकारिणी सभा, अजमेर**

चौ. मित्रसेन मंत्रों में पैदा हुए और वेद मंत्रों के उच्चारण में ही चले गए। एक जमाना था जब उनका गांव राजनीतिक, धार्मिक शक्तियों का केन्द्र था और उनका पूरा परिवार इन गतिविधियों में हिस्सा लेता था। अथक परिश्रम से चौ. मित्रसेन ने हलपति से उद्योगपति तक का सफर तय किया।

सुलतान सिंह **पूर्व राज्यपाल, त्रिपुरा**

मेहनत कर जमीन से आसमान छूने के बाद भी इतना सरल जीवन जीने वाले चौधरी मित्रसेन की कमी हमेशा खलती रहेगी। देश के उच्चकोटि के उद्योगपति होने के बावजूद उन्हें घमंड या अभिमान छू भी नहीं पाया था। वे सादा जीवन, उच्च विचार में विश्वास रखते थे। उनके दिखाए रास्ते पर चलना ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

नितिन गडकरी राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी

मैंने अपने जीवन में चौ. मित्रसेन आर्य जैसा व्यक्ति नहीं देखा। वे मुझे अपनी बेटी समझते थे। जब भी मैं उनसे मिली, वे गरीबों और जरूरतमंदों के उत्थान के बारे में बात करते थे। वास्तव में उनका निधन मेरे लिए व्यक्तिगत व समाज के लिए बहुत बड़ी क्षति है। उनके दिखाए मार्ग पर चलना ही इस महान आत्मा को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सुषमा स्वराज नेता प्रतिपक्ष, लोकसभा

चौधरी साहब द्वारा किए गए सामाजिक कार्यों को कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। गरीबों के उत्थान और धर्म के प्रचार के लिए वे सदा जुटे रहते थे। चौ. मित्रसेन सिंधु आर्य समाज के प्रमुख नेताओं में से एक थे। उन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज के प्रचार-प्रसार व गरीबों के उत्थान में लगा दिया।

राजनाथ सिंह पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी

पिता के निधन का समाचार जानकर अत्यंत दुःख हुआ। सद्आत्मा की अंतर्मन की शांति के लिए हार्दिक श्रद्धांजलि। समग्र परिवार के प्रति इस विपदा की बेला में अंतरमन की संवेदना प्रकट करता हूं। चौ. मित्रसेन का जाना केवल एक परिवार के लिए नहीं बल्कि पूरे समाज के लिए आघात के समान है।

नरेन्द्र मोदी मुख्यमंत्री, गुजरात

चौ. मित्रसेन जी प्रदेश में आर्य समाज के स्तंभ थे। उनके जाने से समाज को जो क्षति हुई है उसकी भरपाई करना बहुत मुश्किल है। प्रदेश में शिक्षा व समाज उत्थान में उनका योगदान हमेशा-हमेशा याद किया जाता रहेगा। मैंने उनसे सामाजिक जीवन के मूल मंत्र प्राप्त किए। वे युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा के प्रतीक थे।

भूपेन्द्र सिंह हुड्डा मुख्यमंत्री, हरियाणा

चौधरी साहब ने देश के विकास के लिए जो योगदान दिया, उसके लिए पूरा देश उनका ऋणी रहेगा। उनके घर से आज तक कोई भी निराश नहीं लौटा। जरूरतमंद व आदिवासी क्षेत्रों के लिए जो चौ. मित्रसेन ने किया वो अपने आप में मिसाल है। वास्तव में ऐसी महान आत्मा की कमी पूरी होने में बहुत समय लगेगा।

डॉ. रमन सिंह मुख्यमंत्री, छतीसगढ़

मैं जब कभी भी चौ. मित्रसेन से मिला तो उनके व्यवहार का कायल हो गया। वे हर मिलने वाले को इतना स्नेह देते थे कि वह ताउम्र चौ. मित्रसेन को भुला नहीं पाता था। वे हमेशा धर्म व गरीबों के उत्थान की बात करते थे। मुझे उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला। उनकी कमी को पूरा करना वास्तव में असंभव है।

विजय गोयल पूर्व केंद्रीय मंत्री, राष्ट्रीय महासचिव, भाजपा

चौ. मित्रसेन युवा पीढ़ी के लिए एक प्रेरणास्रोत थे। उनके मार्गदर्शन से ही युवा पीढ़ी में दान व कल्याण की भावना जागृत हुई। वे दान दिए, धन न घटे में विश्वास करते थे। यही कारण था कि उनके पास मदद के लिए आया कोई भी व्यक्ति खाली हाथ नहीं लौटा। ऐसे महान व्यक्तित्व के जाने से समाज में जो रिक्तता आई है, उसे भरना संभव नहीं है।

धर्मेन्द्र प्रधान राष्ट्रीय महासचिव, भाजपा

वैदिक पथिक चौ. मित्रसेन आर्य ने अपना सारा जीवन गरीबों के उत्थान में लगा दिया। उनके दरबार में जो भी व्यक्ति सहायता मांगने के लिए आया कभी निराश नहीं लौटा। मैं जब भी उनसे मिला वे हमेशा समाज एवं देश की ही बात करते थे। उन्होंने कभी भी जीवन में निराशा का भाव नहीं आने दिया।

संतोष गंगवार पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं राष्ट्रीय सचिव, भाजपा

चौ. मित्रसेन ने एक कर्मयोगी का जीवन जिया। उनके जाने से जो क्षति समाज एवं परिवार को हुई है उसे कभी पूरा नहीं किया जा सकता। अपने, कर्मों व मिलनसार स्वभाव के कारण वे हमेशा हमारे दिलों में जिंदा रहेंगे। उनके गुणों के कारण समाज सदैव उनकी कमी महसूस करेगा।

आईडी स्वामी पूर्व केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री

आमजन के प्रति अपनी उदार सोच के कारण ही चौधरी मित्रसेन आर्य का जीवन इतना सरल था। वे हर छोटे और बड़े काम के लिए सहज ही उपलब्ध हो जाते थे। मेरे प्रदेश में भी जो उन्होंने किया, उसकी गणना करना मेरे बस में नहीं है। कन्या शिक्षा के लिए चौधरी साहब द्वारा किए गए प्रयास सदैव याद रखे जाएंगे।

शिवराज सिंह चौहान मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश

चौ. मित्रसेन जी का निधन मेरे लिए व्यक्तिगत आघात है। वे मेरे परिवार का हिस्सा थे। जब भी मैं उनसे मिलती थी, वे समाजसेवा के लिए प्रेरित करते रहते। एक छोटे से गांव से निकलकर पूरे देश में समाजसेवा की अलख जगाने वाले चौ. मित्रसेन जैसा कोई और नजर नहीं आता।

कुमारी शैलजा केन्द्रीय केबिनेट मंत्री

समाज एक आदर्शवादी, प्रेरणादायक, सिद्धांतवादी, चरित्रवान, सच्चे, ईमानदार, समाजसेवी, गरीबों के हितैषी, कर्मयोगी व्यक्तित्व से महरूम हो गया है। मुझे उनके व्यक्तित्व से बहुत कुछ सीखने को मिला। चौ. मित्रसेन द्वारा समाज व धर्म के लिए किए गए कार्यों के लिए पूरा देश उन्हें याद रखेगा।

सुभाष महरिया पूर्व केन्द्रीय मंत्री

चौ. चित्रसेन जी से हमारे पारिवारिक सम्बन्ध थे। जिन्दल साहब उनको अपना भाई मानते थे। उन्होंने अपने परिवार व समाज के लिये जो किया वो एक मिसाल है। सदैव समाज के लिए प्रगतिशील रहने वाले चौ. मित्रसेन के निधन से देश को अपूर्णीय क्षति हुई है। भगवान से प्रार्थना है कि उनको अपने चरणों में स्थान दें व परिवार को दुःख सहने की ताकत।

सावित्री जिन्दल विधायक एवं पूर्व मंत्री, हरियाणा

चौ. मित्रसेन ने देश में आर्य समाज व शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए बहुत काम किया। उनके सामाजिक कार्यों के लिए उन्हें हमेशा याद किया जाता रहेगा। उन्होंने आर्य समाज के सिद्धांतों का प्रचार करके हजारों लोगों को बुराई से मुक्त करवाया। वे हमेशा जीवन में उच्च मापदंड अपनाने का उपदेश देते थे।

जयप्रकाश पूर्व केंद्रीय मंत्री

एक किसान के घर में पैदा हुए चौ. मित्रसेन ने जो संस्कार परिवार एवं समाज को दिए वे आज के समय हर किसी के लिए संभव नहीं है। वे हमेशा समाज के बारे में सोचते थे और उत्थान के प्रयास करते रहते थे। जब भी उनसे मिलने का मौका मिला, वे हमेशा समाज कल्याण की बात करते थे।

अजय सिंह चौटाला विधायक एवं राष्ट्रीय महासचिव, इनेलो

मेरे पिता जैसे मौसा जी चौ. मित्रसेन सेन का व्यक्तित्व सूरज की रोशनी व फूल की सुगन्ध जैसा था। आपका जीवन हर मनुष्य के लिए जो अग्निपथ पर देश को गौरवान्वित करने के लिए तत्पर है, प्रेरणा देता रहेगा। आप जैसी पुण्य आत्मा और कितनी हैं, मैं दूसरा नाम नहीं जानता। आपका आशीर्वाद सदैव बना रहे।

प्रवेश साहिब सिंह महामंत्री, दिल्ली प्रदेश भाजपा

श्री मित्रसेन जी जीवनपर्यन्त शिक्षा तथा समाज के सर्वांगीण उत्थान में लगे रहे। इस योगदान के लिए वह एक उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में जनमानस में सदैव उपस्थित रहेंगे। आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा की ज्योति जलाकर चौ. मित्रसेन सिन्धु ने जो कार्य किया है उसकी मिसाल मिलना संभव नहीं है। ऐसे महान दानी को हार्दिक श्रद्धांजलि।

ओ.पी. श्रीवास्तव सहारा इंडिया परिवार

चौ. मित्रसेन जी का निधन हम सबके लिये गहरे दुःख का विषय है, परंतु ईश्वर की माया ही सर्वोपरि है। उन्होंने अपने जीवन काल में समाज की जो सेवा की, गरीबों को शिक्षा, चिकित्सा एवं जीने का सहारा दिया, वो सदियों तक, पिता तुल्य याद आयेंगे। उन्होंने अपने पुत्रों को संस्कार दिये हैं, मुझे विश्वास है, वे बाबू जी की परम्परा को आगे बढ़ाते रहेंगे।

डॉ. चरण दास महंत सांसद, छत्तीसगढ़

चौ. मित्रसेन आर्य यज्ञ प्रेमी थे। उन्होंने कठिन परिश्रम से उद्योग जगत में बड़ा नाम अर्जित किया है। उड़ीसा, छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में उन्होंने गुरुकुल आदि खोलकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में अनुकरणीय योगदान दिया है। साहित्य प्रकाशन में भी उनकी विशेष रुचि रही। उद्योगपति होने के बाद भी उन्होंने कृषि से नाता नहीं तोड़ा। ऐसी महान आत्मा को नमन!

डॉ. रामप्रकाश सांसद, राज्य सभा

चौ. मित्रसेन आर्य एक महान व्यक्ति थे, जिन्होंने जीवनपर्यन्त समाज के उत्थान की दिशा में कार्य किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती के आदर्शों एवं शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने सदैव योगदान दिया। देश के सुदूर क्षेत्रों में आदिवासियों के कल्याण हेतु उनके द्वारा किए गए कार्य हमेशा याद किए जाएंगे। चौ. मित्रसेन जी का निधन मेरे लिए व्यक्तिगत क्षति है।

डॉ. योगानंद शास्त्री अध्यक्ष, दिल्ली विधानसभा

वे उदाहरणीय व्यक्तित्व एवं अपने आपमें एक संस्था थे। सद्चरित्रता, सभी को असीम दुलार देने का भाव व सबका ध्यान रखना उनकी प्रकृति में शामिल था। उन्होंने ये सभी संस्कार अपने पूरे परिवार को पूर्ण रूप से दिए। वे हमेशा कहते थे कि अच्छे समाज की शुरुआत हमेशा घर से ही होती है। मेरा उन्हें शत्-शत् नमन।

डॉ. बिजेन्द्र सिंह विधायक नांगलोई एवं चेयरमैन नैफेड, दिल्ली

चौ. मित्रसेन जी ने सादगी और बिना किसी स्वार्थ के समाजिक के कल्याण की भावना को जीवन का मूलमंत्र बनाकर जो महान योगदान सामाजिक और आर्य जगत में दिया, वो सदैव स्मरणीय रहेगा। शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए चौ. मित्रसेन जी ने हमेशा आगे बढ़कर योगदान दिया। ऐसे महान योगी को शत्-शत् नमन।

धर्मदेव सोलंकी विधायक, पालम-द्वारका, दिल्ली

चौ. मित्रसेन जी मन, वचन और कर्म से एक थे। उनसे जब भी मुलाकात होती तो यही सीख मिलती कि जीवन को दूसरों की भलाई के लिए जियो। हमेशा खुले हाथ से दान देने के लिए प्रसिद्ध रहे चौ. साहब के दरवाजे पर जो भी किसी उम्मीद से गया, खाली हाथ नहीं लौटा। उनके निधन से हुई क्षति की भरपाई तो नामुमकिन है।

राजेश गहलोत उप-महापौर, दिल्ली

चौधरी मित्रसेन ने अकेले ईमानदारी से सैकड़ों के बराबर पुरुषार्थ करके कठिनाइयों, सर्दी, गर्मी, आंधी, तूफान के थपेड़ों को सहन करते हुए न केवल अदम्य साहस का परिचय दिया, बल्कि दूसरों के प्रेरणास्रोत बन गए। चौधरी साहब समाज के प्रति समर्पित भाव से सेवा में भी जुटे रहे।

कृष्णा गहलोत पूर्व मंत्री, हरियाणा सरकार
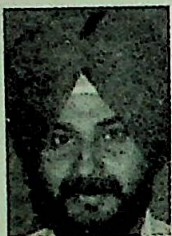
लक्ष्मी, शरीर, प्राण चलायमान है किन्तु धर्म स्थिर है। चौ. मित्रसेन आर्य जी ने सारा जीवन धर्म के आधार पर जिया। मैं पिताजी को शख्सियत के नाते नहीं, एक संस्था के नाते मानता हूं। शख्सियत में त्रुटियां होती हैं, परन्तु संस्था से पीढ़ियां दर पीढ़ियां शिक्षा ग्रहण करती हैं। कुछ लोग जी के मरते हैं, व कुछ लोग मरकर लोगों के हृदय में जीवनपर्यन्त जीते हैं।

नवजोत सिंह सिद्धू सांसद, भाजपा

मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः।
सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते।।
श्रद्धेय स्व. चौ. मित्रसेन आर्य जी का जीवन इसी श्लोक के अनुरूप था। उनके व्याक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, व्यावसायिक जीवन में इस श्लोक का प्रगटीकरण हुआ।

डॉ. कृष्ण कुमार बवेजा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, हरियाणा

मित्रसेन जी की मृत्यु पर मुझे गहरा अफसोस है। जैसा नाम था, वैसे ही गुण थे उनके। एक बार जब किसी से मिलते थे, उसके मित्र बन जाते थे। गरीबों के मसीहा थे वह। बिना मांगे हर किसी की मदद को तैयार रहते थे। उन जैसा कोई दूसरा नजर नहीं आता। भगवान उस पवित्रात्मा को अपने चरणों में स्थान दें।

विजय लक्ष्मी भादू समाज कल्याण बोर्ड, चण्डीगढ़

स्वर्गीय मित्रसेन जी अपने जीवन में सदा गरीब व्यक्तियों की सहायता कर व समाज सुधार के कार्य करके जगत में अपना नाम अमर कर गए। वर्तमान में ऐसी शख्सियतें बहुत कम देखने को मिलती हैं। उन्होंने अपना जीवन एक साधु की तरह जिया और हर जरूरतमंद के काम आए। ऐसी महान आत्मा को हृदय से नमन।

परमेन्द्र सिंह ढुल विधायक जुलाना, हरियाणा

चौ. मित्रसेन एक पवित्रहृदयी इंसान थे। उनके निधन से हमने एक महान कर्मयोगी को खो दिया है। वे धर्म व शिक्षा को समर्पित व्यक्तित्व थे। आर्य समाज के लिए उनके द्वारा किए गए प्रयास सराहनीय थे, वहीं आदिवासी क्षेत्रों में गुरुकुल शिक्षा की लौ जलाकर उन्होंने ज्ञान का वो प्रकाश फैलाया जो सदैव समाज को रोशन करता रहेगा। ऐसे महान कर्मयोगी को प्रणाम।

धर्मपाल मलिक पूर्व सांसद, सोनीपत

... विश्वास नहीं हो रहा कि इतने अच्छे स्वास्थ्य के मालिक चौधरी साहब नहीं रहे। ग्रामीण पृष्ठभूमि से उठकर सिर्फ मेहनत, ईमानदारी और लगन के बूते अपने और परिवार के लिए देश-विदेश में सुयश अर्जित किया। इतने बड़े उद्योगपति होने के बाद भी हमेशा समाज व धर्म के कार्यों में लीन रहे। दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि।

ले. जनरल राज कादयान सेवानिवृत्त
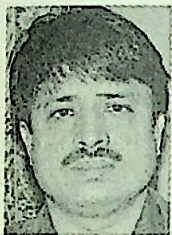
चौधरी मित्रसेन जी ने अपना जीवन उत्साह, आनन्द और निर्भीकता से जिया। कर्म के प्रति प्रबल आग्रह और आस्तिकता की पराकाष्ठा उनके जीवन के मूल आधार थे। आपने हर संबंध में ब्रह्म संबंध व हर रूप में ब्रह्म रूप देखा। आप गुरू व मार्गदर्शक के रूप में तो सदैव याद आते ही रहेंगे, 'मित्र' के रूप में भी आपकी कमी अपूर्णीय रहेगी।

डॉ. कुलबीर छिक्कारा समूह संपादक, हरिभूमि

चौ. मित्रसेन जी मेरे पिता समान थे। वह मेरे पिता ला. हुक्मचन्द गोयल जी के परम मित्र रहे। मित्रसेन जी आर्य को महान समाजसेवी के साथ-साथ साधु स्वभावी तथा दानवीर कहना अतिशयोक्ति न होगा। उन्होंने अपने परिवार को ही आर्य संस्कारी बनाया। एक आर्य सूर्य के अस्त होने पर देश को बहुत हानि हुई है।

सुभाष गोयल पूर्व मंत्री, हरियाणा सरकार

स्व. चौधरी मित्रसेन जी को मैं एक बार ही मिला, लेकिन पहली मुलाकात में ही उन्होंने इतना प्रभावित किया जितना आज तक कभी किसी से नहीं हुआ। उनमें एक विशेष तेज था, जो शायद उनकी सत्यता, समाज सेवा, वैदिक विचारों के प्रति निष्ठा के कारण ही होगा। ईश्वर उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान दें।

तीक्ष्ण सूद कैबिनेट मंत्री, पंजाब सरकार

चौ. मित्रसेन जी से कई बार मिलने का अवसर मिला। वह जिन्दादिल इंसान थे। समाज सेवा का उन्होंने अपने जीवन में जो बीड़ा उठाया था, वो महान था। हमेशा गरीबों व जरूरतमंदों की सहायता के विषय में भी बात करते थे। उनका प्रयास रहता था कि किसी को भी कोई परेशानी न हो। मैं उन्हें नमन करता हूं। हमारी स्मृतियों में वह हमेशा रहेंगे।

जयसिंह अग्रवाल विधायक कोरबा, छत्तीसगढ़

चौ. मित्रसेन जी ने हमेशा ही किसान-मजदूर व दलितों के उत्थान की आवाज को बुलन्द किया। उनके कार्यों, आदर्शों और विचारों को सदैव याद किया जायेगा। गुरुकुल खोलकर कन्या शिक्षा की जो लौ उन्होंने जलाई उसके लिए चौ. मित्रसेन को सदियों तक याद किया जाता रहेगा। हम भगवान से उनकी आत्मा की शान्ति की प्रार्थना करते हैं।

राज सिंह गहलोत **गुड़गांव**

चौ. मित्रसेन आर्य जी महर्षि दयानन्द के भक्त थे। एक साधारण परिवार में जन्म लेकर उन्होंने कठोर परिश्रम करके जीवन में आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक ऊंचाइयों को छुआ। अभिमान उनसे कोसों दूर था। वे हर सामाजिक कार्य के लिए उदारता से दान देते थे। उनके जाने से समाज को बड़ी हानि हुई है। मैं उनके चरणों में श्रद्धा सुमन भेंट करता हूं।

प्रो. वीरेन्द्र **राजनैतिक सलाहकार, मुख्यमंत्री, हरियाणा**

उन्हें देखने से ही आर्य दर्शन हो जाते थे। चौधरी मित्रसेन जी ने समाज से अज्ञानता और गरीबी मिटाने का जो बीड़ा उठाया, उसका दूसरा उदाहरण देखने को नहीं मिलता। उनके गरीबों एवं असहाय लोगों के हित में किए गए प्रयासों को कभी भुलाया नहीं जा सकता। वे सदैव सहायता के लिए तैयार रहते थे।

अत्तर सिंह सैनी **पूर्व मंत्री, हरियाणा सरकार**

चौ. मित्रसेन जी आर्य समाज के स्तंभ थे, जिनकी पूर्ति कभी संभव नहीं हो सकती। समाज के विकास व कन्या शिक्षा के लिए जो काम उन्होंने किए, कोई विरला ही कर सकता है। बनवासी क्षेत्रों में गुरुकुल खोलकर उन्होंने कन्या शिक्षा के लिए जो प्रयास किए उनका कोई सानी नहीं है। उनकी कमी हमेशा खलती रहेगी।

प्रसन्नी देवी **पूर्व मंत्री, हरियाणा सरकार**

भारत आर्य ऋषि-महर्षियों की पावन स्थली है। अनेक महापुरुषों ने इस पवित्र भूमि को अपने सात्विक आचरणों से सींचा है। इन विभूतियों की भांति आर्य जगत की महान विभूति चौ. मित्रसेन आर्य भी एक विलक्षण वैदिक व्यक्तित्व के रूप में जाने जाते रहे। उनका गुरुकुल शिक्षा पद्धति से बड़ा स्नेह रहा।

हरिसिंह सैनी **पूर्व मंत्री, हरियाणा सरकार**

चौधरी मित्रसेन आर्य जी ने अपनी मेहनत व लगन से बहुत ऊंचाइयां प्राप्त कीं। समाज में अपनी एक छाप छोड़ी। वे मेहनत के बल पर छोटे से किसान से देश के बड़े उद्योगपतियों में शुमार हो गए। आज जो उनका स्थान खाली हुआ है उसकी भरपाई नहीं हो सकती। भगवान से प्रार्थना करते हैं कि भगवान अपने चरणों में उनको स्थान दे।

चौ. चांदराम पूर्व विधायक, दिल्ली

वह एक ऐसे मनस्वी थे, जिन्होंने अपने कर्मबल से अपने निवास को किसी भी देवालय जितना पूज्य और पवित्र बना लिया था। जिस किसी ने भी उनके रोहतक स्थित निवास का भ्रमण किया, वह इस देवालय से कुछ न कुछ सीख कर गया। चौधरी साहब ने गृहस्थ जीवन में रहते हुए तपस्वी का जीवन जिया।

डॉ. हिमांशु द्विवेदी प्रबंध संपादक, हरिभूमि

चौ. मित्रसेन जी सही मायने में आर्यसमाजी थे। उनके गरीबों और असहाय लोगों के हित में किए गए प्रयास को कभी भुलाया नहीं जा सकता। युगों-युगों तक उनको याद किया जायेगा। चौ. साहब ने कभी भी धन का अभिमान नहीं किया। वे सदैव गरीब व जरूरतमंद की सहायता के लिए तैयार रहते थे।

किशन सिंह सांगवान पूर्व सांसद, सोनीपत

चौधरी साहब एक महान कर्मयोगी दानी व दरियादिल इंसान थे। जिन्होंने जीवन भर समाज की सेवा की। वे आने वाली पीढ़ियों के लिए एक आदर्श रहेंगे। लोग उन्हें हमेशा उनकी सादगी, त्याग, सिद्धांतों, लगन, मेहनत व दरियादिली के कारण याद रखेंगे। मैं सपरिवार भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें अपने चरणों में स्थान दें।

रणबीर सिंह महेन्द्रा पूर्व चेयरमैन, बीसीसीआई

समाज ने एक निष्ठावान, ऊर्जावान, समाजसेवी को खो दिया है। चौ. मित्रसेन जी के जाने से पूरे देश, हरियाणा प्रदेश को अपूरणीय क्षति हुई है, जिसकी भरपाई आने वाले वर्षों में होनी कठिन है। वे एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूर्ण संस्था थे जो सदैव गरीब एवं आदिवासियों के उत्थान में लगी रहती थी। इन्हीं कर्मों के कारण उन्हें सदैव याद किया जाता रहेगा।

खजान सिंह आर्य जुआं, सोनीपत

चौ. मित्रसेन जी के स्वर्गवास से मुझे व्यक्तिगत रूप से बड़ा आघात लगा। चौ. साहब सच्चे कर्त्तव्यनिष्ठ, धर्मपरायण, वैदिक धर्मावलम्बी एवं पुरुषार्थी व्यक्ति थे। वे हमेशा चरित्र, मेहनत का महत्व समझाते थे। उनका व्यक्तित्व आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बना रहेगा। ऐसे महामना को हार्दिक श्रद्धांजलि।

प्रो. बलवीर आचार्य **संस्कृत विभाग, महर्षि दयानंद विवि, रोहतक**

चौधरी मित्रसेन आर्य जी बेहद सहज, सरल और नाम को सार्थक करने वाले सभी के मित्र थे। संघर्षों और तमाम विषम परिस्थितियों के बीच वह जिस मुकाम पर पहुंचे, वो सभी के लिए अनुकरणीय है। वह सभी के लिए प्रकाशपुंज की तरह थे। उनका जीवन स्वयंसिद्ध था। उनसे मिलकर जो ज्ञान मिलता था, वो दुनिया की हर पूंजी से कहीं कीमती है।

ओमकार चौधरी **हरिभूमि, रोहतक**

उनका आर्य समाज के प्रचार व प्रसार में दिया गया योगदान हमेशा याद किया जाता रहेगा। चौ. मित्रसेन जी के सामाजिक कार्यों को कभी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने अपनी संतान में भी अपने जैसे सद्गुण दिए। उनके रोहतक स्थित सिन्धु भवन में आकर मंदिर का अहसास होता है। यहां निर्मित यज्ञशाला मन मोह लेती है।

घनश्याम सर्राफ **विधायक भिवानी, हरियाणा**

चौ. मित्रसेन जी ने साधारण से काम से लेकर उद्योगपति तक का जो सफर तय किया, उसका कोई सानी नहीं है। वे एक आदर्श समाजसेवी थे, वे एक आदर्श पिता थे। उनके पास उम्मीद लेकर आया कोई भी इंसान कभी निराश नहीं लौटा। वे हमेशा समाज, देश के बारे में ही बात करते थे। अपने सद्कर्मों के कारण चौ. मित्रसेन अमर रहेंगे।

आनंद सिंह दांगी **विधायक महम, हरियाणा**

चौ. मित्रसेन जी ने अपना जीवन सादगी से बिताया। सुबह व शाम अपने निवास पर हवन यज्ञ का आयोजन करना उनकी दिनचर्या में शामिल था। उन्होंने अपने परिवार को भी यही संस्कार दिए। वे हमेशा कहते थे कि समाज सुधार की पहल घर से ही होती है, अगर परिवार सही होगा तो समाज उत्तम होगा।

आनंद शर्मा **विधायक फरीदाबाद, हरियाणा**

उन्होंने समाज के लिए जो किया उसका कोई सानी नहीं और उसकी किसी से तुलना नहीं की जा सकती। वे हमेशा गरीबों और जरूरतमंदों की सहायता निस्वार्थ करते रहे। आज के युग में ऐसे प्राणी विरले ही मिलते हैं। हमें उनके कार्य से प्रेरणा लेकर समाज की भलाई के कार्य करने चाहिए। यही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

स्वामी कर्णपुरी **डेरा बाबा बालक पुरी जी, रोहतक**

चौ. साहब का ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्री शिक्षा के प्रति योगदान अद्वितीय है। उन्हें जो भी जरूरतमंद सुपात्र मिला उन्होंने उसकी दिल खोल कर मदद की। हमारे परिवार पर तो उनका विशेष स्नेह बरसता था। आप समाज के अच्छे आदमियों के बीच सेतु का काम करते थे। आपको शत् शत् नमन।

डा. हवा सिंह **कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र**

चौ. साहब स्वामी दयानन्द के अनन्य भक्त थे। आप में सामाजिक संगठन की अद्वितीय क्षमता थी। आप ऐसे कर्मयोगी थे जिसने गरीब व जरूरतमंद लोगों की दिल खोलकर मदद की। सामाजिक जीवन में जो उच्च आदर्श आपने स्थापित किए वे विरले ही प्राप्त कर पाते हैं। हमारे वैदिक संस्कृति केंद्र की ओर से आपको शत् शत् नमन।

श्री अमर ऐरी **अध्यक्ष, आर्य समाज, टोरंटो, कनाडा।**

उनसे मिलने मात्र से ही परेशानियां दूर हो जाती थीं। मैं जब दुःखी होता था या फिर कोई भी संकट आता था तो सीधा उनसे मिलता। उनसे मिलने के बाद ऐसा लगता था कि मानो कोई समस्या हो ही न। लेकिन अब मैं खुद को असहाय, अनाथ महसूस कर रहा हूं। मुझे आशा ही नहीं विश्वास है कि उनका आशीर्वाद मुझ पर बना रहेगा।

सुभाष श्योराण **निदेशक, इंडस शिक्षण संस्थान, जींद**

आज जब व्यक्तिवादी सोच बढ़ रही है,अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए समाज-देश के हित कोई मायने नहीं रखते, सभी उस अंधी गली की ओर बढ़ रहे हैं, जहां पहुंचकर अपना पतन ही होना है, ऐसे में चौधरी मित्रसेनजी के जीवन-मूल्य हमारे लिए एक ज्योतिपुंज की तरह हैं। उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि हम उनके आदर्शों को अमल में लाएं।

नरेंद्र निर्मल **फीचर सम्पादक, हरिभूमि**

आप देश में आर्य समाज के मुख्य स्तम्भ थे। पता नहीं आपके जाने से हुई रिक्तता की भरपाई कैसे हो पाएगी। चरित्रबल से दुनिया में सफलता व आध्यात्मिक उपलब्धि प्राप्त करना कोई आप से सीखे। मेरे लिए चौधरी साहब लंबे समय तक प्रेरणास्रोत रहे। आप जैसे व्यक्तित्व सामाजिक आभूषण होते हैं।

डॉ. सत्यपाल **आईपीएस. पुलिस कमिश्नर (प्रशासन) मुम्बई।**

चौधरी साहब ने तमाम उम्र गरीब व आमजन का भला किया। उनके प्रयासों से ही छतीसगढ़ जैसे पिछड़े प्रदेश में शिक्षा का विकास हो सका। उनके द्वारा किए गए काम हमेशा प्रेरणा देते रहेंगे। चौ. मित्रसेन जी युवा पीढ़ी के लिए मिसाल थे। हमें उनके आदर्शों का अनुसरण करना चाहिए। यही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

डॉ. जसवंत सिंह **पूर्व विधायक, हरियाणा**

... समाज एक आदर्शवादी, प्रेरणादायक, यथार्थवादी, सिद्धांतवादी, चरित्रवान, नेकदिल, सच्चे, ईमानदार, गरीब व जरूरतमंद के हितैषी, दानी व कर्मयोगी से महरूम हो गया है। ऐसे व्यक्ति के चले जाने से जो रिक्तता आई है उसकी भरपाई कर पाना कठिन होगा। ऐसे कर्मयोगी को कोटि-कोटि प्रणाम।

ओमप्रकाश बेरी **पूर्व विधायक, हरियाणा**

चौधरी साहब किसान वर्ग में पैदा हुए थे। वह आज के नौजवानों के लिये पथ-प्रदर्शक व प्रेरणा के स्रोत हैं। मैं समस्त हरियाणा ग्रामीण बैंक परिवार की ओर से चौ. साहब को नमन करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मेरी भगवान से प्रार्थना है कि वह उनके परिवार को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

आई. एस. फोगाट **चेयरमैन, हरियाणा ग्रामीण बैंक**

चौ. मित्रसेन आर्य एक राजनेता न होने के बावजूद एक सफल नीति निर्धारक रहे। चौधरी साहब की सोच आर्थिक, सामाजिक, औद्योगिक व समाज से भटके हुए युवाओं को सही रास्ते पर लाने की थी। उन्होंने आर्य समाज के सिद्धांतों का प्रचार करके युवाओं को बुराइयों से दूर रखा। हम प्रयास करेंगे कि उनका अनुसरण करें।

श्रवण कुमार **हिसार**

मैं चौधरी मित्रसेन के सरल स्वभाव, मुस्कुराता चेहरा, सिद्धांत और व्यवहार सबका कायल था। मित्रसेन जी को चाहने वालों को अपने स्नेहिल व्यवहार से बांधकर रखने में महारथ हासिल था। उन्होंने अपने परिवार को संस्कार दिए, जो आज देखे, सुने व पाए नहीं जाते। मंत्रोच्चार के स्वर सिन्धु भवन में अकसर गूंजते हैं, जो उस मंदिर को और भी आभा प्रदान करते थे।

राजबीर देसवाल आईपीएस, हरियाणा

जिसके पास धन होता है, वही पंडित, विद्वान्, उत्तमवेत्ता और दर्शनीय माना जाता है, परंतु कुछ अपवाद भी होते हैं। चौ. मित्रसेन उन्हीं महापुरुषों में से थे, जिन्हें पुरुषार्थ से लक्ष्मी की कृपा प्राप्त हुई, लेकिन वे लक्ष्मी के स्वामी विष्णु को नहीं भूले और न ही कभी उनकी गर्दन अकड़ी। जनहित एवं आध्यात्मिकता उनके जीवन के अंग रहे।

स्वामी देवव्रत अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य वीर दल

चौ. मित्रसेन जी एक दिव्य आत्मा, पुण्य आत्मा व आलौकिक आत्मा थे। साथ ही वे एक महान कर्मयोगी, सदाचारी, शील, आर्य समाज के स्तम्भ, दानवीर, गोभक्त, रामभक्त व युग पुरुष थे। प्रभु के चरणों में लीन ऐसे महान योगी द्वारा किए गए समाजसेवा व धर्म के कार्य सदैव प्रेरणा देते रहेंगे।

रणधीर सिंह कापड़ीवास, रेवाड़ी

चौ. मित्रसेन एक समाज सुधारक एवं कर्मयोगी थे। हमेशा गरीबों की सेवा को तैयार रहते थे। उनके पास उम्मीद लेकर गया कोई भी व्यक्ति निराश नहीं लौटा। ऐसे महान कर्मयोगी का जाना एक परिवार ही नहीं बल्कि पूरे समाज की क्षति है। उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलकर ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सकती है।

शशिपाल मेहता पूर्व मंत्री, हरियाणा सरकार

चौ. मित्रसेन जी ने अपना सारा जीवन गरीबों के उत्थान तथा आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में लगा दिया। हमेशा सच्ची व खरी बात कहना उनका स्वभाव था, उन्हें क्रोध कभी छू भी नहीं पाया। वे सदा मुस्कुराते रहते थें और उनकी मुस्कुराहट जीवन जीने की कला सिखाती थी। वे युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा के स्त्रोत थे।

डॉ. संजय अत्री चेयरमैन, आयुर्वेदिक बोर्ड, हरियाणाा।

इस संसार में दो तरह के व्यक्ति होते हैं। पहले, जो गीली लकड़ी की तरह धुंआ देकर समाज, जीवन तथा स्वयं को प्रदूषित करते हैं। द्वितीय श्रेणी के वे महान पुरुष जो प्रकाशस्तंभ बनकर प्रकाश देते हैं। स्व. मित्रसेन जी दूसरी श्रेणी के महान पुरुषों में से थे। उनका जीवन त्रिवेणी का संगम था। कर्म, ज्ञान, हरि की त्रिवेणी की एक अजस्त्र धारा थे। ऐसे योगी को शत्-शत् नमन।

नंद किशोर गोयंका **समाजसेवी एवं गो-भक्त, हिसार**

चौधरी मित्रसेन आर्य जी मेरे पूरे परिवार के पथ प्रदर्शक, संबल रहे। वह गृहस्थ होते हुए महान तपस्वी, समाजसेवी, दीन-हीनों विशेषकर आदिवासियों की सेवा में लगे रहे। उनके जैसा दानी व्यक्ति दूसरा कोई नजर नहीं आता। भगवान उनकी आत्मा को शांति दे व परिवार को इस क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

धर्मपाल मलिक **पूर्व निदेशक, आकाशवाणी, रोहतक**

सामाजिक कार्यों के लिए उन्हें हमेशा याद किया जाता रहेगा। चौ. मित्रसेन ने सादगी से अपना जीवन बिताया और जनकल्याण के कार्यों से वे कभी पीछे नहीं हटे। वे हमेशा कहते थे भगवान ने जो दिया है वो सबके लिए है। मैं किसी की सहायता करके कोई अहसान नहीं करता। ऐसे महान दानी को शत्-शत् नमन।

डॉ. खजान सिंह सांगवान **पूर्व खेल निदेशक एमडीयू, रोहतक**

ईश्वरविश्वासी और आशावादी चौ. मित्रसेन आर्य ने उद्योग अर्थात् पुरुषार्थ पर अत्यधिक ध्यान दिया, व्यापारादि की निरन्तर वृद्धि की। लेखनी और वाणी उनका सम्पूर्ण चित्रण नहीं कर सकती। जैसे परमात्मा के लिए कहा गया है- 'स्वयं तदन्तः करणेन गृह्णाते', उसी प्रकार चौ. मित्रसेन के पुरुषार्थ और तपस्या एवं उसके प्रतिफल को प्रत्यक्ष अवलोकन किया जा सकता है।

वेदव्रत शास्त्री **प्रधान गुरुकुल, झज्जर**

चौ. मित्रसेन जी समाज कल्याण व देशहित कार्य के लिए सदैव तत्पर रहते थे। सरलता, सहजता एवं सर्वहित उनका शुद्ध आचरण था। मानवीय गुणों एवं धार्मिक आचरण से भरपूर दानवीर चौ. मित्रसेन आर्य जी का निधन समाज के लिए एक बहुत बड़ी और अपूर्णीय क्षति है। वे अपने गुणों के कारण लोगों के दिलों में हमेशा जिंदा रहेंगे।

जनार्दन शर्मा **सचिव, यूथ हॉस्टल एसोसिएशन ऑफ इंडिया, रोहतक**

चौ. साहब के जीवन से यज्ञ की सुगंध आया करती थी। वे कहते थे जीवन के आध्यात्मिक, अधिभौतिक, अधिदैविक दुःखों का नाश, परमात्मा के श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ से दूर होता है। इसलिए जीवन में दैनिक यज्ञ के अलावा बड़े-बड़े यज्ञ आयोजित करना, यज्ञ करने से परमात्मा के आनन्द की प्राप्ति होगी।

यशपाल आर्य एडवोकेट राष्ट्रीय सचिव, दहेज विरोधी सभा

चौ. मित्रसेन जी एक युगपुरुष एवं पक्के समाजसेवी थे। समाज सदा उनको याद रखेगा। उनके द्वारा धर्म के प्रचार के लिए किए गए प्रयास नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। वे सदैव महर्षि दयानन्द जी के आदर्शों पर चले और सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत किया। उनके कदमों पर चलना ही इस महान आत्मा को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

इन्द्र सिंह नैन पूर्व विधायक, हरियाणा

चौ. मित्रसेन जी सच्चे आर्य, एक महान समाजसेवी तथा दानी पुरुष थे। वे हमेशा जरूरतमंदों एवं गरीबों की सहायता के लिए तत्पर रहते थे। उन्होंने कभी यश व मान की कामना नहीं की। समाज को उनकी मृत्यु पर बड़ी क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति कर पाना संभव नहीं है। भगवान उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

श्रीकृष्ण हुड्डा प्रधान हुड्डा खाप, हरियाणा

चौ. मित्रसेन जी ने समाज कल्याण के कार्यों में कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनके पास जो भी व्यक्ति सहायता मांगने आया, उन्होंने उसकी हर संभव मदद कर लौटाया। यही कारण रहा कि हर जरूरतमंद उन पर अपना अधिकार समझता था और किसी भी परेशानी में चौधरी साहब के पास बिना किसी हिचक के चला आता था।

संपूर्ण सिंह शांति सेना प्रमुख, हरियाणा

श्री मित्रसेन आर्य एक समाज सुधारक थे। उन्होंने अपना जीवन समाज व गरीबों को उन्नति की ओर ले जाने में बिता दिया। चौ. साहब समाज के लिए एक आदर्श पुरुष थे, जिन्होंने हमेशा महर्षि दयानन्द के आदर्शों पर अटल रहकर युवा पीढ़ी को सिखाया कि जीवन के संघर्ष में भी इंसान को धर्म का साथ नहीं छोड़ना चाहिए। देश उन्हें हमेशा याद रखेगा।

कृष्णमूर्ति हुड्डा पूर्व मंत्री, हरियाणा सरकार

... एक ऐसे महान पुरुष, जो सारी उम्र समाजसेवा के कार्य में लगे रहे, उनके अचानक जाने से समाज को बहुत बड़ी कमी का अहसास रहेगा। मेरा उनसे बहुत लंबे समय तक सहयोग रहा है। वे हमेशा देश व समाज की बात करते थे। कभी उन्हें किसी की अलोचना करते नहीं देखा। वे धन का सदुपयोग करना जानते थे।

डा. चांद सिंह ढुल पीजीआईएमएस, रोहतक

चौ. मित्रसेन जी ने एक आदर्श जीवन जिया। सदैव वैदिक जीवन मूल्यों का पालन किया। अपनी मेहनत से धनकुबेर बने और गरीबों का संरक्षण किया। इतना वैभव आने के बाद भी घमंड उन्हें छू नहीं पाया। वे हमेशा कहते थे कि मेहनत से बड़ा पुण्य कोई नहीं है। यह एक ऐसा खजाना है जो कभी भी व्यर्थ नहीं जाता।

मेजर करतार सिंह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, हरियाणा

पारंपरिक मर्यादाओं एवं नये दृष्टिकोण का अद्‌भुत सामंजस्य मित्रसेन जी में था। नई पीढ़ियों को उनके इस संतुलन से सीख लेनी चाहिए एवं मूल्यों की महत्ता समझते हुए समाज को और मजबूत करना चाहिए। चौ. मित्रसेन ने हमेशा मेल-मिलाप, एकजुटता से रहने का संदेश दिया। हम उनके आदर्शों पर चलकर ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं।

पी.सी. मीणा आईएएस, डीसी, रोहतक

शिक्षा और विशेषकर पत्रकारिता के विकास के लिए उन्होंने जो काम किया, उन्हें उसके लिए हमेशा याद किया जाता रहेगा। वे हमेशा निष्पक्ष रहते थे और सभी को यही संदेश देते थे कि हर व्यक्ति को सत्य बोलना चाहिए। सत्य बोलने से बड़ा कोई पुण्य नहीं है। सच बोलकर ही इंसान महान बनता है। ऐसे महान योगी को भुला पाना संभव नहीं है।

प्रो. हरीश कुमार एमडीयू, रोहतक

चौधरी मित्रसेन जी को 2006 जून मास में राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के राष्ट्रीय सत्र उद्‌घाटन अवसर पर देखा था। वे आर्य समाज व आर्य सिद्धांतों तथा संस्थाओं के प्रति सजग-सावधान सहयोगी रहे। कभी नाम व पद की लालसा नहीं रही। ऐसे महान व्यक्तित्व का जाना बहुत बड़ी क्षति है। उनके वंशजों से उन्नति की आशा व विश्वास है।

आचार्य हनुमत्प्रसाद 'अथर्व वेदाचार्य' आर्य निर्मात्री सभा, दिल्ली

हम सबको मित्रसेन जी के शुभ गुणों, शुभकर्मों का स्मरण करते हुए उनके बताए पथ पर चलना चाहिए। जो मार्ग चौ. मित्रसेन जी ने चुना था, वही सभ्य समाज, खुशहाल राष्ट्र के निर्माण का सरल व सुगम रास्ता है। उन्होंने युवा पीढ़ी को आगे बढ़कर रास्ता दिखाया। आओ मिलकर उनके दिखाए मार्ग पर कदम बढ़ाएं।

आर्य वेदपाल आर्य स्वाभिमान, हरियाणा

चौधरी मित्रसेन जी आर्य समाज के कर्णधार रहे, मित्रसेन जी सादगी और सच्चाई के प्रेरक पुंज थे। उनका निधन स्वयं मेरे व समाज के लिए बहुत बड़ी क्षति है। परमपिता परमेश्वर उनकी आत्मा को शक्ति प्रदान करे और उनके परिजनों को इस असीम दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

धर्मपाल धनखड़ कार्यकारी संपादक, हरियाणा न्यूज, दिल्ली

चौ. मित्रसेन जी वैदिक सिद्धांत के प्रति समर्पित एक महान व्यक्तित्व थे। उन्होंने वैदिक सिद्धांतों व रीति-नीति के प्रचार-प्रसार हेतु तो बहुत बड़ा योगदान दिया ही, अपितु इन्हीं सिद्धांतों को अपने परिवार व जीवन में भी उतारकर यह दिखा दिया कि परिवार व रोजमर्रा के संघर्ष में भी सिद्धांतों को कैसे बरकरार रखा जा सकता है। ऐसे कर्मयोगी को नमन।

सुमेर सिंह प्रधान रोघी खाप, हिसार

देश के बड़े उद्योगपतियों में शुमार होते हुए भी चौ. मित्रसेन जी की सादगी एक मिसाल थी। उनके पास जाने व बात करने से न केवल शांति मिलती थी बल्कि उनके निवास को देखकर देवालय का अहसास होता था। आराम को हराम ही नहीं, अपराध मानते थे। वे कहते थे कि मेहनत से ही आगे बढ़ा जा सकता है और कर्म ही सबसे बड़ी पूजा है।

सत्यपाल श्योराण हरिभूमि, हिसार

मुझे जब भी समय मिलता या किसी काम में मन न लगता तो उनके पास जाकर बैठ जाता, मन को बड़ा सुकुन मिलता। ऐसा प्रतीत होता मानो ज्ञान के सागर से दो बूंद मुझे भी मिल गई हों। उनके दर्शन मात्र से ही ईश दर्शन की अनुभूति होती थी। उनके साथ बिताए गए हर क्षण मेरे लिए यादगार रहेंगे। ऐसे युगपुरुष एवं राष्ट्रपुरुष को कोटि-कोटि नमन।

यशवीर राघव प्रवक्ता भाजपा युवा मोर्चा, हरियाणा

चौ. मित्रसेन जी बहुत ही दानशील, नम्र विचार एवं दया की साक्षात मूर्ति थे। वे हर जरूरतमंद व गरीब की सहायता को तत्पर रहते थे। धर्म के कार्यों में उनका विशेष लगाव था। उन्होंने आर्य समाज के सिद्धांतों को अपने जीवन में ढाला। उनके जाने से आर्यजगत की जो क्षति हुई, उसकी पूर्ति नहीं की जा सकती। परमात्मा उनको अपने चरणों में स्थान दें।

राव हरिश्चंद्र नागपुर

एक बार मैं चौधरी साहब के निमंत्रण पर रोहतक आया। तब मेरी धर्मपत्नी शन्नोदेवी ने मित्रसेन जी से पूछा, 'आप बड़बिल (उड़ीसा) में व्यावसायिक कार्य से रहते हैं। इतने विशाल परिवार की सारी व्यवस्था कैसे होती है।' तब उन्होंने कहा, 'मैंने अपने बच्चों को कभी उपदेश नहीं दिया। मेरी जीवन-प्रणाली ही उनके लिए मेरा संदेश है।

डॉ. प्रियव्रत दास शहीदनगर, भुवनेश्वर, उड़ीसा

मित्रसेन जी आर्य बहुत ही परिश्रम, परित्याग एवं ऊंचे चरित्र के कारण जीवन के जीवट संघर्ष को पार करके उन्नति के शिखर को प्राप्त कर पाए। हमारी मित्रता में हिंदी आंदोलन से आर्य जी की मृत्युपर्यन्त कभी भी कोई शैथल्य नहीं आया। मित्रसेन जी आर्य पथप्रदर्शक, संघर्षशील एवं इस युग के दानशील पुरोधा थे।

पूर्णसिंह आर्य सैनीपुरा, रोहतक

भारतीय संस्कृति के संवाहक चौ. मित्रसेन जी को भारतवर्ष सदियों तक भुला न पाएगा। आधुनिक समय में ऋषितुल्य जीवन जीने वाले महामना चौ. मित्रसेन जी आर्य की विशेषता को शब्दशः बयां करना मेरे बस की बात नहीं। उनके बारे में जो कुछ भी कहा व लिखा जाए, सब सूर्य को दीपक दिखाने के समान होगा। ऐसे महान कर्मयोगी को शत्-शत् नमन।

पं. बद्री प्रसाद आर्य वै.म.सा. आश्रम, रोहतक

चौ. मित्रसेन जी से मेरा संपर्क 1970 में हुआ। उस समय मैंने उनका मॉडल टाउन में मकान बनाया था। इसके बाद मुझे दूसरी जगह काम करने की जरूरत ही नहीं पड़ी। हमारा आपसी तालमेल ऐसा बना कि वे जाते-जाते भी मुझे अपने खांडाखेड़ी निवास का जिम्मा सौंपकर गए हैं। रोहतक के सेक्टर-14 के निवास का निर्माण कार्य उन्होंने मेरे से ही करवाया था।

स. दर्शन सिंह राज मिस्त्री, रोहतक

चौधरी मित्रसेन जी एक व्यक्ति होने के साथ-साथ संस्था भी थे। जिस प्रकार कुन्दन अपने स्पर्श से दूसरे को चमका देता है, उसी प्रकार चौधरी साहब ने जिस संस्था को स्पर्श किया, जिसका भी भविष्य अपने हाथ में लेते, वो निखर और दमक उठता था। ऐसे महान व्यक्तित्व का चला जाना बड़ी क्षति है, जिसकी पूर्ति कर पाना संभव नहीं है।

आचार्य कर्मवीर बिलासपुर, छत्तीसगढ़

चौ. मित्रसेन आर्य जी का जीवन पूरे समाज के प्रति प्रेरणा दायक था। उनके जीवन के आदर्श, ईमानदारी व निष्ठा हमें मार्गदर्शन देते रहेंगे। उनके जीवन की सुगंध समाज को सदैव सुगंधित रखेगी। ऐसी महान आत्मा को शत् शत् नमन।

मनमोहन गोयल रोहतक

चौ. मित्रसेन आर्य पूरे समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत थे। ऐसे व्यक्ति समाज में कभी-कभी ही जन्म लेते हैं। उनका व्यक्तित्व हमेशा चमकता रहेगा। उनके जाने से पूरे समाज और क्षेत्र को क्षति हुई है। सबके रिक्त हुए स्थान की पूर्ति करना संभव नहीं है। परमात्मा उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

डा. रघबीर सिंह कादियान विधायक, हलका बेरी
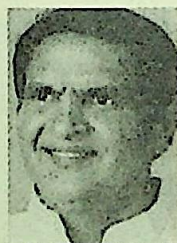
श्री मित्रसेन आर्य ने हमेशा वैदिक पथ पर चलते हुए समाज में व्याप्त विभिन्न सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जन मानस में चेतना जागृत कर समाज व देश के पुनः उत्थान के लिए संकल्पबद्ध होकर प्रयास किया। उनके इसी प्रयास का परिणाम है कि समाज के एक बड़े वर्ग को शिक्षा व रोजगार के अवसर मिले हैं।

डॉ. योगानंद शास्त्री विधानसभा अध्यक्ष, दिल्ली

चौ. मित्रसेन जी ने शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए काफी सराहनीय कार्य किया। जाट शिक्षण संस्थान के उत्थान में उन्होंने अद्वितीय योगदान दिया। वे समाज कल्याण के कार्यों में भी पीछे नहीं रहे। देश के इतने बड़े उद्योगपति होने के बावजूद उनका स्वभाव अत्यंत सादगी भरा था। वे हर किसी को अपने स्नेहिल व्यवहार के कारण अपना बना लेते थे।

चौ. उदय सिंह मान पूर्व विधायक, पंजाब

चौ. मित्रसेन जी समाज के सच्चे पथ प्रदर्शक थे। उन्होंने सारा जीवन अपने से कमजोर वर्ग की सच्चे दिल से सेवा की और अपनी नेक कमाई को ही उन्होंने बरकत का साधन बताया। वे सदा मेहनत व लगन से कार्य करने की प्रेरणा देते थे। उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके दिखाए मार्ग पर चलें।

सुरेंद्र सिंह बरवाला पूर्व सांसद, हरियाणा

चौ. मित्रसेन जी समाज की विचारधारा के एक पुरोधा पुरुष थे। उन्होंने अपने जीवन को शुद्ध सात्विक रखते हुए उच्च आदर्शों की स्थापना की। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जिसमें समाज, राजनीति, पत्रकारिता, उद्यम व उद्योग शामिल हैं, अपनी अलग पहचान बनाकर एक मिसाल स्थापित की तथा परिवार व समाज को एक दिशा दी। उन्हें बार-बार नमन।

एस.पी. दहिया पूर्व अध्यक्ष, हरियाणा मिनस्ट्रियल कॉरपोरेशन, नारनौल

स्वर्गीय चौधरी मित्रसेन जी, मेरे 40 वर्षों के जीवन में मिलने वाले सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति थे। मैंने ऐसा कोई दूसरा व्यक्ति नहीं देखा, जो सदैव गरीबों और जरूरतमंदों के बारे में ही सोचता रहता हो। ऐसे व्यक्ति के चले जाने से खाली हुए स्थान की पूर्ति नहीं की जा सकती। ऐसी महान आत्मा को कोटि-कोटि प्रणाम।

जवाहर यादव पूर्व प्रदेशाध्यक्ष, भाजपा युवा मोर्चा, हरियाणा

वे एक महान समाज सुधारक एवं मानव सेवा को समर्पित थे। आर्य एवं भारत के समाज से सरोकार रखने वाले एक महान सपूत के दिवंगत होने से देश और समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। जिसे पूरा कर पाना संभव नहीं है। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनको अपने चरणों में स्थान दे एवं उनकी आत्मा को परम शांति मिले।

डॉ. उज्ज्वला पुत्री प्रो. शेरसिंह, पूर्व केन्द्रीय राज्यमंत्री

गरीबों के मसीहा, देश सेवा की भावना और समाज के उत्थान की सोच रखने वाली उस महान आत्मा 'चौ. मित्रसेन जी आर्य' को शत्-शत् नमन। भगवान महाबीर जी से प्रार्थना, उस महान व विरली आत्मा को मानव जाति की भलाई के लिए पुनः धरती पर अवतरित करें, ताकि समाज का कल्याण हो सके।

सतीश जैन युवा मंत्र दिगम्बर जैन, जीन्द

चौधरी मित्रसेन का जीवन सादगी, संजीदगी से भरा हुआ था। वह एक आर्य समाजी के अलावा सामाजिक व्यक्ति थे। उनका जीवन न केवल परिवार बल्कि पूरे समाज के लिए था। वे हमेशा गरीबों व जरूरतमंदों की सहायता करने के लिए तैयार रहते थे। चौ. मित्रसेन का निधन केवल उनके परिवार ही नहीं बल्कि पूरे समाज की हानि है।

इन्द्र सिंह ढुल पूर्व चेयरमैन, एचएएससी

चौधरी साहब हमारे समाज के पथ प्रदर्शक एवं अच्छे संस्कार दिखाने वाले सदात्मा थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन आर्य समाज के सिद्धान्तों पर चलकर जिया। कभी दुरभावना को पास नहीं आने दिया। हमें पहले भी उनसे प्रेरणा मिली और आगे भी प्रेरणा मिलती रहेगी। हम उनकी आत्मा की शान्ति की प्रार्थना करते हैं।

ए.के. मलिक एक्सिएन, कुरुक्षेत्र

चौ. मित्रसेन जी गुरू के साथ-साथ मेरे बड़े भाई जैसे थे। मैंने आपसे 1962 में वर्कशॉप रोहतक में कार्य करना सीखा। वे एक बात कहते थे कि किसी गलत व्यक्ति या गंदे व्यक्ति को सम्बोधित करते समय गंदा नहीं बोलना चाहिये, गाली नहीं देनी चाहिये। आप उसे सिर्फ कमजोर कह दें, काम चल जाएगा।

देवदत्त खांडेवाला हांसी, हरियाणा

चौ. मित्रसेन जी से मेरा परिचय वर्ष 1953 से हुआ। जब वे गुरुकुल झज्जर के सुधाकर मासिक पत्रिका के पाठक बने। धीरे-धीरे हमारा रिश्ता गहरी दोस्ती में बदलता गया। मित्रसेन जी जहां भी, जिस भी क्षेत्र में गए उन्होंने अपने व्यक्तित्व की विशेष पहचान छोड़ी। अपने विशेष स्वभाव व सिद्धांतों के कारण चौ. मित्रसेन को चिरकाल तक स्मरण किया जाता रहेगा।

वेदव्रत शास्त्री सम्पादक, सर्वहितकारी, रोहतक

दुर्लभ कृतियों को बचाने के लिए चौधरी मित्रसेन जी ने जो काम किया, इतिहास में ऐसा कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिल सकता। उन्होंने ऐसी कृतियों को संवारा, जो सामान्यतः से दिखाई नहीं देती थीं और हमारी संस्कृति की झलक पेश करती थीं। उनके द्वारा किए गए कार्य कभी भुलाए नहीं जा सकेंगे। ऐसे महान संत को कोटि-कोटि प्रणाम।

चन्द्रप्रकाश भाटिया पूर्व विधायक, हरियाणा

चौ. मित्रसेन आर्य जी से एक बार प्रिंसिपल हुकम सिंह के साथ उनके डी पार्क स्थित पुराने घर पर मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। उसी दिन से यह लगा कि चौधरी साहब का जीवन एक स्रोत है, जिस पर चलने से जीवन सफल हो जाता है। ईश्वर हम सबको उनका अनुसरण करने की शक्ति प्रदान करें।

हरस्वरूप चहल कुलपति, दीनबंधु छोटू राम विश्वविद्यालय, मुरथल

सादा जीवन व्यतीत करके महान विचारक, दानवीर, परिश्रम के पूज्य चौ. मित्रसेन सिन्धु साहब के अविस्मरणीय क्षण हमें सदैव प्रेरित करते रहेंगे। उनके संदेश जीवन जीने की कला सिखाते हैं। हे प्रभो! आप उनको फिर इसी देश में पुनर्जन्म दें, ताकि हमारा भारत फिर उनकी त्याग भावना से लाभान्वित हो सके।

डॉ. स्वतंत्रानन्द शास्त्री मुंडका, दिल्ली

चौधरी मित्रसेन एक सच्चे दार्शनिक, विचारक, कर्मठ, दानवीर, सतत् कर्मशील, समाजसेवी, गरीबों के प्रति दयालु, एक दिव्य व्यक्तित्व के धनी और साधु भावों से ओत-प्रोत थे। उनके निधन से समाज को बहुत बड़ा आघात पहुंचा है, जिसकी क्षति-पूर्ति असम्भव है। उनका जीवन दर्शन हम सबके लिए प्रेरणास्रोत है।

महेन्द्र सिंह धनखड़ स्पेशल ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट, रोहतक

चौधरी मित्रसेन जी महान आत्मा थे, वे महान दानी-ज्ञानी थे। उन्होंने सदैव गरीबों की मदद की। वे वेद के अनुयायी और महर्षि दयानंद के शिष्य थे। उन्होंने आर्य समाज के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार करके समाज से बुराइयों को दूर किया और युवा पीढ़ी को दुराचारों से दूर रहने का संदेश दिया। ऐसे महान संत को कोटि-कोटि प्रणाम।

जगबीर सिंह हुड्डा भजनोपदेशक

चौधरी साहब मेरे सदा हितैषी रहे। उन्होंने बहुजन हिताय:, बहुजन सुखाय: के उद्देश्य से जनता की सेवा की, जिससे आने वाली पीढ़ी को नई सीख मिलती रहेगी। उनके देहांत से मुझे ही नहीं पूरे समाज में दुःख की लहर है। उनके जाने से जो स्थान रिक्त हुआ है उसकी भरपाई कर पाना संभव नहीं है। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति दे।

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती पातजन्य योगाश्रम फलोदी, जोधपुर

चौ. मित्रसेन आर्य जी भारतीय सभ्यता एवं आर्य समाज के एक मजबूत स्तम्भ थे, ऐसे विरले सपूत भारत मां की गोद से कभी-कभी ही जन्म लेते हैं। उनकी कार्यशैली, सिद्धांत एवं उनके द्वारा स्थापित जीवन मूल्य लंबे समय तक याद किए जाते रहेंगे।

डॉ. के सी बांगड़ पूर्व अध्यक्ष, हरियाणा लोक सेवा आयोग

चौधरी साहब का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे प्रत्येक आयाम में सर्वश्रेष्ठ थे, ऐसा मेरा मानना है। उनके निधन से सम्पूर्ण प्रान्त की हानि तो है ही, रोहतकवासियों की दुनिया ही सूनी हो गयी है। वे शहर के हर गरीब व जरूरतमंद की मदद को तैयार रहते थे। शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान अनुकरणीय है।

डॉ. अरुण कुमार जैन हिन्दू कॉलेज, रोहतक

परम श्रद्धेय चौ. मित्रसेन जी वास्तव में समाज के एक स्तम्भ थे, जिनकी पूर्ति सम्भवतः असंभव है। विचार, चिंतन, नीयत, नियति और सामाजिक न्याय उनके आन्तरिक एवं बाहरी व्यक्तित्व का हिस्सा थे। नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के पुरोधा सेतु थे मित्रसेन जी। ऐसे तेजस्वी संत को कोटि-कोटि प्रणाम।

देवराज सिरोहीवाल रेडियो लेखक, जीन्द

अथर्ववेद की सूक्ति, 'हे मानव! तू सैकड़ों हाथों से कमा तथा हजारों हाथों से बांट।' को वास्तव में चौधरी मित्रसेन ने चरितार्थ किया। उन्होंने अकेले अपने पुरुषार्थ के बल पर भीषण कठिनाइयों को सहन करते हुए अदम्य साहस का परिचय दिया। सर्वगुणसम्पन्न चौधरी मित्रसेन आर्य समाज के प्रति समर्पित भाव से सेवा में हमेशा जुटे रहे।

पं. सत्यपाल 'पथिक' गोकुल नगर, अमृतसर

श्रेष्ठ कार्यों में मांगने पर सहायता देने वाले अनेक व्यक्ति हैं, किन्तु बिना किसी याचना के वेद, वेदांत, भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए स्वतः हाथ बढ़ाकर और वह भी बिना किसी यश व पद की चाह के दान देने वाले व्यक्ति चौ. मित्रसेन के समान ढूंढ़ना मुश्किल है। दान की प्रवृत्ति में कर्ण से बढ़कर महापुरुष के महाप्रयाण से अपूरणीय क्षति हुई है।

डॉ. वेदपाल अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, ज.वै.का. बडौत

प्रमुख आर्य समाजी चौ. मित्रसेन जी अपने सामाजिक कार्यों के लिए हमेशा याद किए जाते रहेंगे। उन्होंने समाज के कमजोर, दबे-कुचले लोगों के उत्थान के लिए जो किया, वो हम सबके लिए प्रेरणादायक है। वे हमेशा समाज में एकजुटता की बात करते थे। ऐसे महान योगी सदैव याद किए जाते रहेंगे।

बजरंग दास गर्ग **अध्यक्ष, हरियाणा प्रदेश व्यापार मंडल**

चौ. मित्रसेन जी ऐसे इंसान थे कि अगर उन्हें दस साल बाद भी अपनी गलती के बारे में पता लगता था तो वे तुरंत स्वीकार कर लेते थे। हमेशा इस बात का ध्यान रखते थे कि उनकी किसी भी बात का किसी को बुरा न लगे। हमेशा कहते थे कि सादगी, शांत स्वभाव और ईमानदारी इंसान के गहने होते हैं। इसे हर व्यक्ति को अपने पास रखना चाहिए।

राजबीर वर्मा **रोहतक**
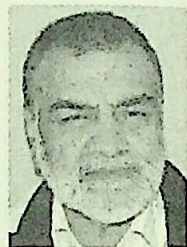
चौधरी साहब ने तमाम उम्र गरीब और आमजन का हित सोचा। उनके प्रयासों ने छत्तीसगढ़ जैसे पिछड़े प्रदेश में शिक्षा के विकास में बहुत सहयोग किया। उनके द्वारा आमजन की भलाई के लिए किए गए काम हमेशा प्रेरणा देते रहेंगे। चौ. मित्रसेन जी युवा पीढ़ी के लिए एक मिसाल थे। उन्होंने युवाओं को आगे बढ़ाने के लिए शिक्षा की लौ जलाई।

वेदपाल आर्य **नेशनल चेयरमैन, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी**

चौ. मित्रसेन आर्य जी समाज, राष्ट्र के नेता थे, अपने जीवन में जो सेवाएं उन्होंने समाज और कौम को दीं, वे हमेशा याद रखी जाएंगी। चौधरी साहब ने अपने परिवार के रूप में जो नर्सरी तैयार की है वो देश की सेवा में हितकारी रहेगी।

उदय सिंह दलाल **पूर्व विधायक**
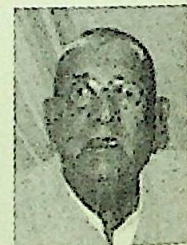
चौ. मित्रसेन जी सदैव ईमानदारी के रास्ते पर चलने की प्रेरणा देते थे। मेरे साथ अंतिम बातचीत में उन्होंने कहा था कि जीवन संघर्ष का नाम है। जो व्यक्ति साहस और निडर से संकटों का सामना करता है विजय उसी की होती है। उनके संग बिताया हर पल अपने आप में यादगार धरोहर है। भगवान से प्रार्थना है कि उन्हें अपने श्रीचरणों में स्थान दें।

राजपाल **चेयरमैन, वैंकटेश इंटरनेशनल स्कूल**

परम आदरणीय मित्रसेन जी एक महान विभूति थे, जिन्होंने समाज के लिये अपना तन, मन, धन सब कुछ लगा दिया। वे हमेशा समाज के उत्थान के लिए प्रयासरत रहते थे। कितनी भी व्यस्तता हो कभी भी सामाजिक कार्यक्रम में आने से नहीं चूकते थे। हम स्वर्गवासी आत्मा के मोक्ष की कामना करते हैं।

डॉ. जितेन्द्र सिंह राष्ट्रीय अध्यक्ष, महाराजा सूरजमल फाउंडेशन

चौ. मित्रसेन आर्य जी का जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिये सदैव प्रेरणास्रोत रहेगा। उनका महान व्यक्तित्व विपरीत परिस्थितियों में भी सदैव समाज व राष्ट्र के प्रति समर्पित रहेगा। ऐसे युगपुरुष कभी-कभी धरा पर जन्म लेते हैं। भगवान से यही प्रर्थना है कि वे पुनः श्रेष्ठ कुल में जन्म लेकर भारत भूमि को गौरवान्वित करें।

रामचन्द्र जांगड़ा प्रदेश उपाध्यक्ष, भाजपा, हरियाणा

मैं जिन्दगी में अनेक महान इंसानों से मिला हूं, परन्तु जितनी स्वच्छ, सुन्दर एवं परोपकारी आत्मा के दर्शन मैंने चौ. मित्रसेन में किये, शायद ही अब तक कहीं किये हों। उनकी आंखों के इलाज का सुअवसर मिला तथा अनेक बार उनसे मंत्रणा भी हुई। वे हमेशा मानवता की चिन्ता करते थे। प्रभु से यही प्रर्थना है कि उन्हें अपने चरणों में स्थान दें।

डॉ. मारकन्डे आहुजा बाबा मस्तनाथ कॉलेज, रोहतक

माननीय चौधरी मित्रसेन जी के निधन से सारे समाज व राष्ट्र की जो क्षति हुई है, वह अपूरणीय है। उन्होंने जो समाज की सेवा तन, मन, धन से की उसकी कोई और तुलना नहीं की जा सकती। वे युवा पीढ़ी के लिए हमेशा प्ररेणास्त्रोत बने रहेंगे। परमात्मा उनकी आत्मा को अपने चरणों में निवास दें।

नन्द कुमार कॉम्बोज प्रधान नगर परिषद, जगधारी

आज हमने अपने समय के एक भगवान रूपी इन्सान को खो दिया है, जिनकी पूर्ति कभी नहीं हो पायेगी। वे सदैव गरीब व जरूरतमंद की सहायता में लीन रहते थे। उन्होंने उड़ीसा के आदिवासी क्षेत्रों में कन्या शिक्षा के लिए जो गुरुकुल व्यवस्था की वह अपने-आपमें में एक मिसाल है। ऐसी महान आत्मा को मेरा शत्-शत् प्रणाम।

शेर बहादुर मिश्रा रोहिणी, दिल्ली

सरलता-सादगी के प्रतिमूर्ति चौधरी मित्रसेन जी का जीवन खुली किताब की भांति रहा। अत्यंत पुरुषार्थ तपस्या, त्याग से युक्त चौधरी साहब वनवासी क्षेत्रों में जहां साधनों का अभाव था, वहां पर निर्धन, निर्बल और भोले-भाले लोगों के बीच जाकर परोपकार करके अनेक प्रकार के साधन-सुविधाएं उनको प्रदान करते थे।

आर. एल. बत्रा रोहतक

श्री मित्रसेन आर्य एक समर्पित और निष्ठावान उद्यमी रहे, साथ ही वह स्वामी दयानन्द के अनन्य भक्त रहे। इनमें लक्ष्मी के साथ सरस्वती का मेल मणिकांचन योग ही कहा जाएगा। आधी शताब्दी तक जनमानस से जुड़कर निःस्वार्थ समाज सेवा, ऋषि-ऋण से उऋण होने की अदम्य कामना वाले व्यक्ति विरले ही होते हैं।

प्रो. कैलाशनाथ सिंह प्रधान, आर्य सभा, लखनऊ

चौ. मित्रसेन आर्य जी कर्म से सच्चे आर्य रहे हैं। वे उच्चकोटि के समाजसेवी, देश प्रेमी, एक श्रेष्ठ उद्यमी एवं विचारक थे। एक मर्यादा पुरुषोतम रहे हैं वे। उनको पांच अ -अभाव, अशिक्षा, अज्ञानता, आलस्य एवं अकर्मण्यता से सख्त नफरत थी। वे इन अवगुणों को देश की प्रगति में सबसे बड़ा बाधक मानते थे।

डॉ. धर्मबीर ढिल्लो अध्यक्ष, मास्टर एथलेक्टिस फैडरेशन ऑफ इंडिया

चौधरी साहब के चेहरे की आभा किसी भी आगन्तुक को अपनेपन की झलक देती थी। वे वास्तव में सौम्यता, सादगी के प्रतीक थे। हर जरूरतमंद की सेवा करना वे अपना धर्म समझते थे। उन्हें कभी भी नाम व पद की चाह नहीं रही। हमेशा निःस्वार्थ सेवा में विश्वास रखते थे। उनकी कमी समाज के लिए बहुत बड़ी क्षति है।

भलेराम आर्य आर्य समाज सांघी, रोहतक

वास्तव में उनका जीवन श्लाघनीय है। वे दानवीर, सच्चे तपस्वी, कर्मशील, आर्यसमाजी थे। उन्होंने अपना जीवन वेदानुकूल पद्धति पर चलाया। वे गरीबों के मसीहा थे। शिक्षा जगत के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने अनेक शिक्षण संस्थाएं व गुरुकुल खुलवाए। युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत रहे। चौ. मित्रसेन का नाम सदा अमर रहेगा।

दया आर्या पंतजलि योग समिति, रोहतक

चौ. मित्रसेन जी विरल व्यक्तित्व के स्वामी थे। जो भी उनसे मिला, उनका हो गया। उन्होंने निष्काम कर्मयोगी की तरह जीवन व्यतीत किया। निष्ठावान, निरन्तर कर्म, सकारात्मक सोच, संघर्ष के बीच धैर्य रखना आदि उनकी कार्यशैली के तत्व थे। वे सदैव गरीबों की सहायता को तैयार रहते थे। ऐसे कर्मयोगी को शत्-शत् नमन।

प्रदीप जैन भाजपा जिलाध्यक्ष, रोहतक

चौ. मित्रसेन जी एक कर्मयोगी एवं स्वामी दयानंद के दिखाए रास्ते पर चलने वाले सच्चे व्यक्ति थे। वे हमेशा सत्य व पुरुषार्थ में विश्वास करते थे। उनका कहना था कि पुरुषार्थ ही सबसे बड़ा कर्म है। ये एक ऐसा पुण्य कार्य है जिसका फल अवश्य मिलता है। चौ. मित्रसेन के यह उपदेश युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं।

डॉ. सोमवीर सिंह राठी प्रधान, मदवि शिक्षक संघ, रोहतक

चौ. मित्रसेन आर्य ने अपने परिवार को न केवल उच्च शिक्षा प्रदान की बल्कि उनमें सामाजिक और धार्मिक कार्यों में भाग लेने की प्रेरणा दी। चौधरी साहब के घर जाकर देवालय का अहसास होता है। ऐसी महान कर्मयोगी का जाना पूरे देश के लिए आघात है। उनके निधन से आई रिक्तता की भरपाई कर पाने में बहुत समय लगेगा।

मनजीत सिंह दहिया प्रदेशाध्यक्ष, अंबेडकर संघर्ष समिति, हरियाणा

चौ. मित्रसेन सिन्धु एक कर्मयोगी, मूर्धन्य आर्य समाजी, वैदिकपथ प्रणेता थे तथा श्रेष्ठ कार्यों के लिए दानवीर थे। हर जरूरतमंद की सहायता के लिए हमेशा तैयार रहते थे। उनके निधन से अनेक गरीब, अनाथ, आदिवासी तथा कमजोर वर्ग के लोगों की भारी क्षति हुई है, जिसकी भरपाई कर पाना असंभव है।

भोपाल सिंह सेवानिवृत्त मुख्याध्यापक, रोहतक

वे बहुत ही मिलनसार स्वभाव के व्यक्ति थे। वे समाज और देश को भी उन्नति के शिखर पर देखना चाहते थे। आर्य समाज के कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे। समाज को इनके आकस्मिक निधन से बहुत बड़ी हानि हुई है। सिन्धु परिवार से ये कामना करते हैं कि वे अपने पिता के अधूरे कार्यों को पूरा करें और सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते रहें।

आर्य वीरेन्द्र पहलवान प्रधान, आर्य समाज छारा, हरियाणा
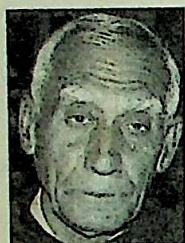
स्वर्गीय चौ. मित्रसेन जी कर्मठ, कर्मयोगी पुरुष थे। उनका सारा जीवन संघर्षमय रहा। देश के उच्च कोटि के उद्योगपति होते हुए भी वे अत्यंत साधारण जीवन जीते थे। जीवन भर वह सबके हितैषी रहे। किसी को भी निराश नहीं किया और न ही धोखा दिया। ऐसे महापुरुषों का कभी-कभी ही जन्म होता है। उन्हें नमन।

ओ. पी. भारद्वाज **पूर्व मंत्री, हरियाणा सरकार**

वे बहुप्रतिष्ठित व्यक्तित्व और न्यायवादी, उदारवादी एवं दानवीर थे। उन्होंने अपने जीवन में सफल उद्योगपति का स्थान प्राप्त किया। हमारे परिवार से उनका दो पीढ़ी का सम्बन्ध था। इसी कारण मुझे उनका सान्निध्य प्राप्त करने का मौका मिलता रहा। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनको अपने चरणों में वास दें।

प्रीतम सिंह बलहारा **अध्यक्ष, जिला कांग्रेस कमेटी, रोहतक**

चौ. मित्रसेन जी एक महात्मा व आर्य समाज के स्तंभ थे। जो हमेशा समाज एवं धर्म के कार्यों में लीन रहते थे। उन्होंने अपना जीवन समाज को समर्पित कर दिया था। उनके निधन से समाज को बहुत बड़ी हानि हुई है। जिसको पूरा नहीं किया जा सकता। परमात्मा उस आत्मा को अपने चरणों में स्थान दें।

डॉ. गजानंद वर्मा **राष्ट्रीय अध्यक्ष, अंबेडकर समिति, हरियाणा**

वे एक महान पुरुष थे। आगे आने वाली पीढ़ियां उन्हें एक समाजसेवी संत के रूप में याद करेंगी। मैंने अपने जीवन में इतना दानी और प्यार देने वाला मानव कभी नहीं देखा। जो निःस्वार्थ भाव से हमेशा गरीबों एवं जरूरतमंदों की सहायता करने में आनंद का अनुभव करता हो। भगवान उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

सुलोचना गुलिया **कारपोरेट मेंबर भारत स्वाभिमान समिति, दिल्ली**

चौ. मित्रसेन देशभक्त होने के साथ-साथ समाजसेवी भी थे। उन्होंने बहुत सामाजिक कार्यों मे हिस्सा लेकर दिखा दिया कि दौलत सामाजिक कार्यों से नहीं रोक सकती। वे ईमानदारी और शराफत की मूर्ति थे। वे हमेशा कहते थे कि ईमानदारी सबसे बड़ी पूंजी है। जिसके पास भी यह पूंजी है वह दुनिया का सबसे अमीर व्यक्ति कहलाने का हकदार है।

पूर्णचंद आजाद **पूर्व विधायक, स्वतंत्रता सेनानी**

चौ. मित्रसेन जी एक सच्चे समाजसेवी थे, उनकी कमी सदा के लिए समाज को अखरती रहेगी। वे एक व्यक्ति नहीं बल्कि अपने आप में संस्था थे और संस्था भी ऐसी जो हमेशा गरीबों एवं जरूरतमंदों की सहायता के लिए तत्पर रहती थी। उनके निधन से समाज को बड़ी हानि हुई है। जिसकी पूर्ति कर पाना संभव नहीं।

सुरेन्द्र मोहन शर्मा **पूर्व अध्यक्ष, जिला युवा कांग्रेस कमेटी, रोहतक**

चौ. मित्रसेन महान विचारक एवं सच्चे समाजसेवक, कट्टर आर्यसामाजिक प्रवृत्ति के थे। वे हमेशा आर्य समाज के सिद्धान्तों पर चलते थे। उन्होंने आने वाली पीढ़ी को दिखाया कि जीवन के संघर्षों के बीच सिद्धान्तों पर अमल कैसे किया जा सकता है और यही सिद्धान्त एक कारण थे, जिससे चौधरी साहब के चेहरे पर सदैव मुस्कान रहती थी।

राजकुमार श्योराण **हैबतपुर, जिला हिसार**

चौ. मित्रसेन आर्य जी ने समाज व देश की उन्नति में अथक प्रयास किया। उन्होंने न केवल आदिवासी क्षेत्रों में कन्या गुरुकुल शिक्षा शुरू करके ज्ञान की ज्योति जलाई, बल्कि आदिवासियों के उत्थान के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं भी शुरू कीं। ऐसी महान आत्मा के जाने से समाज को भारी क्षति हुई है।

जगदीश खिडवाली **प्रधान गऊशाला, खिडवली**

चौ. मित्रसेन आर्य जी समाज की एक महान विभूति थे तथा गरीब व जरूरतमंद के सच्चे सहयोगी रहे। आदिवासी क्षेत्रों में उन्होंने जो ज्ञान की लौ जलाई। उस लौ से लाखों लोगों का जीवन प्रकाशमान हो गया व अत्यंत पिछड़े क्षेत्रों में लोगों ने कन्या शिक्षा की महत्ता को जाना। ऐसी महान विभूति को कोटि-कोटि प्रणाम।

आचार्य यशपाल **चेयरमैन गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार**

चौ. मित्रसेन सिन्धु एक महान व्यक्ति थे । उन्होने अपना सारा जीवन समाज के उत्थान के लिये लगा रखा था। वे सच्चे कर्मयोगी एवं सन्त थे। प्रभु के प्रति उनकी सच्ची लगन थी। वे हमेशा आर्य समाज के सिद्धान्तों पर ही अमल करते थे। भगवान उनके परिजनो एवं समस्त परिचितों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

संजय राठी **अध्यक्ष, हरियाणा जर्नलिस्ट्स यूनियन**

शुचिता से सदा जिया जीवन

अनुकूल वेद की शिक्षा के शुचिता से सदा जिया जीवन,
हे आर्यश्रेष्ठ श्री मित्रसेन स्वीकार करो शत्-शत् वन्दन।

तन-मन-धन संस्कारित करने ऋषि उपदेशों का बल पाया,
अपने विवेक और पुरुषार्थ का जीवन में प्रतिफल पाया।

प्रायः जन क्षणभंगुर जग में बस जीते हैं और मरते हैं,
पर आप सदृश जीने वाले मरकर भी नहीं मरते हैं।

नश्वर काया यद्यपि न रही पर यशकाया तो जीवित है,
उसकी आभा से आर्यजनों का गुण-गौरव संदीपित है।

हे दान-सिन्धु, हे आप्तकाम, हे मृदुभाषी नयनाभिराम,
हे सत्प्रेरक पुरुषार्थधाम, स्वीकार करो अन्तिम प्रणाम।

डा. सुरेन्द्र कुमार
प्रो. संस्कृत विभाग, मदवि, रोहतक

पिता जी के अस्वस्थ होने के कारण पिछले तीन माह से दिन रात मं उनके साथ रहा। शरीर की पीड़ा कभी उन्होंने चेहरे पर नहीं आने दी आर हर मिलने वाले एवं परिवार के सदस्यों को कहते थे कि मं ठीक हूं। इतनी कमजोरी के बावजूद उनकी आलस्य रहित दिनचर्या व समय के प्रति पाबंदी को देख मुझे आश्चर्य होता था। वे पहले की तरह इस दारान भी जोश से भरे व निर्भय रहे। वे अपने सभी कर्मचारियों से भी दिल से जुड़े हुए थे। वे किसी को छोटा बड़ा न समझकर सभी को अपना सहयोगी समझते थे। पिता जी द्वारा सिखाया गया संयम व धर्य मं जीवनपर्यन्त निभाने का प्रयत्न करूंगा। पिता जी के साथ इन दिनों मुझे जो अनुभव हुए हं, वे मुझे जिंदगी भर याद रहेंगे।

सौरभ सिन्धु
पौत्र

अमर रहेंगे हमारे पिता जी

हमारे परिवार के लिए यह दुःख और कष्ट का समय है। इससे उबरना बहुत चुनौतीपूर्ण है, लेकिन हमारे पास रास्ता है। पिता जी दुनिया की सबसे पवित्र आत्मा हैं। वे बाह्य एवं आंतरिक रूप से भी अनुपम सुदर्शन व्यक्तिव के धनी हैं।

मैं थे की जगह हैं का प्रयोग कर रही हूं। यही सबसे बड़ी चुनौती है-पूरे संसार के समक्ष यह साबित करने के लिए कि पिता हमारे बीच ही हैं और अमर रहेंगे। हमें पिता जी को अपने विचारों, व्यवहार और मानवीय मूल्यों में अपनाना होगा ताकि जब लोग हमसे मिलें तो कहें कि ये तो मित्रसेन जी के शब्द हैं, जो हम सुन रहे हैं। यह मित्रसेन जी का स्वप्न था, जो उनके बेटे, बेटियां और अगली पीढ़ी पूरा करेंगे। हम उनके रक्त के अंश हैं, जिसे हमसे कोई नहीं ले सकता। हम परमात्मा के आभारी हैं, जिन्होंने हमें मित्रसेन जी का साथ और सत्संग दिया। इसी के साथ हमारे ऊपर एक बड़ी जिम्मेदारी और चुनौती आ जाती है।

हमें मानसिक रूप से मजबूत होना होगा और पिताजी के नाम को ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए परिश्रम करना होगा ताकि हम चौधरी मित्रसेन जी को अमर बना सकें। हमें अपनी क्षमता के अनुसार मित्रसेन जी की आत्मा को अपनी सांसों में बसाना होगा ताकि वे इस संसार में अमर रहें। यह हमारा संकल्प है कि पिता जी अमर रहेंगे-उन्हें भूलने नहीं देंगे। हम हर संभव प्रयास करेंगे ताकि दुनिया को दिखा सकें कि पिता जी हमारी सोच में, हमारी आत्मा में, हमारे हर कार्य में हैं और हमारे हर आदर्श और मूल्य में उनकी छाप है।

सुभाष चन्द्र जी अपने ह्रदय से एक बार पत्र में लिखा था-

सब कुछ खत्म हो जाता है, लेकिन विचार, आदर्श और स्वप्न कभी नहीं मरते।

-सुरभि, सुपौत्री, स्व. चौ. मित्रसेन आर्य

(चौ. मित्रसेन जी के निधन के दिन अमेरिका से सभी परिजनों को भेजा गया मेल)

चौधरी मित्रसेन आर्य के जीवन-दर्शन के आधार सूत्र

हम सब एक-दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें। इस भाव से ही मनुष्य व समाज का कल्याण होगा।

हमें हर कार्य करने से पहले यह जांच लेना चाहिए कि क्या इसे करने से सबका हित होगा या नहीं। यदि व्यक्तिगत रूप से लाभ देते हुए भी कोई कार्य समाज के लिए अहितकारी है तो उसे नहीं करना चाहिए।

जो मनुष्य आस्तिक है, वह जीवन में भीषणतम संकटों के सामने भी निराशा का शिकार नहीं हो सकता।

आलस्य से बड़ा मनुष्य का कोई शत्रु नहीं है। आलसी व्यक्ति ईश्वरीय सत्ता का तिरस्कार तो करता ही है, अपने अमूल्य जीवन को भी गंवाता है।

मनुष्य जो भी काम करें, यदि वो सर्वहित की भावना व सहर्ष परिश्रम के साथ किया जाए तो ईश्वर उसका सुफल देता है।

संस्कार ही वास्तविक संपत्ति है। अपनी संतान को हम धन-दौलत देने से ज्यादा इस बात का ध्यान करें कि हम उन्हें संस्कारों के रूप में क्या दे रहे हैं।

किसी भी व्यक्ति को उसके धन या पद के आधार पर मत आंको। व्यक्ति का मूल्यांकन करते समय उसके गुण, कर्म व स्वभाव को सर्वोपरि मानो।

चित्रमय स्मृतियां
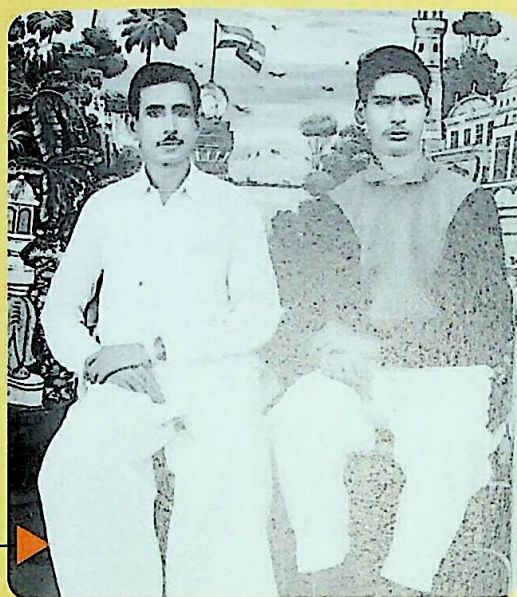
उड़ीसा के बड़बिल में सन 1962 में चौ. मित्रसेन आर्य अपने साले सतबीर के साथ
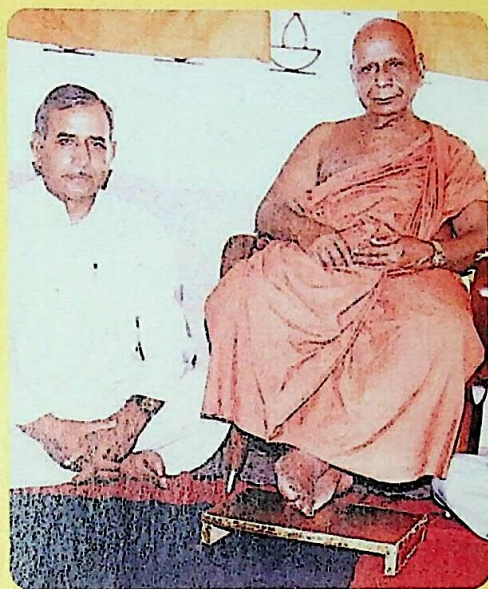
स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती के सान्निध्य में बैठकर प्रवचन सुनते हुए चौ. मित्रसेन आर्य
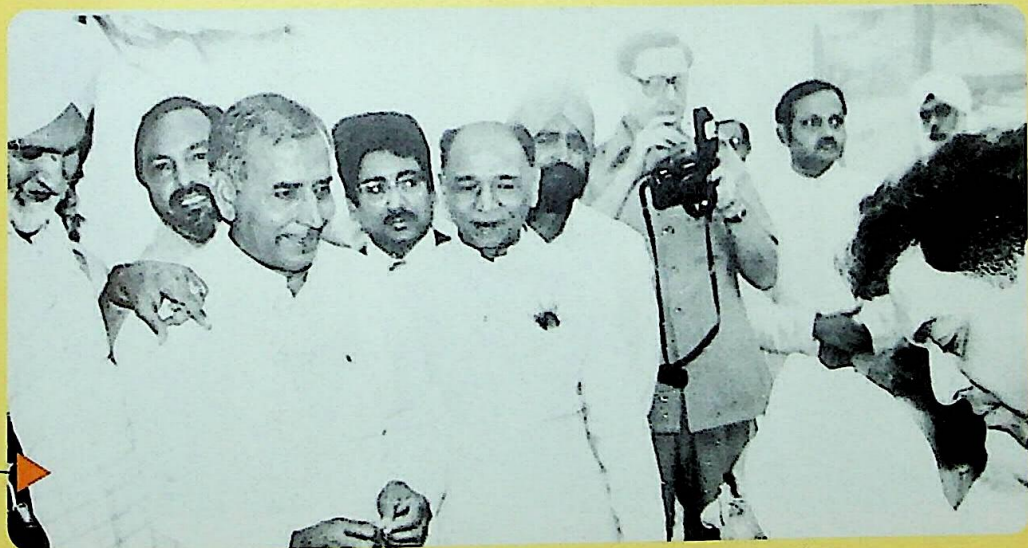
उड़ीसा में तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह से प्रतिनिधि मंडल के साथ बातचीत करते हुए चौधरी मित्रसेन आर्य
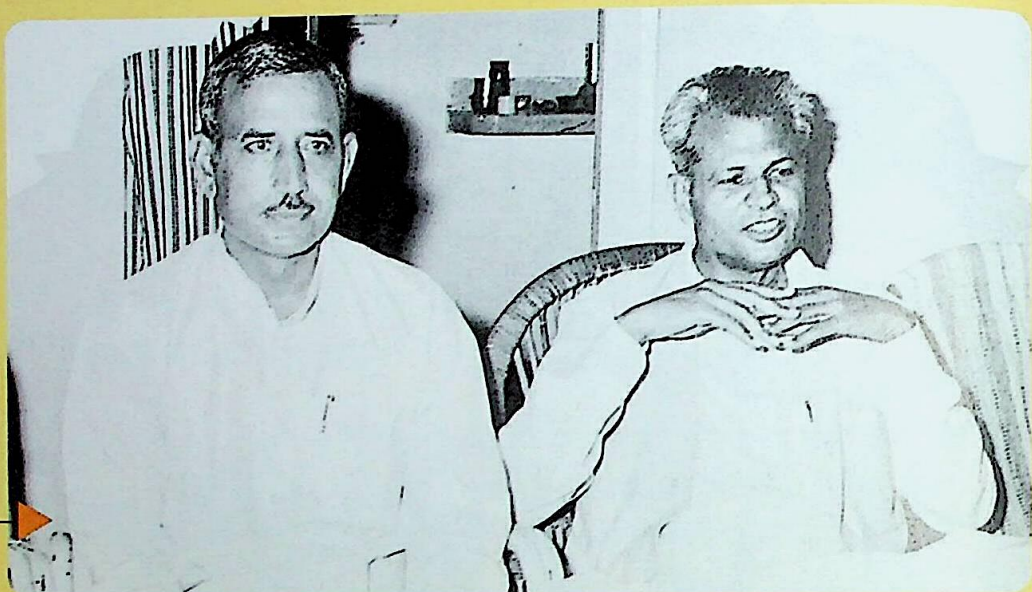
एक विवाह कार्यक्रम में तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री चौधरी दलबीर सिंह के साथ चौ. मित्रसेन आर्य

बेटी दयावती की शादी में गांव से आए परिवार के सदस्य

छत्तीसगढ़ के रायपुर में हरिभूमि के लोकार्पण अवसर पर चौ. मित्रसेन आर्य व अन्य अतिथि
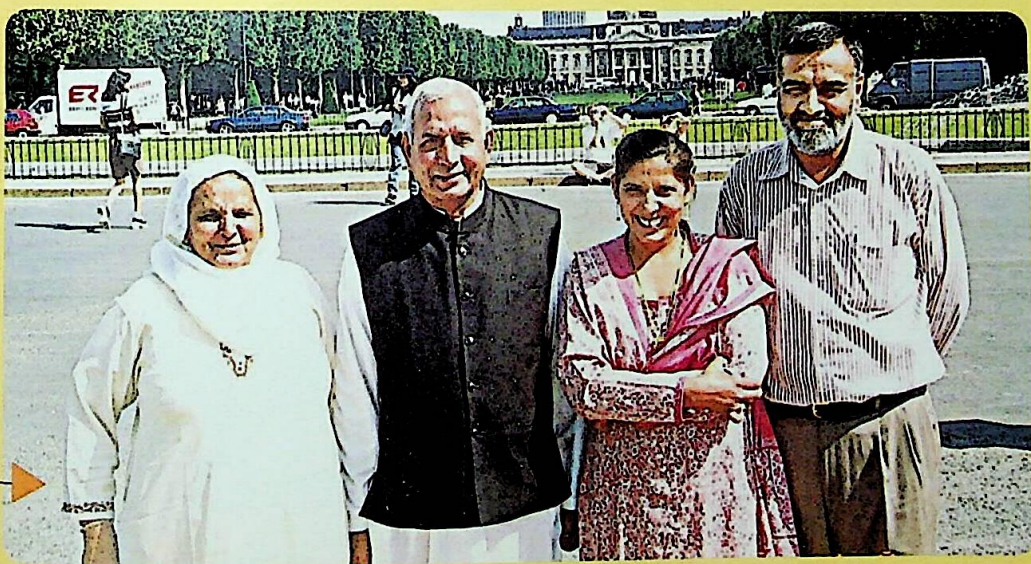
विदेश यात्रा के दौरान माता परमेश्वरी देवी, बेटी दयावती, दामाद राजबीर वर्मा के साथ चौ. मित्रसेन आर्य

शादी की 50वीं वर्षगांठ पर माता परमेश्वरी देवी चौधरी मित्रसेन आर्य को फूलमाला पहनाते हुए
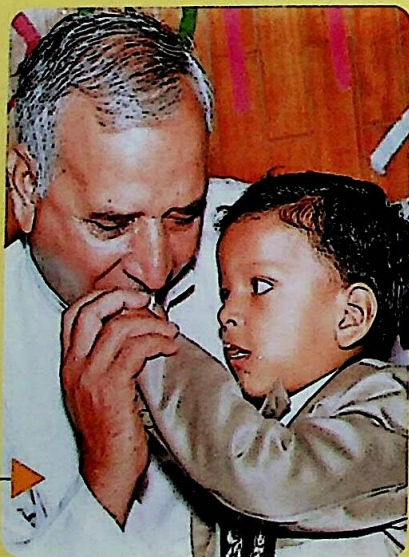
अपने पौत्रों को स्नेहपूर्ण खिलाते हुए चौधरी साहब

आध्यात्मिक गुरू श्री श्री रविशंकर का एक कार्यक्रम में स्वागत करते हुए चौ. मित्रसेन आर्य

अमृत महोत्सव के अवसर पर महंत चांदनाथ चौधरी साहब का स्वागत करते हुए

हिसार के हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित खेलकूद प्रतियोगिता में खिलाड़ियों की सलामी लेते हुए चौ. मित्रसेन आर्य

एक सामाजिक समारोह में मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा के साथ चौ. मित्रसेन आर्य
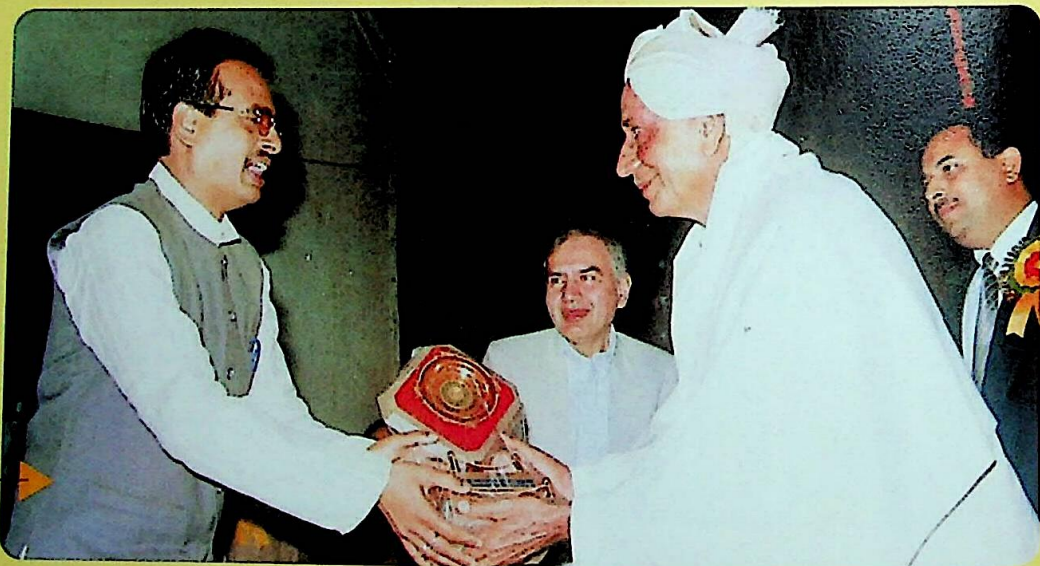
हिसार में आयोजित हरिभूमि के कार्यक्रम में तत्कालीन सांसद शिवराज सिंह चौहान को सम्मानित करते हुए चौधरी साहब

स्वामी रामदेव 22 नवंबर, 2006 को चौ. मित्रसेन आर्य के अभिनन्दन ग्रंथ **वैदिक पथ के पथिक** का विमोचन करते हुए

अमृत महोत्सव के अवसर पर केन्द्रीय मंत्री कुमारी सैलजा गुलदस्ता भेंट कर चौ. मित्रसेन आर्य का स्वागत करते हुए

दिल्ली के एक कार्यक्रम में तत्कालीन उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी
चौ. मित्रसेन आर्य से मिलते हुए

बच्चों सा दिल- अपने परपौत्र और परपौत्री को खिलाते हुए चौधरी साहब एवं श्रीमती परमेश्वरी देवी

अपने रोहतक निवास पर पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी से बातचीत करते हुए चौ. मित्रसेन आर्य
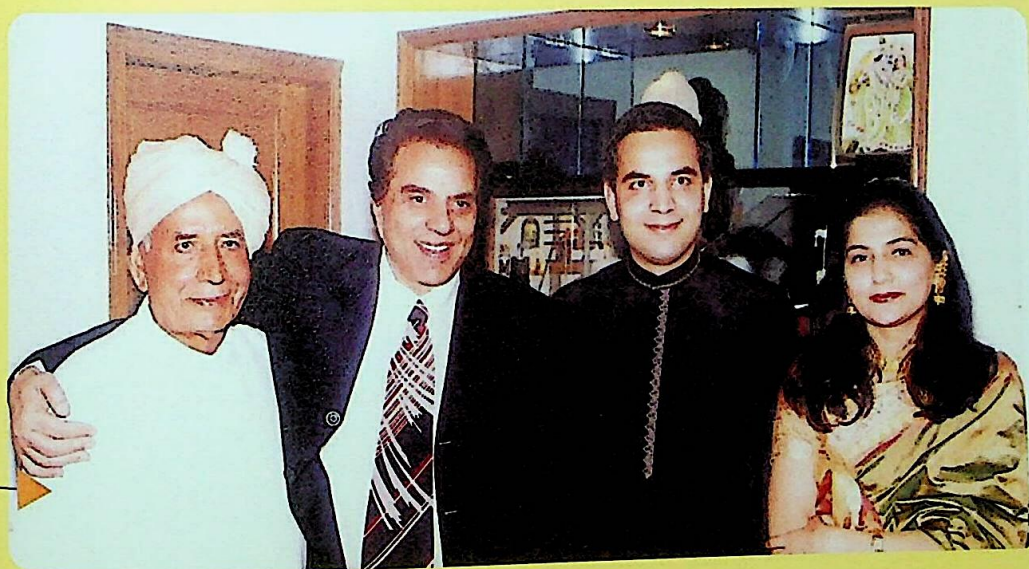
सिन्धु भवन में सिने अभिनेता धर्मेन्द्र के साथ चौ. मित्रसेन आर्य, देवसुमन व रचना

चौ. रणबीर सिंह हुड्डा एवं चौ. मित्रसेन आर्य गुफ्तगू करते हुए
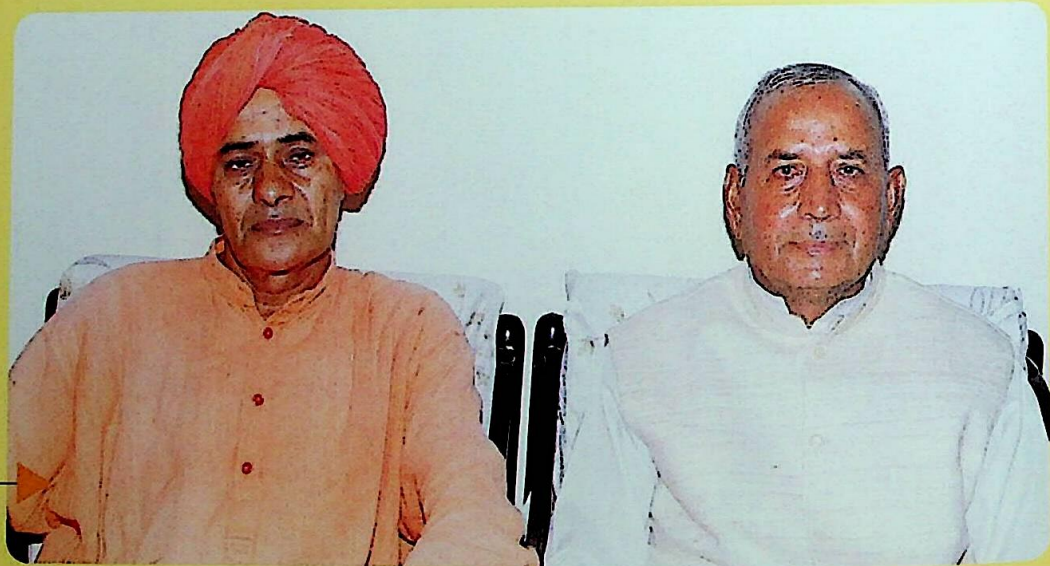
स्वामी इन्द्रवेश के साथ चौ. मित्रसेन आर्य

रोहतक में पांच सितंबर, 2010 को हरिभूमि के स्थापना दिवस पर एवरेस्ट पर चढ़ने वाली ममता सौदा को सम्मानित करते हुए चौ. मित्रसेन आर्य
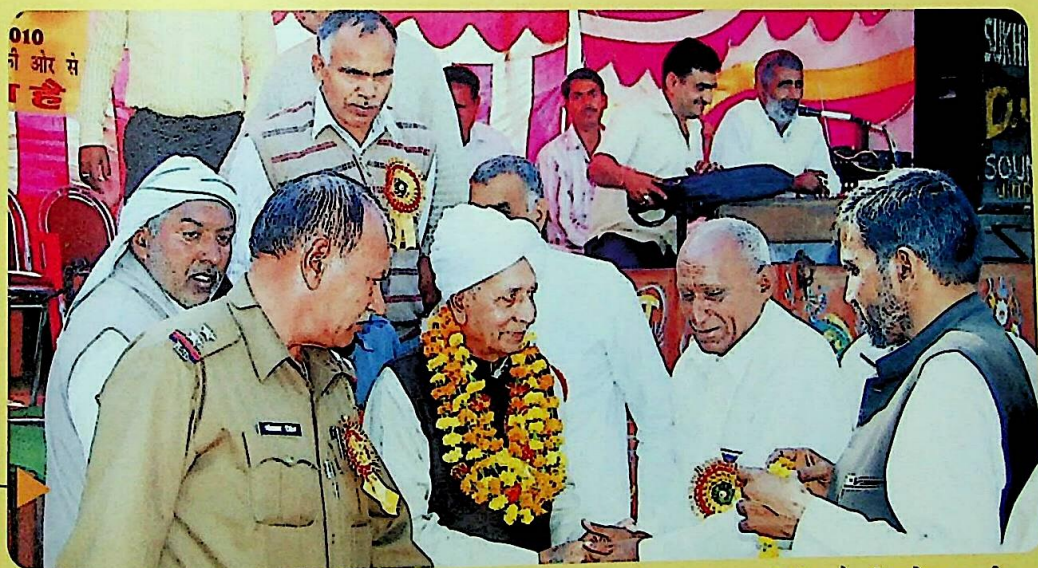
गांव खांडाखेड़ी में प्रदेश स्तर की कबड्डी प्रतियोगिता के दौरान मुख्य अतिथि चौ. मित्रसेन आर्य का स्वागत करते हुए ग्रामीण
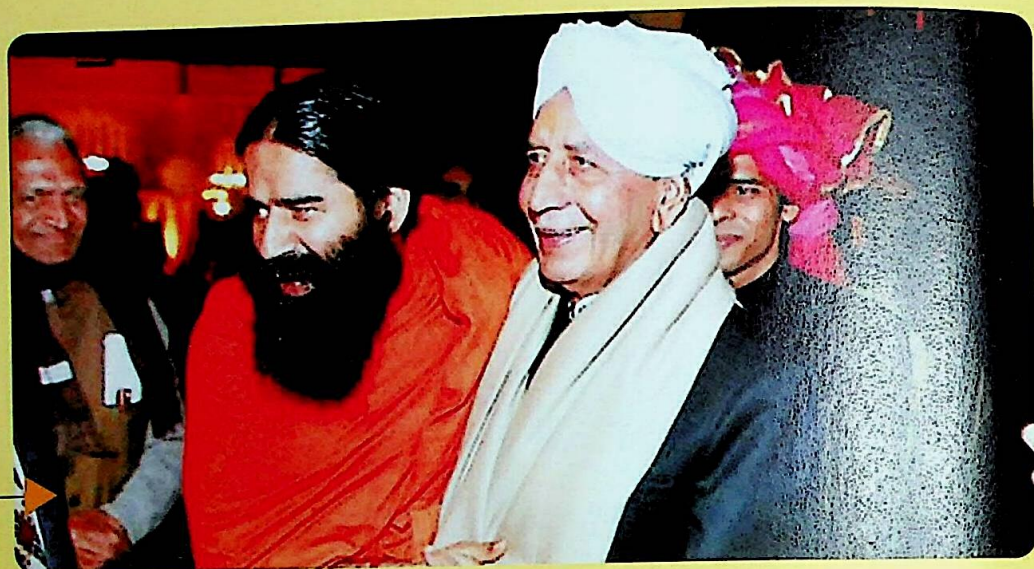
अपनी सुपौत्री सुरभी के विवाह में स्वामी रामदेव के साथ प्रसन्नचित मुद्रा में चौ. मित्रसेन आर्य

रोहतक स्थित सिंधु भवन में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख श्री मोहन भागवत के साथ चौ. मित्रसेन आर्य
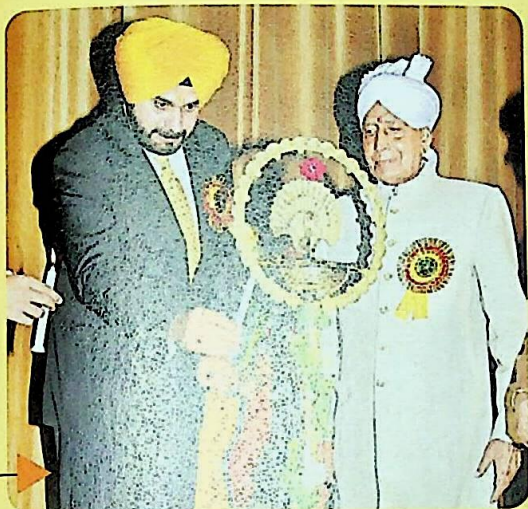
इंडस पब्लिक स्कूल, रोहतक के वार्षिक समारोह में 12 दिसंबर, 2010 को सांसद नवजोत सिद्धू के साथ दीप प्रज्ज्वलित करते हुए मित्रसेनआर्य
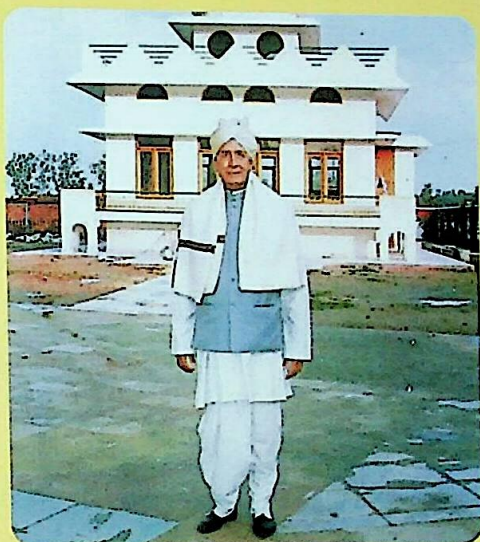
सिंधु भवन स्थित यज्ञशाला के आगे खड़े चौ. मित्रसेन आर्य
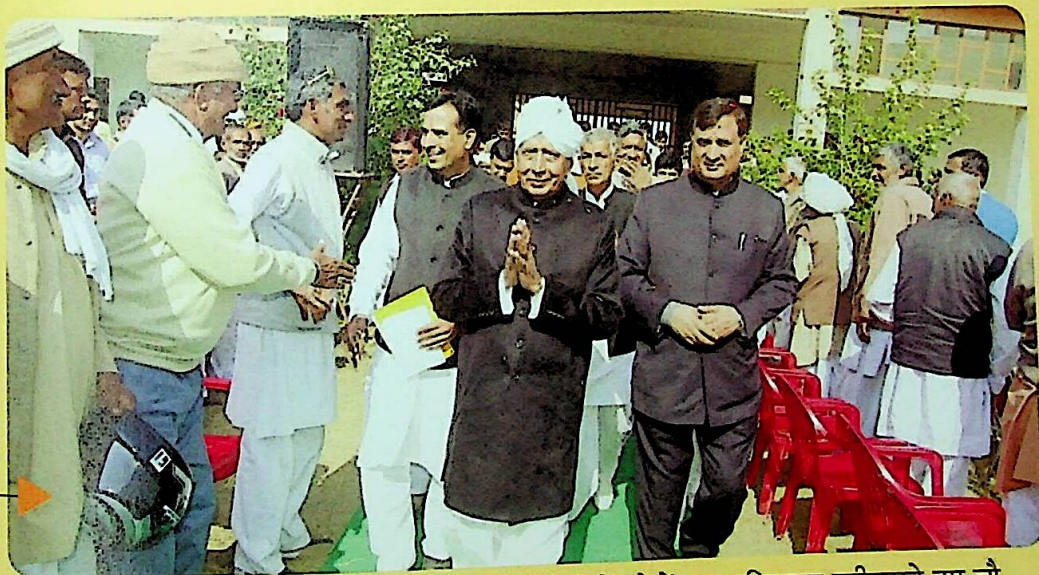
अपने जन्मदिवस 15 दिसंबर, 2010 को खांडाखेड़ी में लोगों का अभिवादन स्वीकारते हुए चौ. मित्रसेन आर्य। उनके साथ हैं कैप्टन रूद्रसेन व कैप्टन अभिमन्यु
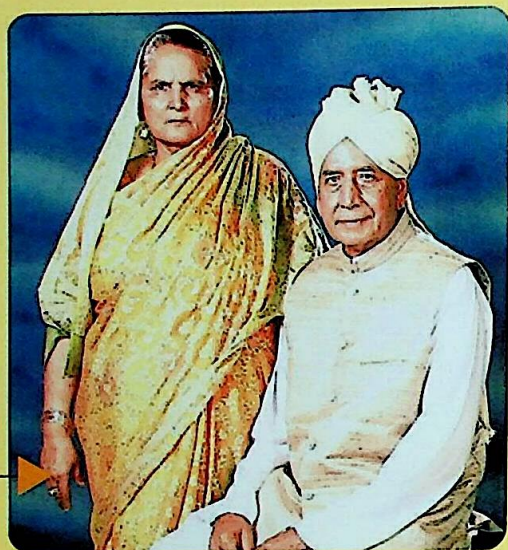
फुर्सत के क्षणों में लिए गए यादगार चित्र में माता परमेश्वरी देवी एवं चौ. मित्रसेन आर्य
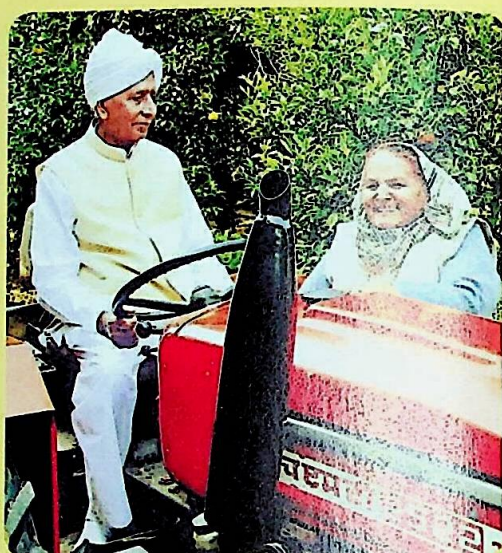
रोहतक के निकट माड़ौदी में अपने फार्म पर ट्रैक्टर पर सवार चौधरी साहब (14 दिसंबर, 2010)
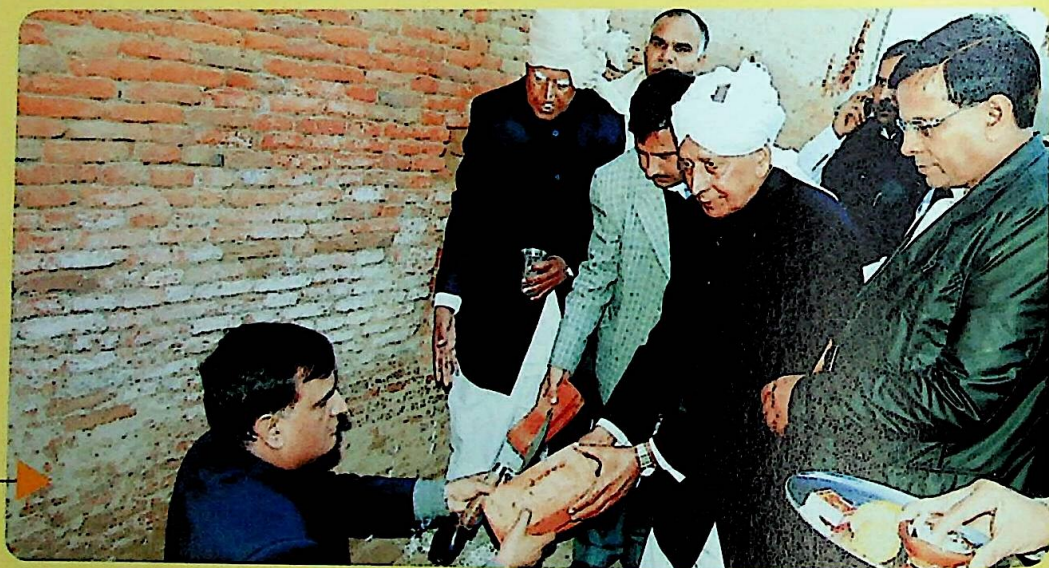
गांव खांडाखेड़ी में बनाए जाने वाली नई हवेली की 15 दिसंबर, 2010 को आधारशिला रखते हुए चौ. मित्रसेन आर्य
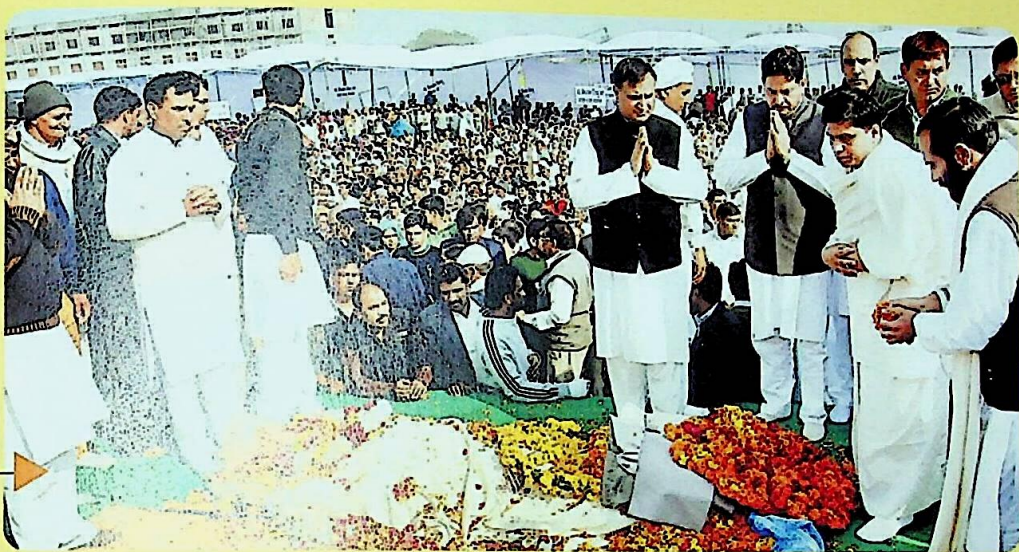
चौ. मित्रसेन आर्य के पार्थिव शरीर को श्रद्धांजलि देते आचार्य बालकृष्ण व डॉ. यश देव शास्त्री
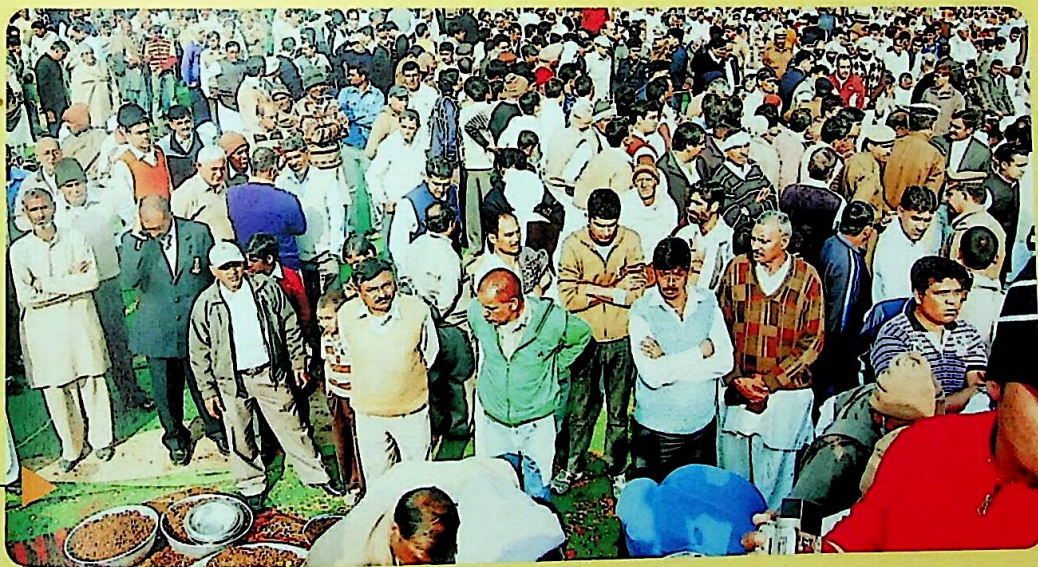
चौ. मित्रसेन के अंतिम संस्कार के समय अश्रुपूर्ण विदाई देता जन समूह
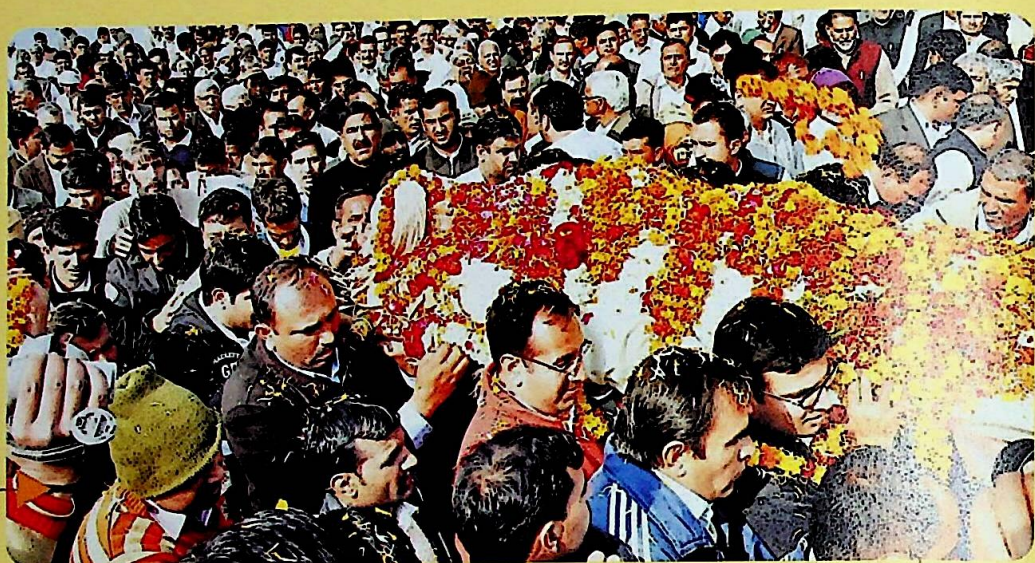
चौ. मित्रसेन जी की अर्थी को कंधा देते हुए उनके परिजन एवं उपस्थित अपार जन।

चौ. मित्रसेन जी की चिता को मुखाग्नि देते उनके बड़े सुपुत्र कैप्टन रूद्रसेन

शत्-शत् नमन
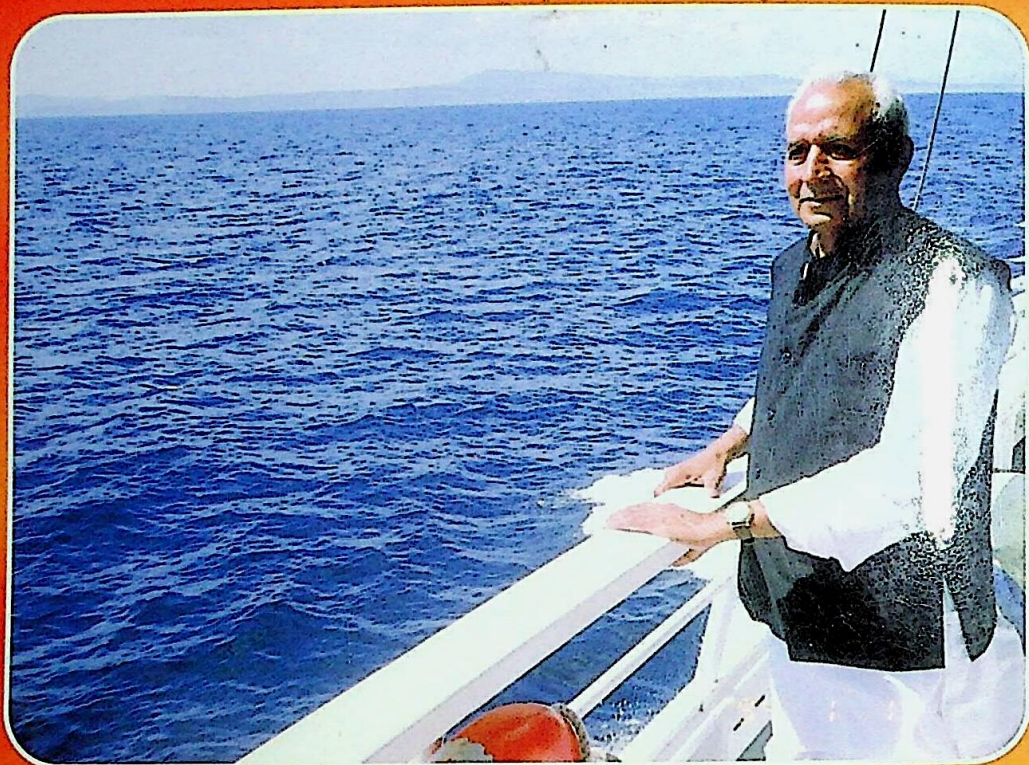
ओ३म् वायु अनिलं अमृतं अथेदं भस्मान्तं शरीरम्।
ओ३म् क्रतो स्मर ओ३म् क्लिवे स्मर ओ३म् कृतं स्मर।।
(यजुर्वेद 40-15)

जीवात्मा अपार्थिव, अभौतिक व अमर है जबकि
शरीर का अस्तित्व केवल भस्म होने तक है।
हे जीवात्मा! इसलिए तू अपने कर्त्तव्य को समझ,
जो चीजें तुझे कर्महीन बनाती हैं [illegible]हें याद रख और
जो कुछ तूने जीवन में कि[illegible]है उसे याद कर।

प्रकाशक
परम मित्र मानव निर्माण संस्थान
53-57, सिन्धु भवन, सेक्टर-14, रोहतक-124001 फोन : 01262-274481